

9177

72

78

79

9. 292

११११

निर्णयः

卷之四

89

83

40

47

१३०५

नारायण ५३

५४
विदि ५५



25.

क. सं. प.

हलं प

रजःफल

लिमं

न माराम

जहोम

विष्णु

द

५७३

— 10 —

जाकलच

मार्गना

तु विले

सरनाम

न्यादनाम
नानि -

निनाम
श्रीगुरुभ्यो

मृणां ३ म

फल १००

ति, धृति

शान. १०

५३३

या, दि

रक्षा, व

द्वितीयः त्रि
तृतीयः

ला. अं दि.

त, यत्रि

६१

पान ३

दवी॥

दमवती॥ आशा आशय न संकयात् पुनर्दी समुदाहरी पाद जेला क विउभे सर्वकाम प्रसाधकी॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ श्रूयतां मरिधस्यामि सर्वकाम प्रसाधकीं द
वा॥ १॥ संयुज्जनीयं मरुता श्वं यदयद॥ चतुष्पाद विराजान यथायुगलमागता॥ दवी सर्वसुखावधिं पुयच्छति पुयैति॥ कथं पुनः पदार्थं धीमतीं मुनिमरुमेश रुचि
यदहं पदसुदगम्या वदिस्यामि॥ निवादि क्वदि रि॥ पोका वक्रभासा तविधना॥ तथा मन्त्र विरुदुहि नस्माक मवता विता॥ अगस्त्य विउ नृयलो लोकि स्वाति गमिष्यति॥ यव रु
का यथा न्यायं कुमाकुल्य निमानवा॥ नतर्वा इ कर्त किञ्चि ह विषयि मना गयि॥ समस्तं यदि वाईवो वाई पादाई मववा॥ नियमादर्थं संपादि सावकुर्वी सुखादि रि॥ अविश्वे
न संसिद्धिं ययच्छति यथयिती॥ विष्णुदा द्वि कर्त यति ह हलाक सुखावर्द॥ उयलि कोर्त न संसिद्धि॥ पथर्म समुदाहरी॥ विउ यदवयादनु मृषी भां यविच दृती॥ गका खाने मरु
पुन्यं धावा सवि विनामनी॥ इन्द्रा न्निधनं यय धान॥ १॥ संवर्द्धिना मरुन॥ तयसु वा तर्वा लरु विष्णु नाय रुविष्णुना॥ मर्यादा साधिता यय नृपाना मयसा नल॥ यय भाषी सा
मस्य गुका त्याग गता दिवी॥ विविक्त यय माया सो वृद्धिना पुनू अयने॥ दवी यय गता विन्धे वक्र विष्णु सुपुडिता॥ यदमाली मरु विद्या नावदा जयत यथा॥ धाव यथा धन

२

र्थं य मरिधा लु नकी कया॥ यथा स्वदा दिमायानी वधाय उरुत॥ १॥ सूत्रे १॥ दवी नृद्वी समाधाय वक्रा दानता निवा॥ जेला क सुदयना म द्विती यी यवि कोर्तिगी॥ निगुम्
गुम् मथनी कती यं यदमरुमी॥ अथ कस्य मरुयुद्धं यय दानवसं गयी॥ यय दर्व र्व सुता रुक्तिव मायुया लून॥ यय दव मर्धना म गावकस्य गुहस्य य॥ अथ तव कुमा न
स्य कामस्य ननु नागनी॥ आश धनं च नृदस्य गकार्थं कृता वान रुचि॥ अथ काज अरु वस्य संनाय र्थं गुहस्य गु॥ उमा काली समस्त्य रि देवता ना धनं तथा॥ कृत्वा देवी यति
लरु १॥ इन्द्रं सूत्र १॥ इन्द्रं॥ उदाह कल्यय शुतु हिमवान च लारु म॥ रुता यय समस्त्य रि वोलि रिद स्या यथा मदान॥ मय १॥ सर्व दवाना नादि ल्यसं न धसाने ग॥
गत यय यथा विगु १॥ कर्म ८॥ सुविवा कजा १॥ मरुता समस्त्य रि गाज न कानि याजिता॥ यय उरु मरु दया दवा गुह नृपा यव क्लिता॥ रिता यय पुडिता यय गुहि व
दुती कन गतिना॥ गुह या ग १॥ रुता यय वक्रा मिता रुजसा रिता यय सर्व रुता ना माग वा लोका माग व॥ क्लिता ला क विरुद न वा लाना रिता कान्या॥ अर्व सं कि य
अरु ल्य पुना जं वक्रा विती॥ यवि गुं सर्व सा काना मय दाना य की रिती॥ अर्व दान क मायु सु समस्त्य नून मववा॥ अर्व पादा दमव वी म्वा आशा आशय पु य सव

आसीद्वायामहो देवः सर्वदेवविमर्दकः। विशावां समवां चैव वलवान् वृद्धिमान् भवान्। महायदाति सत्त्वा नः काशा मृतगजावितः। तस्याङ्गावर्हि नः सर्वसर्वस
 र्वेश्वरावितः। नन आश्रयितः पूर्व नृपदेवाजना ईनः। पुरतः नैव कालेन दुष्टस्य स्वगोसनः। पयस्कृतिर्वर्ष दुष्टः पृथिव्या भक्त्या हवी। नगी गृह्णाति दैत्यं दुष्टं
 यास्तथातिभाषति। यत्र मरुतः दैवस्य रुक्मिणकालुषाचतः। तथा पितृपुत्रा विदुः। यीतवासाः सनाधिवः। पुदो मस्य दैत्यस्य यथाधितवर्ष नृपः। अजय दैव
 श्रीधरः॥ सैहस्य मम तुल्ययमा कुमः॥ स्वर्गस्य सफयाता लान्। उज्ज्वलं तयसा लुके॥ ततः पुनश्चासौ रक्षा लब्ध्वा च ववमरुमी। रुक्मिणमुवत विदुः कृताथ ववया लन॥
 ॥ धाव उवाच॥ नमस्तु यीतवासाय अजिताय येनाय च। गंक्षे उक्ताय दाम्भिक्ये प्रमालाधनाय च। अश्विनाथ उदा नाय सर्वदेवनाथ यच। वदवदा कृता
 वाय वदगहयिर्वेनमः। लक्ष्मी निवासदवग। प्राप्तिर्मा रुवता गन। अनकानेक नृपाय वद नृपनाथ यच। विष्णु नृप स्व नृपाय अकृताय कृताय च। तज्जाधाम
 महागुरुः सर्वदेवा रुमाय च। अथारु वाक सहाव लावा रुवता यच। सखी नवद्वि देवग। गुणैः समधुस्तन। अरु स्यम सुदीनस्य दयालु कनू कनू व। प्रव

५

ॐ कथितं ऊर्ध्व काला मुखिनमः। भूवदाह जतकी। उं नका दिष्टुर्भयनमः॥ सर्वदेवा वग कनवी। ततः कृष्णाय धनः कृष्णमात्या नूलपनः। वीनवतधनी ग्मभनवासीरु
 द्वाहानः। प्रकेकस्य पदस्याह सरुर्भुजपतः। कतयूनयन। अरुवति। किलानी प्रि मधुनाद्यानामह सरुर्भुजपतः। इहूयात सिद्धिः॥ महामो मन प्रि मधुना कन अत्यदुगानिकम्मा
 गिकवाति॥ अथर्व वेद विदितानिकवाति॥ सा क्राहे नव वदवेः सिद्धेः मुपयि पूअर्ग। प्रवदवी महाविद्या। वामू अयदम निनी॥ निवद्याथ तमस्याय कर्मणी मूययादिनी॥
 कूनत काठिक्ष कर्म थागयूकस्य यावति। सकृद्वचनम दिद्या वमरुर्णा वपाहति। सर्वतीर्थ किय कलु सर्ववगरुलानिच। जयनप्र वनाद्यथ सर्ववर्षु यचुति। सर्वो
 यमर्गमनी सर्वयाधिनवाविनी। अरुकाय नदातवी यमुदवी नृपूजति॥ ॥ हू ला अदवी पुनः। पदमालिनी महाविद्या समाका॥ १०॥ शुक्र उवाच॥ नन्दिना
 यदमालाया दद्यात्कुरु विधिपूता। तस्या सा ३३ वनेदीवाकी कथं सनावदा लक्ष्मी। सनत्कमार्ग वज्रदं तयसा धृग कलमर्ष। समपूत महाप्राई गिवहा वन ला विर्ग
 तान आना धनन्दीर्ग गिव पुन्यं महावर्त॥ यत्रि पृष्ठे था न्यायं थाग शाकु म नरुमी। गिव सिद्धान्तमा ल्गिदा व दाम्भिक गमनच। यथापुत्रा यथागल था मकुदि

प्राप्य नानद सिद्धि विद्या विद्या र्थतत्त्व ॥ ६०६ मम तपदी निवस सादा तूयवच नयूक वात्सलनतू क मान ॥ कून गत मपिय ४ कना तिसिद्धि यत्र मिह वि दितिस नड
 तर्दी ॥ ॥ ६०६ साधद वावता नरानक मात्री रीदभा आरिर्क या गभा सुसमाफ ॥ २० ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 तदा सो जय न विद्या विदिकानि वला विर्ता ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 दवी ॥ विद्या कथं तर्दी मा गता ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 मल्ल सुध व अयना डिर्ता ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 दला ग न मृथा ४ यका निता ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 हल र न द्राज र्क कत्री कस्य मा गता ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥

३२

या फ वात ॥ राव द्राज न सा दला ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 रता ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 विद्या ला का य वा ना य ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 ग क उ वा च ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 थ दे ला उ रा व तो वा व सु तो ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 य य ज दा सा वे त प ४ क लू म मृ य त ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥
 त थ ति म म य उ क सु दा सो य धि वी त ल ॥ ॥ ६०६ वाच ॥ यय या (ना यदा गक नात्र दामू निसरु म ॥

दवा॥

तावदु कलुष्युतु ल्यायना कमशा न नदीया धिया न जिला दिव मू स ह न क म ॥ निर्दि श्य सर्वे य वा रु क था विष्णु म हि द व न ॥ तस्य क तु रि ता धी
 मु ४ सर्वे क तु रु य दू न ॥ तथा म हा य वे मा सा ति ॥ न त व ॥ व ना य व न मा ग क विष्णु ४ के ल्व थ न स था ॥ व र्ने व हि नि व रु क्षा य रु द्ध दि श्व
 रि ता ॥ म या म या वि ता य हि क तु र्दे श नि व र्दे ण ॥ विष्णु सु य ४ स दा द व सा ह र्थ वि रु या व र्दे ॥ न न कि हि लि र मा हा र्थ य ष्ठा वा म व म लि ता ॥ वि वि रु यि
 उ क्षा य र्ता ग त सूर्य स म ध र्ता ॥ ह मा दू ग नू ण य र्के र्ण ख व क ग जे ध र्ता ॥ म रु वि र्णु स ना ये र्ता दू ग मा मूर्ध्व य मा स नी ॥ नु व दि य म न रु ज ल वा न
 ध ना धि यो ॥ ०० ॥ न सूर्य का या न वा दू व कि र्ण मि न्द्रु ड ॥ मु नू णा सर्वे ता रु द्ध क ला द रु नु ग रु ना ॥ न द द्वा स व र्ता विष्णु स व न रु ष वा रु नी ॥ उ य द
 यु क ला र्ता स रु ष म र्वा य स म य रु ॥ रु षु ला व म हा वा रु रु षु स र्पे वि रु ष ण ॥ रु ष ॥ नि क वा द व रु षु द्ध रु र्थ क र्ता ॥ नी ल स न्ध य मि ध न क त
 म ४ षट् व न ॥ य म ४ म हा क या ल मा ला य व म नि वा नि रु न न ॥ सर्वे ग ४ सर्वे द व ग ॥ सर्वे व रु दि ग म न ॥ म ४ न रु स रु दि रु स रु ष वा रु नि

म २

३३

ता क ल म ख ल धा वा य वा रु कि उ य वी ति न ॥ सर्वे ज रु हि ता र्थ य व द व दा रु वा दि न ॥ य रु ग य रु हा ता य य रु स वा य वे न म ॥ य रु क व म हा रु य ग म ना य न मा न म ॥
 सर्वे ता ना म या द व ल मा वा यि स न ॥ वि या र्ता स न ग रु णी क र्ण वी रु ष रु ध रु ॥ म ता थ ति ता रु रु ४ क रु सु स्य स म र्प य न ॥ त व वि ष्णु म हा वा हा क र्ण सी य थ वे वि रु ॥
 य स र्वा य व ग र्थ र्वा य दै ता म हा व ला ॥ त न ना गी स मा उ मू स व क रु य द र्ता न ॥ त थ ति वि ष्णु ना उ क्ता य हो र्ता त व सा द र्ता ॥ उ क्ता वि ता रु र्ता रु न्ता व म ४ रु ता व दि र्ता ॥ ग क
 स रु य न र्द ला सर्वे ग पु वि ना मि नी ॥ व र्ता क थि र्ता व स य थ व रु स न ॥ ॥ ग क उ वा च ॥ क न सा वि धि ना ल वा म मै र्वा ग क मा ग र्ता ॥ वि ष्णु ना वि धि क स रु क मि क थ य स
 न ॥ ॥ उ क्ता वा च ॥ ग रु य ४ सि क ता र्म स्वा कि य ता स र्प स रु म ॥ न रु व दै र्वा र्ता स द व वा उ कि गी वि रु ॥ वि ष्णु ना या ति ता ४ क वि रु क वि द व न ग रु ना ॥ उ रु न नि रु ता ४
 क वि रु म या क वि रु य मि ता ४ द वी रु र्वा व द य ता थ पि न क या रु र्ता ॥ स व ला ना म दै र्वा रु स क रु र्म हा व ले ॥ म म र्वा ग स म्प त्ता द रु या त स्य वा स व ॥ न न य र्वा उ
 ता द वा र्ता स म व क र्ता वि रु ॥ स मा ग ता ४ स म रु मु स रु न्द्र व वा स व ॥ य थ न ग कान् स म र्वा दै र्वा न य र्वा पि ता म हा ॥ ग रु य व नि रु ता र्ता ग र्वा ता व र्ता ॥ त थ र्वा वि रु

मागज विक्रमकीदिवो कसी । क उनागि सुयानन उक्तिन ससं गीयी । तनामया सुना ४ सन्द विष्णु मानाधयन पुना । सुदास्यति महा कर्षु सर्वदेव विमादने । तनामम
 वा दभत की नादय प्रक गव ४ यनाय वस्त्र नूयसु गउमय यगावरी । प्रीवसा कमहावाई की सुगावक रविती । सुवत्यन मरु आवे दवा ४ दी पुरया दितो ४ गुताय की वस्त्र
 वी वरं वृहियुन नदन । गदा तेर्या विता दवे ४ क उदयस वाजिरा । तनग हूषयित्वा दु दहं दवरया यही । (नत कूर्प महा गउ ४ अ झाला पिठका चिरं । सूर्यायुग समपुर्ण कि
 क्रिणीवका विती । वामनवाउनायती म म्मुल कालकिती । तदत्वा सीवली से नी रुयी सचनियतिती । तदा पुरुति रुनी क क उरुव कु मागा ४ अन्य वी वव दवा न मूक्या वि
 अयावद ४ मया रूप वद वन विष्णु नावासवन्त । दहं य ४ क अय दव दी नयति नूक्यि यति ॥ ससमसा धिया रय विजय पुरु विद्याति ॥ नव ग कस्य कचारी उम्र ना की उ
 मूक्यी । मया चाव विद्यम सर्व गत्र युका निती ॥ ॥ इत्यादी यवी पुना ॥ ६२ ॥ अ क्य न विधि ॥ २१ ॥ ॥ नृप वाहन उवाच ॥ रुगवन (आ) उमि क्क मि तस्य उवाय
 नीयथा ॥ कियत दित म क उ उवा मरु विधि वद ॥ ॥ अगस्त उवाच ॥ उम्र ना क धिती ग क वृहस्यति समीयत ४ यथा तथा यव अमि विधि क ना ४ समूक्य ॥ ॥ वृहस्यति

नृवाच ॥ गुरु मरुथ कना व म्मुल गुरु मरुल । देव ४ सुयानन वन ग कस्य यवान । दवी यमि क्क विधि ना या वायां य ४ पु वा दित ४ गता वरं गुरी नर्य धवम इति
 य इती ॥ उइमनाज क वृष्य प (अ) रना रुनी धजा धि वरं य दत्त दव उ शान जानु इमान । क न्याम (आ) रुमाय ४ क नमालन कस्य यत । एका दग क नावत्स नव यश क
 नायना । अवन डी क मि वडी तथा य रुनि ध विती । वली क पिठ वन जी सुह अश सुका डनी । क का अ यठ नि का अ तथा श्री भ म गहिती । विष्णु द जा रुगी व व द य अ य वि वरं
 यत । अला र वदन वा री गली म कमयी चवा । क र्वी न क वि का थ नवा न्य वरं क विरू । गुरु रुमि र्व अरं गुरुता री गुरा वरं । तत ४ सी पूज य इरं या दूखा द द
 खा पिवा । नमा व क यत वृक ला मर्चयति या धि वि ४ धजा र्थ ग वना नाथ अन्य था या ग म्याती । ना जो दया वलि रुय दि क वरु त (अ) व व । वामनामी महा वर क कला वा ना पु न
 म्याती । धजा र्थ देव नाज सु न कानि रु व अ प्र च । पूजयित्वा ता वरं रुत था काय य दली । एरुत क्किय द रं गुरु स प्रा दि दर्शन ४ गुहा म्भुध म्भुध व समूह न व नी न
 दी । वृकान मानु गुरु नू की नानु आ गारु द व गाल री । दवी द्वि जी त था सार्ध लि कं वरु न्ना यि व । पति मा पूजि ता स प्र क्रिये सिद्धि रुत यदा । मत्स्य मी स दधि ला रु नू वि री मृत

उच्चयत् ॥ यो न जननं न मृत्युं न श्रमं न विना न धनं ॥ आराध्यं यथाकारि ॥ समुद्रं ली ॥ विष्णुं भगवन्मनुजं सिद्धं न क्राव्यं न न च ॥ दृष्टं माह कवयस्ते ॥
 मानवमाकूलं ॥ मृदुलिखितं मृत्मानमरुद्रपिठं केसरीं ॥ न दुर्गं वा समुद्रं यी कर्तुं वा स न जै विहा ॥ उच्छिर्तं न कुरुयन्त्या ॥ काकालूककया नया ॥ नमस्कृतं
 लापनीयं दद्यादग्रेषामपि यत्किं ॥ यत्कादं ॥ मनर्गं कुर्यात् सुखं कर्मायं विविधा तथा सुसंस्मृतं पुष्पं सुखयन्मयं किं न ॥ प्राज्ञो जायते न कुर्यादित्युक्तं
 कार्कनं ॥ पुनः हि ॥ सदेव ॥ गुरुमानि त्रह ॥ सदा ॥ ह्यया नान्यैरुच्यते यथा कामहिषी वर्ष ॥ पितृकयुवना उत्थास विवर्तमानं कस्य मनः प्राप्नुता न ॥ पातं
 न धनं न न कुर्यात् एव ॥ यतिनं मकद ॥ ७ ॥ नृपसे न्यसमादि ॥ न ह्यनृमि जालक उल्लाने ॥ गलहा रुक्म नारय ॥ सुसंमरी स्मिन् ॥ न किं नृयस्य न न सखयाया
 वदन्ति ॥ तिष्ठति मा वयो ना ॥ सदा ॥ ह्यया नान्यैरुच्यते यथा कामहिषी वर्ष ॥ पितृकयुवना उत्थास विवर्तमानं कस्य मनः प्राप्नुता न ॥ पातं
 दृष्टं काककाया नै ॥ याति नृपसह नार्दुयं वै का नयं कर्तुं ॥ न न प्रवाय प्रखट यथैव कर्तुं यो ना ॥ पुन न न सदा न दृष्टं हि स्व ॥ अस्मिन् ॥ कर्तुं स

३३

मरुद्या नाना नानं जयदीर्घं ॥ वर्वपूर्व रुहि ॥ कर्तुं पाफवान् वृषवारु नात् ॥ तथा वक्र स्थितं न व वक्र ॥ १ ॥ न कमागर्तं ॥ न न सामस्यतद्वत् ॥ तता दक्र सामा
 तं ॥ तदा पुराति कर्तुं किं नृपा ॥ अद्या पिडं कुर्यात् ॥ वर्वय ॥ का न यदा जा कर्तुं विजय का न क ॥ तस्य पृथी वलाप ता सदीया धी म नारु वत् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 न धनं लक्ष्मी ॥ २२ ॥ ॥ गगनस्य उवाच ॥ एतं कथिर्गसर्वं कुरुत्वापनमा गमं ॥ सूर्य ॥ किं पृच्छस्य नाज नृना क हि व दामि तं ॥ नृपवारु न उवाच ॥
 कथिर्गविद्या माहात्म्यं या न ना न द पृच्छिर्तं ॥ के ना ॥ समुद्र य ॥ पूव्य ॥ सर्व काम सुख वद ॥ सूर्य स्मात् न हं पृच्छं कथं द्या नाम हावल ॥ ना न द न स पत्नी क ॥ सह मर्क
 विभा हि तं ॥ ॥ गगनस्य उवाच ॥ तत्तथा स एव वान् वन्म ग कर्तुं स न स रु म ॥ दर्व पिता म हं पूर्व विद्या या ग स्य को कुर्क ॥ एवैव या पि सी पृच्छा द्या न व द्वि वि
 द्या तर्क ॥ कथं कुर्यात् न स वा रु ना न द्या मू नि स रु म ॥ ॥ व म्मा वा च ॥ गस्य जय न गील स्य य ता य स न स रु म ॥ द वा ना म रु नी कृष्टि ॥ सर्व ॥ सुख यदा
 रु वत् ॥ व न स्य ति स म स्मा न्ध रु ल य ॥ १ ॥ स ॥ आ हि ता द्या न स ना रु स रु म कि पु ना हि ता ॥ वि ध र्म य थ ग ॥ सर्व ॥ रु रु न व व ॥ य ना ॥ व ॥ न न स्य द्या ना द र्क न स्य

युगाः मन्त्रिकादंगमस्तु वक्राभतागदगनी निरुक्तानदददकि ४ सधूम ४ स्फुटतमदुःख ४ पूर्वविधाकाथत्ताता नदुद्धायावा हिवासव। पयकनावदसोत किमतद्विर्गद्विः॥
 नावदउवाच॥ जेलवाज ४ दितिधनी वा सर्वांगगवात्तज ४ दवानाका ४ प्रिय ४ कन्या ४ द्रियका मस्तना धिय। सा श्रीद्विगता तद ननदमाकलजगत्। ययादिमावर्तितु का
 लादिवदुदावकत्। तदासनावदनाक ४ यययो गी युगमि रि ४ विन्धावलस्यवसना कैर्मदायजनिमग्न ॥ ययसावी विकला ल कनगी तमहा तूका। मरुमातऊर्म दूष्टतनू
 यवर्तसीकला ४ ययवै कनूवका ननु यवकाकायाभरिता ४ ययव हिगवात्रद्व कलहंसा यनादिता ॥ वाऊहंसमहावात कालकनीत्रिहिरे ४ पावावत उकसिद्धि ॥ विकीनूयया
 १० रि ४ नकमस्त्यमहाग्रह मकवात्रलितायका ॥ यमगी सविचर्मानिकलनेत्रवधिक ॥ कालपट्टमहासेन या ० नय्यवाहिषा ४ गधवासीद गुल्फुष्ट वाजीव जलजारय ४
 तदुगलामहावाहा धानमवा नावतिष्ठती ॥ ययसो रुधनवाध विन्धानाममहागिबि ४ ययदावितामातऊ कनगीनख युकिरि ४ ययशकनसीदस्य गृकना ४ धार ययदा ४ रत
 श्रीदीदी महाग ४ नूत्रादितगलके ४ तनकर्मकम ४ दूले ४ गधाम गमहामने ४ कष्टसात्रे ४ सदाचार्य थवहि ४ खकयादिते ४ मनिदायक सीसक सगर्तसमिधानन ॥ य

[illegible]

देवी॥

तत्त्वतवयतां अखिलं मम । उक्ताय सतदा वीणा । धवमकुमरं स्मरन् । गावन्नास्ति मम । महामाहविमाहितः । पती अवाप्तवान् यश्च तावत्कालः समागतः । ननु त्वा
हर्षी वीणां इष्टं स्वजुनि सुदनी । लेलवाजं दुकन्याया विना केषां निवायुः ॥ ततः सकालः कालेन । उपि भावदने । सुवान् ॥ ॥ कोल उवाच ॥ ययो निपातिता वीणा । इमं
खाद्विर्मदं नः । तीक्यां कृपय । अमि । तन्वावदत सुवगाः ॥ यदि पर्वतनाजं द्या । नक्तं सहगं कुना । तथा पि अयं निद्रामि । यदि वा केशवा रवतः । सुखा सगदा कालः पूर्य
काला महावलः । निवादिताः सुसनेन न मन्त्रिणान च संहिताः कालेन । नव वामु । पि मला ख्यामहा सुनाः । अत्र अ पर्वती वीणा रुक्मिण्य कथं कन्यकाः । मी दृष्टा । इष्टमा वृत्तिं
कवित्यन्त न संहिताः । जयाच जू । धमावाहता गजमिव महावली । कृपा न्या विनीतः । तदा कालं महावली । मया नृपं सुखा अहं । अहं मन्त्रिणान् च । माया हं निर्मम
मिहं गजवाजं रुयं कृपय । महिषश्च महाधाय । येमस्य रववाहनी । रुक्मिणी समाख्या विजयमिति मदीयं । यमा छिती तथा नोडं विष्णुं प्रकटयति । अजितामग
मा वृत्तिं । मदीयं सुहातदा । वामने इष्टला शकं हलाहल रुयं कृपय । दग्धा वदित्ता देवी । यासानाम्नापना कृता । दग्धा गतथावेव तथा । अयत्त लक्ष्मी । निरुज्जन

४०

वः गज । देवाः पृथक् निगच्छिताः । ततः कलिकेनावाच । उषुषी मूढं वं सुधा । ववर्ष दान वीसना । दवीनी सदसा यत्रि । तदा ऊय रुमं कृद्धा । स्वपातन पीठिताः । धानी प्रकृपय
तुकास्तस्य सिंहे निपातनी । तं पा गं याता हतं चिन्नवर्षं । निर्दिग्मादाय तदा तु कालः । अर्धं वामं तु ऊषुष्ययित्वा । ऊयामुखा । वतं कृद्धायात् ॥ दृष्ट्वा तु कालीं सहसा धनं
कृपा न्या विनीतः । मूनिद्वयमन्युः । ऊयामुमा वायवि तस्य गच्छि । कृपा न्या नादयि तां जयान । गच्छि हतं यथा तदा ऊयामुमा वायवि तस्य गच्छि । कालेन सुसनेनायत्रिमा
ववर्ष काला पि रिन्नः । गतवा वयातेः । मदीयं विद्यागता गच्छि । अलक्ष्मी उवाच । सुविशुद्धवगाः । आदाय वदतां नि । वदतां यः स्वर्गं यममा वसुधा । अर्धं । देवी
तु तमायतनीं । गच्छि कृदयान्या नपितस्य मते । एकत्र यान्या नपत्र अजु धुनयन कृपय । सदा ता कदपु ॥ विष्णु दया काल महावलस्य । दवी गवर्षस्य विवृद्ध
मन्त्रः । गच्छि काला गदया दया यदवी मूर्खो धविदुर्ग्य वृत्तः ॥ अलुगर्तं कां रटस्य देवी । विमर्कं न गता हृष्टमी । कालं हर्तको नवमं निवी । विषयं म
यः । मदीयं सुहातदा । वामने इष्टला शकं हलाहल रुयं कृपय । दग्धा वदित्ता देवी । यासानाम्नापना कृता । दग्धा गतथावेव तथा । अयत्त लक्ष्मी । निरुज्जन

द्वागुल्यानमस्तुमान् सर्वदिग् विद्विषन्। तं वायुगर्भं सहस्रविभुम्। वज्रागर्भं वागजिता वदर्थे॥ हस्तागर्भम् यमदक्षप्रदं सप्तार्थं कृपधनम् ददौ॥ त्रिधा सर्वव
 लवजवीर्यं नववदमेदलयजितम्। हतकुवर्जं सहस्रगुह्यम्। यमाककायपञ्चाजयम्। विनायवागर्भं सहस्रसकौमुकात् दद्यात्॥ हस्तगर्भापि यम् पुण्यात्॥ ॥ ॥
 शिदवावतामवददुवध॥ २३॥ ॥ उन्नावच॥ हस्तवज्रमस्तुमान् हतवापि यमाककायपञ्चाजयम्। विनायवागर्भं सहस्रसकौमुकात् दद्यात्॥ हस्तगर्भापि यम् पुण्यात्॥ ॥ ॥
 राषात्। मया हतवदवातामवददुवध॥ २३॥ ॥ उन्नावच॥ हस्तवज्रमस्तुमान् हतवापि यमाककायपञ्चाजयम्। विनायवागर्भं सहस्रसकौमुकात् दद्यात्॥ हस्तगर्भापि यम् पुण्यात्॥ ॥ ॥
 द्विगुणं। यस्य मातुः समाः सर्वाः पत्रदानाः सुखाः ॥ यस्य काश्चिन्मलाः नाना विगणानां पलस्यन्ते ॥ यस्य गदादयाशुवा नववधनं मनागपि। यस्य कामजकाधादिर्नृगण
 विगणतन्। यस्य घाताः शूलशू नयूने नववधनं। यस्य हस्ताः प्रियाकाय कामुकानां नविग्रहः ॥ यस्य शस्त्रयुद्धेषु शार्प्यातां नृगणकजशयस्य गजिकृपा (व
 शू) कल (का) नचरी कृतः। यस्य स्वप्ने रवामिथ्या नववक्रवायाजनी। यस्य बालस्य धार (का) नचक्रादे रयान् कविन्। प्रविविधस्य नंदव सर्वगामु विदस्य च। आयदा

४२

याविनश्च हतमस्तुमान् विद्वत्। यावशावत्समवार्ययात्रा मलीयचक्रमन्। तावन्नावदश्रयात्। विष्णुवक्त्रं गणधितम्। ययसायनमादवी। ययागमयिकात्रभा।
 निष्कलागानिदागका मननजावधमिदी। शितासावमुद्रपण जयडोः गमुनाह्या। गश्रकत्वां तदाध्यावा नावदकले विमहान्। इद्विह्यामहादवी मकुनाममु
 नायसः॥ ॥ नावदउवाच॥ जयगमुनातदवि जयनूजानूहव ॥ जयकीगववक्त्रं उत्यक्ति स्मिति कात्रकि॥ जयसंहावकात्राय नूदद हरवायय। जयय
 नाहु रावनि जयना गजिमहलं। जयसर्वगतमात जयनामवत्र यद ॥ सर्वग सर्वनागयः ॥ यमीदममहाकवि। नामाव्यदीनयिष्यामि यानि तेषु धिर्निषिषू। येमु
 नाभेः सदा लोके अत्रैव मनुगीयसे। इगं गककुनी लोत्री वनदविन्ध्यासिनी॥ कात्यायनीसूयसादा कोलिकीको पशुग्वरी। महादवीमहाभाग महावतामहेश्वरी॥
 प्रिदभनन्दिनीभनी रुवानीरुतराविनी। छायछा गमानिष्टा वक्षिष्टा वमवाविनी। अयव्यैकपक्षचि सूर्यव्यैकपाटला। त्रिलोकधारी सावित्री गायत्री
 प्रिदभर्चिता॥ त्रिगुलिनी त्रिनेयना। विपदा विगुहासिका। प्रज्ञाखारा सुधामधा लक्ष्मीः। निःकमावती। वद्विः समृद्धिर्वद्विष्य रुद्विः संसिद्धिर्नवच॥ सर्वज्ञ

सर्वतारादा सर्वपादिलिनामूखी॥ सर्वरुतादिमन्त्राका सर्वलाकेश्वरवती॥ मानवीयादवीधवी यागनिद्राधवेषूवी॥ अत्र्यावद्रूप्याच सूत्रपाकामन्त्रिणी॥ जेलनाऊ
सुतासाधी कल्पमातामृगसमा॥ अयावविउयादवी अजिताअयनाडिना॥ धृति॥ मृति॥ ईति॥ कानि॥ गकि॥ अकि॥ नथ॥ नति॥ अयकति॥ वि॥ कति॥ की॥ कि॥ इति॥ स॥ कति॥ नवव॥ काल
नक्षिर्मरुनोडी रुचकालीकयालिनी॥ वामूअवाउनीचअ मन्त्रख उजिखउनी॥ नूडाणी पार्वती त्याणी गऊनाईगनीविणी॥ दीकादाकायवीवेव नात्रीनात्रायणीतथा॥ निशुम्भ
पुम्भमथनी महिषासुरयाजिनी॥ सहस्रनयनावीना चवती सिंरुगमिनी॥ विष्णवती वीर्यवती दधमाता सनखणी॥ मायावती रुगवती सुतीसणवतीतथा॥ समरुकाय
कनवी ॥ शिवाथमपुसाधकी॥ वडा मिश्रनवदवी॥ गनगमनवत्सली॥ हीमामूअतथाधूमा मन्त्रिकांशवकषिणी॥ लीहिरावययनानी द्वादिसूयापनागनीऊय
अममनसिती विद्यालारुअइर्नरु॥ दीर्घमायनाथसाई पार्थिवनाथ नूचुर्गा॥ पूज्यगुणसम्यदा ॥ यनायनयना गति॥ लयाअतानिषाअक नमायिवयदारु॥
अर्वमुगातादवी मानदतमहात्मना॥ ददर्गसहस्राक्ष सिंहातूडामहावली॥ अर्मासिधनूनात्राच हूलखद्वारुधमिणी॥ वडागकिगदाकृकयर्मुम्भनवि

यन्ती॥ यान्ताङ्गस्य जवीषा यन्ताङ्गमन्त्रविनी॥ विषदुत्तमसुक्तनकासदिनी तथा द्विपार्थवर्मसनाई लेलकृतु आविणी॥ अरुसुक्तकनदवी
वन्द्या यतपामिनी॥ रुक्मिणी रुक्मिजननी पावनी जननी तथा॥ याचयाधिति वाचनी वरवृक्षमनानूनी॥ ततः सपुनरुत्तमसुक्तनकासदिनी
उक्ता तावद्यन्त्रसमागतः॥ ॥०॥ सायदद्यवतानद्यानवाधदद्यानानददर्शनी॥ २३॥ ॥०॥ उवाच॥ तत्रदस्यवन्द्यकृतं यान्तसमागतं किं कर्तव्यं
किञ्चाद्यानामदावल्लभा॥ किं वलं किं पुमान्नुक्तं रुक्मिण्यन्त्रादवा॥ उवाच॥ रुक्मिण्यन्त्रादवा॥ उवाच॥ रुक्मिण्यन्त्रादवा॥ उवाच॥ रुक्मिण्यन्त्रादवा॥
यदिदं पृच्छस्यञ्ज दवाद्यानस्यसंगीतं॥ रुक्मिण्यन्त्रादवा॥ उवाच॥ रुक्मिण्यन्त्रादवा॥ उवाच॥ रुक्मिण्यन्त्रादवा॥ उवाच॥ रुक्मिण्यन्त्रादवा॥
वाधिया॥ यन्त्रादीनामदावल्लभा॥ सफलकालस्थायनी॥ काटीगगानि यन्त्रादीनामदावल्लभा॥ सफलकालस्थायनी॥ काटीगगानि यन्त्रादीनामदावल्लभा॥
यन्त्रादीनामदावल्लभा॥ सफलकालस्थायनी॥ काटीगगानि यन्त्रादीनामदावल्लभा॥ सफलकालस्थायनी॥ काटीगगानि यन्त्रादीनामदावल्लभा॥

इयं ॥ हत (गणपतु) का वस्य तिकतमन र्गव ॥ याति दिगुग जेत रुया विजय स रुत । यमानक तथा काल इमं खवडा रे नवे ॥ मियक याति र्दवा
मया का ॥ छन क ॥ ॥ गकुड वाच ॥ हत (गणपतु) वल्लो वसुत धाना धान यना कम ॥ सीमा वा पावन कार्य कि म्मायुध मनी नृग ॥ ॥ वक्रा वाच ॥ हत (ग)
मवल ॥ गकु धान ॥ काक्षि दीपित ॥ वक्रान मा यवी सी र्ना हत हत सह सुधा ॥ ती धान मा या मनु र्दत हत सना ययो वासव स फला कान । रुम कनी कानु र्दव
सफदी यानु पाताल लाका क प्रया फमा र्गन । विरु स मरुत सून वन्य गकु मरु मरु मरु रु यान । वक्रा नर्त वायु कथा कवन मनि श्रु र्द जगदी नित
नी । सी र्म र्द वि दी फव ता व विरु मूडा नु समरुतु अथ विषय वान । रु कानु यदा वा ग सुत सिद्ध सीवान विद्या ध्यान किन्नर रुत पिहनु । सर्वान समरुतान पि
पीठयित्वा दवा रुथा व्यापयितुं प्रवृत्त ॥ ती धान मा या मनि मूच वता ॥ गकु रुथा सी समरुत यना ला । जय रुति रुत कमला सना रुथ र्दित दवि मात । न माद वि
रु र्ज निवर्त कुर्वता इव च विक च पुन्य सूर्य सूर्य सुनय सुगम सुवर्ण रुका ॥ वि धनो श्री महायागिनी वहिनी वर्द पिज वडा । रुहिन कम

कमूदकन्देन्दुवर्णसिन्धुप्रतिपत्तकतीक्ष्णसिद्धिः संदृश्यते । शीतलरुचिनीवीनरुद्रसुररुद्रगन्धनधियः । पद्मपत्रकलध्याननूपयजयनीजयमान
सीमानवीमयमात । मृगद्वन्द्वसर्वसिद्धिपदजलनिधिवनइन्दुरिमयनिधिमहासूना । वासिकोमानिमारुद्रिमारुद्रनीवेष्टुवीवानुवीवायात्रभ्रातृज
हमकूटमहद्विमाडोमहिष्मिनीविन्ध्यसकालयः । प्रागिनीसीकृति । इन्द्रदीर्घः शोणक्षुल्लेर्लम्बादनेस्तालर्धोऽसकृत् । मरुतुर्वेष्टुयमथलम्बेष्टुत ॥ दिनक
त्रकनकाठिकल्पान्तवक्रियरु । हमवर्णसूवर्णवतिपीतिदकमतिः भक्तिलक्ष्मीर्द्धतिर्मद्विद्विद्युतिमिद्विद्विगतिश्चुष्टिचुष्टिस्थितिस्थितिस्थितिस्थिति । वदमातृका
कमानिक्ववग्मन्वतीगायत्रीसांख्ययागभद्रव । विवधवर्णलमृगलपत्रगुपागसिचकाकुखद्वाङ्गदभुक्मानकगन्धायत । वदभृताकधनूर्द्धविनीय
एविद्यावतीलाविनीअविनीवन्धनीआदिनीसाधकांसाविनीकीर्तिविराविनीदीप्तिर्सीजीवनीकुदनीरुदनीतायनीपुष्कमूर्द्धउमवदुकहीमवक्रामूर्द्ध
प्रियवदहनवदस्यार्द्धदहस्तिर्गविद्युदलामुखीकषुमूर्द्ध । नवमयस्त्रीपद्ममीपोद्गमासीवगुथीगयेकादगीकषुवक्रासुवे । ॥ २ ॥ उनीलेमरुहानीलमूका

दले १ यम गाने १ स्त्रु टिके म लि मत्र को ॥ वैज वैद्य चामी कना ल कत । नमने १ क ३ ले कू कू क यून हान धृति दूषित । रुमत्र वा कल वत्क लानी लकी धय
 चीमा म्वन । कनक कलन उत्यन पी नावत नाति वम्य नरु मी गुजाली य निष्ठी उतन सुने भावसा मध्व नव रु य श्या निग म्वरु ल ना रि स द हिल ना शिक शुभकी
 नृयमाना सदा गुरुस । वन वष रु ह समात रु हीला गति म मिनी । मत्र स श्व लनी सागवान् । नर्विनी नृय सा वि वि भ य वि वि धा वि दिति न क माता जि न द स वि डा वि नि
 वा श्वि व ता लि का पा लि नि रु ड का लि महा कालि का लान ल कालि काल कली नि कल । ऊय ऊय महा म रु ला दू द ना व ध नि रि म रु मि दि स ये ४ स स (हे ४ स ग ४ स ह
 यो ४ स स नृ द व द्वा वि मान ध दि धी म ऊ द्वा ४ सु नी ले मु व (४ ४ स व जे ४ सि ते श्व न प डे ध स श्व दि रु ॥ अ स न व न्द माने नो ये द्वा वि द ले नृ य का स न व दि नि १ रु य
 स । लो ल डि के व ल इ य क ले १ ग न व व न ल म हान रु क य द्वा व ना दी ग्या नृ क (४ स व । व नृ वी न ध नि कृ य वा दि ज ग ध व नृ य वि य क त रु ड न व न कृ उ ली द्वा
 व ग रु द य । सर्व रु ता ल य लो वि ग म्वा वि मा त रि धू य व नी धू य क रु क रु द रु वि धू सि नी म दि ष म लु य द । उ रु नी रु रु नी मा रु नी दी य नी व र्वी न व नी काल के

४५

दि २ द ६

धी सु क धी उ ग लु सि सं हा न क रु जि । या ग श्व नी सर्व ला क रु व नी श्व च नी । गा च नी व लु मा त रि धू म्हा र्ग का न ले नि वि व न ता न य न व म
 नृ मू र्ति महा मू र्ति नि ग्वा यि नी स य स नृ य स नृा वि न स व न ॥ लो त मि को मि वि य वि नि रु त व ना लि का त्या य नि म ग्ध ४ सा मा थ व यि य । क वि
 नि श्व ४ रु ही म नो द महा वा य व (ग स न स ल य नृ न्ध ल्य भा ध । अ स र्था त व दू न व न क वे कु वि वि ध मृ य मा वि वि ४ क रु वि ली ल ४ रु स रु
 (४ स नि श्व न त क नृ वा वा सि नी रु म स रु ति नि ली ल्व म वा य स । क व ल य द ल ला ल नी ला स स लो व न ४ म्हा रु वि ले ४ सि ते रु ल ना रु य व क
 नृ डा रु सि रि ४ काल नि नो ण नि का म स न्दी य नि सो धे का ला क नि ल्व न्ते या ना ल मा रु य द । च क व रि य द धी ध य पू व ल्य ४ मी द रु वा मा नि
 डि क रु गु ल्य य म य । ल मा वा धि वी वि रु नो स य् म्हा ४ रु यि रु ला सी म डी रु सी रु म जी वि डि जी व रु नि र्धा य य् म्हा ल्व म वा य धि ४ काल नि नो ण
 नी जा रु वी ल्व रु ण रि म या ध वि ना य न य न य न य ध र्ग ही न य न ल्व न सर्व ध म्हा य न । सर्व द व रु न रु न रु न रु स मा दि य मा ला नि व वि य

दि ४

गन्धानुलिखितं मन्त्रार्थरत्नाकरं महासहस्रनामसहितं ॥ इति काव्यनामकाव्यनिष्ठा विरचिता कृतकालनामकी गन्धी कामनूची सुखाधरणी विष्णुनिर्वाणी ख्यातिर्वा
यनी कृष्णपि रु पुगलुनिलयामनी दवदेषु नक्षत्राणि ॥ इति नैम्यरुगन्धर्व विद्याधने वृद्धितं मन्त्रवैश्वं मुनि ॥ रुगवर्गितवकीर्तना नूयार्थकालपाणे नि
वर्द्धं सुनन्देयानीर् मन्त्रानुश्रवार्थं मन्त्रानुश्रवार्थं गन्धर्वविनिर्वाणी यरुन्धविनिर्वाणी खगन्धर्वविनिर्वाणी उन्धविनिर्वाणी उन्धविनिर्वाणी
जीयमानं ननेर्निर्वाणी यन्धर्वविनिर्वाणी मन्त्रानुश्रवार्थं मन्त्रानुश्रवार्थं मन्त्रानुश्रवार्थं मन्त्रानुश्रवार्थं मन्त्रानुश्रवार्थं मन्त्रानुश्रवार्थं
पिसंवितादविस्वदीर्घं मुखं यन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं यन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं
गन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं यन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं यन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं
यन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं यन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं यन्धर्वविनिर्वाणी सामसूर्याग्निनयनयाग्निर्वाणी कर्तुले लालसंवितादविस्वदीर्घं मुखं

मार्गसायानमतमहादुर्क। निवर्तकधात्रनिष्कलनं यापनिर्गन्तुं सर्वकामपदं नामरिक्ता नदसे। साधकानां हितार्थं यत् संपत्तौ कीर्तितं। सान्द्रं च तदं ध्यायन् सर्वं यथायथं न
सदात्तं वृत्तान्तं वा उपयाच्य मन्त्रानलक्षणं। मन्त्रान्मन्त्रसंघानादिकं यत्कथं च लक्ष्मि। हतले याति यथा निश्चयानि चान्यानि वा तत्पूती। ध्यायन् वाचनं नानाहोमायवास मुक्तिर्दानयु
धवर्तं सर्वमतं लक्ष्मि यत्पाठ्यं दुर्कं दुर्कनापि सिद्धादिविज्ञातं॥ वक्रविष्टिदलाकारं मे दिव्यायने मन्त्रकल्पकादी सरुद्राय सिद्धेर्वर्तसाधकः। अथ तत्तु नियतकालं व
क्तुं लक्ष्मि कालाग्निं नृपं गतान्नानं विगतिं वा स्यात्। तथा हर्षवर्धनं स्वर्गं नृपं सहायकानि च वक्रविष्टि विनिर्दिष्टं नृपं द्विचक्षुः शरीरं स्वर्गं। तथा गायत्रीं नृपं तिलाका
नृपं उक्ता हर्षं अष्टमष्टि मति कस्य यस्याहर्षं यो नृपं नियतकालं समायं सविद्यं धर्मं चक्रवर्ति स्वर्गं कलायापि सूक्ष्मं। तिलावज्जलं परं यत्पनिर्गन्तुं पदं सर्वं लक्ष्मि यत् स
र्वं लक्ष्मि भू सर्वं गमिष्यन् लक्ष्मि नहीनं विगन्तुं सदा॥ ॥ लक्ष्मि दयवता नृपं ध्यायन् वक्ष्ये दयवता वक्ष्ये॥ २॥ वक्रविष्टिं॥ मुक्ताश्च वृषादवी दवदवनं मुक्ता। हिताय
विक्रमं जाय मन्त्रं यामपि देवतां। तन्माया तमसा कन्यमागर्षं स चक्रवर्ति उद्या तयन् कालं नृपं वरानूना नृपं यथा दिवं॥ पद्मं गच्छिष्यन् नृपं सर्वं दया ॥ स वा स वा ॥ यवर्षं ॥ यवर्षमा
लाहि ह्वान्याय नृपं वक्ष्ये। अथ नृपं यति ध्यायन्। आवका लक्ष्मि यत्पनिर्गन्तुं पदं। अर्चयन् विसे ह्वान्याय सूक्तिं विनिर्दिष्टं ॥ नृपं ॥ अर्चयन् नृपं वक्ष्ये। दानवस्य उक्ता हिनी। दवी कवविमूर्क

[illegible][illegible]

तैत्तिरीय। तत्कालातिविधिर्विभक्तवता कर्ता। अनन्तेवानुमानत लुप्तमा विनयानहि॥ ॥ अगस्त्य उवाच॥ एवं पूर्वैरुवासासी कृत्स्नवत्स्यदेविक। पो नृषस्यानुसन्धाय
 यतः कमता रुवः॥ ॥ उवाच॥ देवादि सर्वेण कीर्त्तनी वलानी यनमीवर्त्त। चित्ताऽसर्वं यदार्थऽस्य देवै कनायि चित्ताती। देवानूकलतां गच्छ। न किंचो नृष्येष्टिती। रुलत
 सर्वलोका नी। कृष्टि वष्टि विवृष्टि। तथापि पो नृष्ये गच्छ यति तवी जिगीषुषा। नहि न या गता काना देवमवा वगूहते॥ तस्मात्पूजका नाधि सिद्ध एव निया मितः। तथापि न
 कियुक्तव वलायति सम विनोः। यनं पूजका न स्य यति तवी सदावृष्टिः। दवदानव गच्छ। मयया मानव गच्छ। सर्वदेववत्स्यऽगच्छ। देवादि हि विनामता॥ सचदानव ४८
 नृष्येण दव नृष्येण वा सव। सिद्ध एव हि विनामता य उवाच विष्णु गिरा तनूः। नाना नृष्येण नरत्वा। सर्वैरुक्तै कनातिव। तनमीमायावीमाया। धामा धा नी यव किंच। एवं उवाच
 न क। नृष्येण ममरा मिति। तावत्सुवादिनी दवा। दानवन विमदित। तथापि पापि तस्य सन्ध्यायां सम्यक्लिता। अजिता सर्वदेवाना। मरुता यव यविता। बुद्ध विष्णो लुप्तवर्गा
 या गनिद्रा च सा सता। सा नका येवमा सता। कालवधन कालिका। तथा गता महादेवी। दवतान का ग निद्रा। कानापि सा द्वितीया मरु। यामिनी विगत विरा। अनक कानिद्रा सता

वक्रमाया महावलः। यावत्काल महावली। कालनीलानिल पुरः। वक्राकारे पवाकानऽसुना सुन लय क्व नः। यमवाहन काठीनी। सञ्जका विनिर्मिते। तस्य समं च
 मानस्य कम्पा च वसुधना। निष्ठावता निरुक्तं रयं जगत्सुना सुना॥ धारि महाध्यानतनी विधाय दवा समं जगत्सुना सुना॥ सिकुड्म कालानलदीपकता। तीयश्रुत
 सिद्धेन निविष्टी। रुयानि कृष्टं नृजाधियस्य सुनाधिय चारुय नृय नृपा। देवता नृकी सुष्टिकरी सुनाय। माला क्व देवी सहसा रुधानः। यावत्काल निर्वि सकला चन्द्रा
 कृतिना जिलिधूनिता। सिद्धेन यादु सुहसं यदृष्टः। सिद्धापि तं अक्षिनेष्वेष्टि विधि। नरव य हा मे महिषस्य काय। असुक्त यवो ह्येष्टि विनिर्मिताय। दिवो कसे सुहसा
 युविष्टा कनू। माला ववथ काय। तं धा नृगी ग प्रपुह नहिना। रुविनेताय सुहसा चखिनः। स। अपि ते देव निपातयो नृहीनेऽपुष्ट नरवदं रुयाते॥ दवाऽनि
 व सुहसा गद्यातान वक्रमाच नृकृत्कवकान। तथापि नावाधयि तं समकऽपुष्ट ननऽपुष्ट रुहताऽपयात। तं धा नृपाता हते सिद्धाजं। रुमी गतं धा नृपुष्टऽपुष्ट
 तनदानवाऽकाधेवनी यपवा दवीतनी अमुवना निविष्टि यऽपुष्ट। रुदेवी ते निधी छिता श्री निवा नय लो विजया जयाच। निवापि ना धा न वल समक माया समुक्त

तपुष्यवतीधायी गत्यातिप्रसवति च ॥ रुक्मिणीनाथसन्दर्भार्थं चिकित्सापूजनात् ॥ जयती मङ्गलाकाली रुद्रकाली कपालिनी ॥ इति कर्मणि बोधायी स्वाहा स्वधा न
मोऽस्तुते ॥ अनेनेव उमकुंठ जयहामनुकानयत ॥ पातः संस्रितावत्स महिषघ्नी ययुजिता ॥ अथ नाना यती किं यं यथैतत्तद्विद्यते मः ॥ सिंहाचूराधजयस्य नृपस्य नि
पूरा उमा ॥ दानस्मात्प्रयतवत्स नगस्य निवृत्तं रुये ॥ कपिसंस्त्रामहामाय सर्वगप्रविनाशिनी ॥ वषयथपि र्गदशा कल ॥ अथ य उरुमं ॥ ईस विद्यासूकामनुवर्हिण
सुगमिष्टदा ॥ मन्त्रवगमहामाय सर्वत्रागविनाशिनी ॥ महिषस्त्रामहामानी ॥ गमाधे उरुसंस्त्रिता ॥ कविभसर्वकायैष नृपैः कार्या विप्रलिनी ॥ यत्र स्मावर्चिका नोप्राध
मकामार्थमाकृदा ॥ यतस्मात्सर्वरयहानिर्त्यपं दुनियातनात् ॥ पूजिता देवना उन्द नीलात्यलकैराधना ॥ रुद्रकुंभिद्विकामस्य चिको यमैवावस्थिता ॥ गंधं पुष्पाक्षितीक
त्वा वम्रुमसूचिती ॥ रुद्रगभालियवे ॥ शुकवच्चमानं चिह्नं विती ॥ अथ न उरुयद ॥ यथा कां वामना वमी ॥ वामर्षकलर्गं गच्छ मातयर्षविता नर्क ॥ रुद्रकुंभिद्विका
मस्य नृपस्य रुद्रदायकी नमवि ॥ अथ विद ॥ वासु उव उरुनि वि ॥ धर्मी समुद्रयि ध्यामि वसा इती सुखावही ॥ ॥ इत्यादि यदीयरा ॥ विद्विधि ॥ ३२ ॥

वक्रावाच ॥ समय नष्ट दुःसा स वक्रावाचिक मंगल । सुखं हलविहगन दवी सर्वमता विश । द्यादगेव समाख्याता ॥ समा ॥ सी का किकल्पना ॥ सफवा सा उवाच वा ॥ अर्क के
 वयथा ॥ १२॥ मन्दा मन्दा किनी धी की धावा चैव महादनी । नाह सी मित्रिता या का सुका नि सफ धा नृय ॥ मन्दा धव वृ विह्व या मन्दा मन्दा किनी मन्ता ॥ तथा ॥ किथ धी की विजानी
 या इ ॥ ये धा नि पुकी र्हिता ॥ वव महादनी रुया ॥ वव जर्ज मुना कसी ॥ मित्रिता चैव नि हिष्ठा मित्रिता क्मु संकम ॥ वि वहु ॥ यश्च सफा नव द्यादग भवच ॥ कम धा यटि का ईता
 सुखार्थ पान मार्थिकी ॥ अनीताना गान रा गा ना यश्च दग सुता ॥ सानि धी रव ततय यहा र्थ संकम तवलो ॥ यवहा ना रव शार्क चन्द्र सार्थ पल दित ॥ काला पिकल त स
 व ॥ उमा र्थ सवरा चनी ॥ पू र्थ पाय विहगन रुली दवी पय च्छति ॥ एक धा पिक ती त स्मि न का टि का टि गु दी रव ॥ धर्मा विवर्द्धित अयू नाश्च यूय सखा दय ॥ अर्ध मा धा धि ॥
 कादि विषुवा यन सन्नि ॥ विषू वषू च यद्देह ॥ ज्येष्ठ रवति वा क्य ॥ वव विषू पद चैव ॥ छतनीति मुख वृच ॥ अयन वृ वि कल्या य सुनी निगद ॥ १३॥ यावद्विंश कली उ
 का तलू थ मूल नाय ॥ या निनी ॥ रा सु न दृष्ट दिना न द कि मया ॥ अर्द्ध ना र्थ असी चूर्ण दिवा यथ मना गती ॥ संपूर्ण चा र्द्ध ना र्थ उदया सुमन विव ॥ माना र्द्ध रा कर्न

पूषमस्तुर्वीर्णवर्षीयल ॥ संपूर्ण उरुयाधर्ममतिप्रकाशयन ॥ हनि वृत्तगीतिमुखगीत वृत्तविविधवृत्तय ॥ रुविष्यत्ययनयुग्ममतीतवा रुनाय ॥ आदोयुग्ममिजानी
 मा धयति नातिथिर्वृत्त ॥ अर्द्धनाथवर्गीतु विष्णुया वायव ॥ हनि मन्दाविषयजनगसा मन्दाकिन्यमुनाजनि ॥ धीर्दोवैष्णवविष्णुया धानाशुद्रगुरुयदा ॥ महादनीतु
 वीरार्ण ॥ भावुकानां जयावहा ॥ वाञ्छालयुक्तसानातु यवाथीकूनक मिश्र ॥ सर्वबीकानूकाभधर्मिप्रिताधितिर्वर्द्धनी ॥ नृपानपीथानिपूर्विक मध्याक्रमेष्टिजातमान् ॥ अय
 नाङ्गुसावेष्टान् ॥ अज्ञानसुमनत्रव ॥ विष्णोवां ययदाधनु ॥ अर्द्धनाथवर्गीतु कसान ॥ अर्द्धनाथवर्गीतु पीथकनठन रुका ॥ उषः काल उर्मिजाती हनि ॥ गमसामि
 नाजनातु ॥ हनि पुत्रजितान् सर्वान् सन्ध्याकालनसंगय ॥ अर्द्धनाथवर्गीतु विष्णुया वायव ॥ हनि मन्दाविषयजनगसा मन्दाकिन्यमुनाजनि ॥ धीर्दोवैष्णवविष्णुया धानाशुद्रगुरुयदा ॥ महादनीतु
 यावत् सन्दतिलावनी ॥ तस्य विष्णुर्लभं र्ग तत्सर्वयधिकीर्तिनी ॥ तस्य वाङ्मतागनु ॥ युधिष्ठिररुधिरया ॥ अष्टाः सहस्ररागभर्त्तु तत्कालं नविसंजम ॥ गका लम्बुड
 बीरुते ॥ अर्द्धनाथवर्गीतु कसान ॥ अर्द्धनाथवर्गीतु पीथकनठन रुका ॥ उषः काल उर्मिजाती हनि ॥ गमसामि

३२

साङ्गीनासुलस्थग अन्वथानकथश्चन ॥ दवीकालगतावत्त यथसूत्रयकीर्तिता ॥ साधकीसर्वकामानां मरुतरयविनाशिनी ॥ कथिताउमयासातु किंरय ॥ य
 नियुक्तमि ॥ ॥ गूढाधदयवतात्रसंकातिविधिः ॥ ३२ ॥ ॥ विद्याधनउवाच ॥ यथासासर्वमदवी सर्वबीचरुलपदा ॥ तथाहि अतुमिच्छामि वसाङ्गीनीसुविस्मयी ॥ ॥
 अगस्त्यउवाच ॥ वृद्धायासमाख्याता ॥ दवराजस्ययुक्तः ॥ विधिथपायरा ॥ यथा ॥ ३२ ॥ ॥ अवावहितामम ॥ वसाङ्गीनासुविनाशिनी ॥ सर्वकामयदायिका ॥ तथातकथयिष्यामि ॥ अष्टयुग्मवि
 दृष्टय ॥ सर्वबीमेवदवाना कथितयममा रुमा ॥ विगयवतुवक्रिस्वा ॥ अमृतानाथदामता ॥ विजयंरुमिला रुमा ॥ नृमानवानां प्रियकथा ॥ विद्यासौराथयूयादि कृत्तुस्मासीययव
 ति ॥ तस्मान्नृपगस्त्यर्थ वसाङ्गीनाप्रिगानिवा ॥ यूजनीयायथागीका ॥ वाञ्छुकामरुलपदा ॥ नृजादिषा यदाविकर्त्तव्यं यका ॥ सवाधवा ॥ इताननमूवा ॥ सर्वदृष्टादृष्टरुलपदा ॥
 अयानरुमिदाने ॥ अत्रसुविहिलानिवा ॥ दानानिमरुता ॥ न्याइरुमाधना ॥ विगियते ॥ विद्याधनकाटिकापीनी ॥ जयित्वाउयत्तुली ॥ तद्वरुनि नृप ॥ अतः नृप ॥ नृकनपिवाहयत ॥ नृ
 तीयार्जनसदृश ॥ सर्वयुकीर्तिता ॥ अयनीविष्वक्सेव ॥ दिनद्विदंतेव ॥ इष्टा ॥ यदानरुमानां धानयां लयते नृप ॥ तस्मान्नृपगस्त्यर्थ ॥ दृष्टादृष्ट ॥ इति श्री ॥ वसा

पुनश्चकारुष्या सर्वकालजयावहा समस्तान्जयार्द्धमा ऋतुमासा ईवामनी कृत्वा विरुचयिष्यामि श्वर्गललाहली उकाहमपियादवी कल्पयित्वा द्रुतामन पातयत्सपि
 धामनी मलरुदीप्तिरुली दवीमान् समीपम् निवविष्ममीयगी राणा पुजायते द्विपि वसा द्विपि गृहीतवता चित्रकन वृक्षिद्वय स्वयं वासं स्तुतव्यं च द्रुतवृक्षदिव्य
 नदीनासंगमवृत्ता गुरुमवविचित्रा मृगगंधर्व मिष्ट दलास सीहितान कामान् विधितालया नव ॥ अथ सामान्यता गदं समसृजं जनान्मूर्खान् कम्पुर्गुद्विव्यासम्
 कादण करीयरी जीवियश्चाथवासय दणवानवकानया विजेकं यावदकार्णं जिगीहृदं नकावेयत् यकृष्टं लेलयाववा सातिर्दं मरुतामनी यश्च स काथनववागवा ॥ ३ ॥
 ककविद्विषीं सर्वता रुद्रविश्वं कामवद्याविवर्द्धी उर्द्ध्वमस्यानि कागमसकोटी विरुचयतः ॥ ॥ अथ द्रुतवृत्ता नवविधिः ॥ १५ ॥ ॥ मयवरी
 पुहं कार्यं मथवादेवते समी तस्यमाधरुवत्कुं रुक्मदिल कणा विगी वउक मथवुरुष्या यकं जा कृतिवा थवा एधिवी जयदं गुरुं वलं कामरुतपदं यकं ऊ जयमान
 थं यागज्ञानपदायकं ॥ १५ ॥ काथविज्ञानं कुं ऊ काथविज्ञानता सामान्यं सर्वहामय रा कं ऊ ववा लमी विरुचयता उल्लयन्तु मखले छिदि रूयिती चत्वापिपीय

धक्या दकुलानक उमानत ॥ द्विउधन द्विउधक ॥ हामसानेका नयन ॥ पूर्वसंसा भयद्विचरुत ॥ यार्थ सगृखली ॥ हेमवाना जर्तवापि ॥ तार्थवालक ॥ विर्गा ॥ वहुर्दिकुव ॥ यत
 मय ॥ १२ ॥ स्वलसंयेह ॥ तस्यम ॥ थरुवदर्थ ॥ कयद्विस्वलाकया ॥ हामाक्या यमा ॥ वन ॥ वहुनेकुलमानया ॥ घतनि कुमना थयि ॥ कयतिस्ववियथिता ॥ पलेर्दग ॥ शिवद्विनेना यकार
 मथ ॥ वजत ॥ यध ॥ लिङ्गुनेहमि ॥ सफणाववणय ॥ यथापू ॥ वजदत्त ॥ तथ ॥ कयतिवान्यथा ॥ रुकुमार्य ॥ रुवडेर्म ॥ १२ ॥ स्वर्ल ॥ गुडा ॥ कृति ॥ न ॥ थस्यनिवद्वध ॥ अवल ॥ अय ॥ रुत ॥
 मलि ॥ वाय ॥ कुज्जायि ॥ अथ ॥ र्त्तका ॥ नय ॥ रुत ॥ पूर्वकार्य ॥ नूय ॥ द्वि ॥ गुर्द्वि ॥ उर्द्व ॥ चवा ॥ कयति ॥ लार्थ ॥ र्त्तवर्ध ॥ यति ॥ र्त्तवि ॥ वि ॥ दि ॥ ती ॥ तद्वर्त्त ॥ कि ॥ धि ॥ द ॥ य ॥ पि ॥ कथ ॥ यामि ॥ न ॥ य ॥ ल ॥ म ॥ स
 मा ॥ यन ॥ उ ॥ मा ॥ स ॥ य ॥ दा ॥ हा ॥ ना ॥ य ॥ र्त्तव ॥ ल ॥ म ॥ दि ॥ म ॥ ध ॥ य ॥ द ॥ त ॥ सर्व ॥ काल ॥ य ॥ दा ॥ य ॥ दा ॥ क ॥ धि ॥ क ॥ व ॥ च ॥ क ॥ थ ॥ य ॥ रु ॥ कि ॥ य ॥ क ॥ १ ॥ का ॥ व ॥ ग ॥ रु ॥ क ॥ वी ॥ द ॥ वी ॥ च ॥ द ॥ द ॥ वा ॥ य ॥ थ ॥ स ॥ र्त्त ॥ ग ॥ ना ॥ शि ॥ वा ॥ त ॥ द ॥
 ह ॥ ता ॥ य ॥ हा ॥ ना ॥ ग ॥ द्वि ॥ वि ॥ ध ॥ पि ॥ मि ॥ व ॥ गु ॥ धा ॥ नि ॥ य ॥ ने ॥ मि ॥ कि ॥ क ॥ हा ॥ म ॥ म ॥ न ॥ य ॥ ॥ ग ॥ न ॥ दा ॥ य ॥ थ ॥ या ॥ य ॥ स ॥ रु ॥ कि ॥ मा ॥ स ॥ क ॥ स ॥ स ॥ क ॥ य ॥ रु ॥ स ॥ नि ॥ धि ॥ स ॥ य ॥ हा ॥ हा ॥ क ॥ या ॥ ला ॥ सु ॥ मा ॥ त ॥ ना ॥ गु ॥ उ ॥ म ॥ पि ॥ वा ॥
 क ॥ ल ॥ य ॥ त ॥ र्त्त ॥ हा ॥ म ॥ व ॥ द ॥ वी ॥ ज ॥ र्त्त ॥ वि ॥ मि ॥ ता ॥ र ॥ ल ॥ न ॥ य ॥ ता ॥ सु ॥ सु ॥ हा ॥ द ॥ वी ॥ म ॥ हा ॥ रु ॥ ला ॥ काला ॥ दि ॥ व ॥ लि ॥ ग ॥ ध ॥ दि ॥ य ॥ ति ॥ हा ॥ व ॥ च ॥ का ॥ न ॥ य ॥ त ॥ तदा ॥ स ॥ म ॥ य ॥ लि ॥ स ॥ म ॥ य ॥ ने ॥ १ ॥ सर्व ॥ काल ॥ य ॥ दा ॥ य ॥ य ॥ त ॥

तथासाक्यहानस्तान् लोकपालानि विसृज्य ॥ हे माता उतता आवा वलिद्विजायलकिता वरुष्यवलिगधदकिनादियथाकर्म । मायुर्वाला कयलानां यहाभा अयथावि
धि ॥ हृदये तं यदयत्तु मूलमकु ॥ पूरातने १ अथवासर्वसामान्या वादिकामपिका जयत् ॥ अथर्वविधिनवत्तु पूर्वकीवायथापूना । यरुगमनेनेवये हृदियकिवसीयते ॥
कृष्णभिरुपयत्तु न अन्यथा नकदाचन । कृदर्यविजानीया रुदर्थतन्त्रकानयत् । सहजान्तिहा मनयार्तयविनिवयत् । मूलमकु वदयो ॥ १ ॥ सलरुदयेन
हु ॥ यत्तु शनिनामकु व निखायां गृपातयत् । अरुवनयमकु व सर्वसर्वकुमाकियत् । लोकपालान् यहा नागान् द्वादशाङ्गनेयुजयत् । निवाद्यान् सनकायां ध ॥ ४ ॥
वाशानपिपूजयत् । निरुष्वयथासाहू नैमिल्यविनिवत ॥ पञ्चकानिचसफानि नवकानिक्वियदिके ॥ अमर्षवृश्चगधाय यदा अकृतयसुथा । विकानाथगे
थावत्तु वाद्व्या सिद्धिसिद्धिदा ॥ तदकचसर्वकार्ये सर्वकामयदायके । यनहा निष्कामायाति सर्वहा मधूमकुला । सहजान्ति मरुगडा नमस्कृत्य विनिवत । नमस्क
नीलकण्ठाय श्रीगवासाय यावत । ध्रुवमखलक्ष्मणाय वज्रहृदये नमः । सर्वजिनसर्वगतो वावकाय नमानमः । इत्येकं यन्त्रपाय श्रीलिङ्गाय नमः । वसु

३४

अश्विननृपाय सर्वहा नैयवे नमः । हनुदया नकर्मसि धात्रहाय नमः । विष्णुर्जगत्पालाति वक्रासृष्टिकनः सृता । त्वं सर्वताकादव लोकपालतनसिता । ॥ २ ॥
यवक्रयेदव यमायपिगता निने । वक्राभिलसामाय वृणदवायवे नमः । सूर्याय चन्द्रनृपाय । त्वं सृताय वृक्षाय च । वरुणाय शुक्राय जननाहाथ नमः ॥ सर्वगत
हनुपाय बालमागङ्गा नृपि । वृद्धिस्तुति स्मृतिर्हृति कर्तुं ववत्रदाय च । नमस्कृत्य मातङ्ग त्वयि च नमानमः । कृत्वा मधुलेवापि स्तुति लवाथर्वा विहा । मरु मधुवात्वा
दव इत्वा वृक्ष लरुनरा । यत्तु की नमस्मान् । विल्वी हियवातकुमान् । रावादरावतावापि सतां हामय नल । उर्वविह विहीनापि नवाविग तकिविष । किंयुनत्रित्यहाम
उवसा इवा इतागने । सर्वमकुलमकु व यूर्ध्व इति यदा ययत् । लोकपाल यहा नागान् उंकारेण नमानक ॥ ३ ॥ सर्वमकु सुगवाभा । हामे कार्यनृपा रुमा । अर्धविष विपुत्र
अ सीहृती यगपायसे ॥ हामयद्विधिवद्विधा वलिअपि यदाययत् ॥ सिगवमुधना रय धावल ॥ सहवाहन ॥ यजय कृष्णत्वादी नागनृपिपार्द्विजान् । अर्वायनिवाध
वान् लोकान् सर्वधमनार्थयान् । नठनल कवय्यथ कन्यकोविधवाप्रिय ॥ दीनाधकयधायैव अन्नदाननयुजयत् । उर्वनिवर्गन कृत्वा नि एउर्ये गती । योगम

॥ कर्त्तव्यार्थं सर्वं भक्ति युक्तं ॥ रवो नृप नारायणं पूज्यं किं कलदायकं ॥ ॥ इत्यादि वीर्युना ॥ वक्ता ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 वत्तुन सूर्य सिद्धि न कालिहत् ॥ गीर्द्ध कन्द वत्तुन ॥ वक्ता ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 मय इन्द्र किं स्वामी वक्ता ॥ वक्ता ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 कृष्ण ॥ गीर्द्ध कन्द वत्तुन ॥ वक्ता ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 स्वर्गस्य दुर्द्ध वाच यति यः ॥ वक्ता ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 वदत आनामाना सुखिर्नमा गुरु ॥ नाधिकान्तरा गुरु ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 नृपामना सुखिर्नमा गुरु ॥ नाधिकान्तरा गुरु ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क

कमि कीट विवर्तिता ॥ गत्या वक्ता ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 मी सरु काले दले ॥ गुरु ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 काले तु सातत्याद विवर्तिता ॥ गुरु ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 तादा ॥ गुरु ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 मदातले वदुक्ता ॥ गुरु ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 इव दत्त मा ॥ गुरु ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क
 वक्ता ॥ इति निवेदन विधिः ॥ ३५ ॥ ॥ ब्रह्मा वाच ॥ तत्कदा तत्क

इति यदानस्य अकारमपि यद्वत् । नृपे नयूषकामेन पूजना मजिगी वृणा । दया धनसदावत्स विपुनामयवृद्धिमान् । विष्णुयानिताहामस्य नकार्यस्य नुकदाच
 ना । मरुदायमवाप्राति यनयविमूखाः सुनाः । इव्यारुवद्यतागव नृपतस्तनजं रथ । यदिनावदते धना तदा विद्वन्विद्यो । हानं कृत्वा रुमापेत दर्वं दवी नृया रुमः ॥
 पुनः शकी रवधाम् । पतिष्ठा विधिवादिता । महा आनिनमासु अरुमीनवमीयुव । कारुकीमाघविशु दिवायी शदिनीयुव । वेगखानु उदातया इ ह्य अरुस्यस
 रुमा आया दद्यानीहाम् अरुमी पूर्विसावरु । नरस्य बाहिनीवत्स वरुथस्तनजदिन । सौ क्रान्तिवृचसर्वेश्च उन्मो प्रिरवास्वाच नृस्य यो घना गनु पतिष्ठा यरु
 कर्मणि । गका ऊय पुदाय्या जमपूया शिषेचन । मो ज्ञे उतनिवन्धु उरुवाकं पुदगीन । परुकायपत्तुव धनादया पुरावद ॥ पर्वया वा इय इनी गान्द्र दृष्टन
 कर्मणि । तस्य रूष्मिध गसर्वा समग मरुसागना । अथ मधसर्मधु यं दिनहामात पुजायत । वाजपयगर्तनावी अग्निशमगर्ततथा । आधया वाधयस्तस्य नरवजि
 कदाचन । आधया नो यमैः वया मिहवाकं निवीरवत् ॥ ॥ इत्यादिदवी पुना ववसा छिनासनाका ॥ ॥ ॥ ॥ अगस्त्य उवाच ॥ इति ना वदन्वा वाकमिवा

५६

यममवागती । मया पितयथावृत्तं तथानाजतपुकातिता । वक्रविष्णुसूनामधः मरुहयविभाकदी । मै छिती गर्व । म विन्दवाचस्पतिवितामहे । नृउस्मा र्थमहादया विष्णुनाधनधा
 वृत्ती ॥ वधं महिषनृपस्य रुमी दवावतावरी । वरुधज कुर्यधना मरुत्वायुया ॥ ० इथा । दयायततदवस्य ग कनस्य दनयि । गच्छ च त्वन लेलवा मरुवा सुमनाहन । दवीर्मपूज
 थित्वा तु गच्छयित्वा कमात्रिका । तदुक्तिराविता न विपान् स हलान गमुत स्यात् । यथं गकाचदको कोन हंमवदुविहृष । विहातास्तान् त्वस्त्रिवाचयित्वा पूजयित्वा नृपुमैकी
 सुगन्धगन्धधूयन पूष्यमाल्यैः सुचन्दने । यदाचामने गमोद्ये द्ये विनूया गहित । इकलवम्भारना । यद्युपकुनिवर्गयत् ॥ नावर्कपूजयित्वा तु यथाविहवविहृषे । वत्स
 यगता नाजा दवी मारुत्वा सुरुमी । तदस्मिन्नाति गकमु जनस्य सनयस्य च । गच्छा मयजाना नृ वनस्पतिमखेष्व । कावृविदू पूजवालानां सर्वमवपुर्गु वव । अमनवि
 धिना नाजत यः पा ० कुर्यादयि । विनयदाययदपि तस्य पूष्य रुत्नी ॥ ॥ अथ मधसर्मधु वाजपयगर्तस्य च । अग्निशममहाशम वाजस्तु यमहा मखेश । यत रुत्नी त
 रुतगात तत्तुलना गधारुवत् । गमता या शिषकाद्ये स्त्रीये धैमिष पूष्यने । यत्तुलन रुतगात तत्तुलना यत्ताधिकी । वक्रहृत्वादि पायानी । नमनीयनर्ममती । वदनी वाथवे

मर्निना काममाकुरुतपदं। यूपदं योते दैताग जयदं सुखदं यनी। अनन विधिनावत्सया प्रातिष्ठवत्तन्नन॥ इह का हं वि रं बा मं यनरुवगीलयी॥ ॥ इत्या इयववगानद
वीपुना। (दद्या ४ पूरु कय ० तमाहृत्य) ॥ ३१ ॥ गउउवाच॥ प्रवं सर्वपदादवी यथनाथयवक्षिता। तस्याहं अमुमिच्छामि व्याफानाधनयूजनी॥ ॥ उश्वावाच॥ नपगनापवदवी
पूर्ववाचपूजनी। तस्याहं रकिमायनः कथनादववासव। यथासंस्तुतास्तस्य व्याफिरावनविश्या। तदाहं सूत्रनाजन्तु रश्चैकमनाधूना। एका एवपनागकिः सर्वगव्यापिनी
किल। गुरुवारक कर्तव्यत्वा हृतोद्येयकथास्मिता। रसातला एव द्वाख्यः कर्मवर्त्मनाधिव। गुरुकानयनीनन उरुवात्साववक्षिता। रुमजन्तुमहद्वर्तु सरुसुकिनाधह
ली। तफहाटकसीकाणी काथायुतगीनियरी। नतकाटियविस्तीर्ण समनान्यनिवर्तुली। तच्चवर्षसिहसनी द्विधरुगंततः पूनः मध्यतस्या रुवद्वप्रा वल्लसूयक (अविशु) स
कली रुविर्गहर्तुं स्वदिशामन (गुचनी) ससि सुः ४ यजा ४ सर्वे लयाधगनवासव। स एवस्मिन् यतिक् विना (गुडसारुवत) स्तावनस्य वनस्यास्य दग्धा दग्धस्य वासव। ज
नायुजा गुजामूना मुहिजानति (थेवच) नगनदसमूहानी वि (गयउरुवारुवत) विशाधदन वशानी वशनी जननी गथा। मातायिक्क रुदन वदं रुदनसा स्मिता। मरुत

कुडियामूडा विषहृदनादियु। अथापि तुरावन गमकलियजा नूज। नचवर्णाकरावां। अथमानीकियासुधा। अथमलुनयन। सूर्यस्य सुवर्णय। साचव
 र्णकमाकृता द्विजातिवृक्षवापिनी। गकनयह्वानाध वधुनांकन। अविद्विधीयवाकाद अस्यासावकीरिता। दीपिः सूर्यकमा सुमौ कानि यन्त्रु जलशुनि। का
 लावकी गतिर्वीथो या मिसायापिनी रुवत्। यजमानतथादीका धात्रगाथागिनामयि। यरू। पहावती सातु वाभीनातु सनखगी। लक्ष्मी सातुधना आनी सिद्धिः सिद्धीयूनामयि। दया
 दयावती सातु यीतिः यीतिमतामयि। धात्रगा। अथधनवि गथा वाधयूसासुता। यनस्य सायनवन निवस्य निवगमिनी। कुकि मूकि यदादवी वक्रादीनानुसामता॥
 ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नो यो दर्वी म नो हवीं यजति विधिवत्कृत्वा न न विवत्त मा प्रयात् वायुः पूजयत रुक्म दर्वी विरुल समुवा वायुर्त्वं न त त्याक् मनो यत्तु उ न वरु ॥ वसवः की सि की दर्वी पूजय
 नि विधानतः ॥ पावूर्व रु न ह त्माना वसुर्त्वं सम ह दय ॥ अग्नि नो यार्थि वी न्दर्वी पूजय नो विधानतः ॥ तिन ता व न्नि नो देवी दिव्य द ह ग ता व री ॥ रुद्रा टि कां न्भ र नो दर्वी व न्नु न्भ र्च य त्मा
 दा ॥ व न्नु ल्त्वं हि र्से यार्थ त न म द्या सम न्विती ॥ देवी व न्नु म र्था पूथा म न्वि र्थ ज ति रा वि तः ॥ अग्नि र्त्वं पा य वा र्त्वं न त जा नू य स म न्वि ती ॥ ता र्वा द र्वा सि द्वा क र्त्वं रुक्म द र्वा दि वी क न ॥ अ न्
 न त न र्से यार्थ त न सूर्य त्व मू र्त्त म् ॥ मू का र्त्वं स म र्था द र्वा सा म पूज य त स दा ॥ त न सा मा पि र्से यार्थ सा म र्त्वं स ता क र्त्वं ॥ पु व ल क म र्था द र्वा य ज न्क य न्नु न्भ र्त्मा ॥ त न न म्भ मू र्त्त
 म्भ द्या ॥ पु या न्क र्त्वं य न्ने य र्त्वं ॥ रुद्रा य स म र्था द र्वा पूज य न्नु न्भ र्त्मा ॥ रा क्सा य म ह त्माना न्क र्त्वं न त मि ता वि क र्त्मा ॥ य य सी स म र्था द र्वा धि र्ग वा पूज य न्ति ती ॥ त न म्भ द्वि व लो य ता ॥ पु
 य न्ति य न्ने य र्त्वं ॥ जे ला ह्की स द्वा द र्वा य ज न्क उ च्च का द य ॥ त न र्ग ग व लो य ता ॥ पु या न्की य न्ने य र्त्वं ॥ व ज्ज ला ह्म र्था द र्वा य ज न्क मा त न ॥ स दा ॥ मा न्द र्त्वं पा य ता ॥ स द्वा ॥ पु या
 न्ति य न्ने य र्त्वं ॥ पु र्व द र्वा स ग भ द्वा ॥ धि र्ग वा य ज न्क र्त्मा ॥ पूज य न्ति स द्वा क र्त्वं ॥ उ च्चि का स न्ना यि की ॥ त सा न्भ म पि द द न्द ॥ य दि रु सि य न्ना ग र्त्वं ॥ नि र्वा मा त म र्था द र्वा पूज य न्नु न्भ र्त्मा

[illegible]

नै. सर्वलक्षणसमन्वितं। पूर्ववक्तव्यं चूक यथाधार्यचक्रिन। महाजनयदायतां महाश्रीसंघसंकली। सर्वत्रयानने वये ४ समस्तनेपि पूजयन्। दयाच्चदिवर्तिगक सर्वदि
कसमकगः। रक्तवतालसंघस्य मकुलमनसूवतः। ऊयत्वंकालिरुतानि। सर्वरुतसमावृते। वरुमानिऊरुतयावर्तिगकसदाधिय। मातर्मायवमडुर्नै। सर्वकामार्थसाध
नि। अननवलियननन सर्वकामान्पुयचम। उर्वदखावर्तिगक यथादेवावतात्रयत्। विन्यसेरुपयी। ०३. मउसेन्यागालि। तजस्वीपूजयदवी। हेमनोयथामुजे।
कललेमुसहस्रग। धादकसूयविर्ते। समस्तकलसंघाते यत्स्त्रीयेवथयल्लवे। स्त्राययदकमकन वल्लगहेनैरेहरे। वदमकलगधनग। स्ववादिप्रनिस्वने। वय
वीगमदक्रेय्ययथाकिंकिविताविर्ते। स्त्राययितातादवी निर्ममइकले। ०४. गमयादिकते। ०५. दीयवर्त्ताविवाधिते। स्वस्तिकेनैदिकावर्त्ते। ०६. स्त्रीलात्यलात्य
ले। यवभात्यकनाहिमेयवेवात्रेनिमश्रुयत्। यत्कलुदहधूर्य। यत्ककलले। ०७. स्त्रयत्। तथाकयूनकोदन वन्दने। ककुमनच। गमनावनसमगतन। रवीमालि
यपूजयत्। हेमऊरुतिऊमाल्येवइत्यादेननेकधा। वासाहिः। समस्तविजे। पूनइयं समूलियत्। रुकयतातदाकन्या। द्विजादीनान् सुइ। खितान्। रुकहा। आवधानन

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible]

मार्तर्हर्तृसृष्टिं नागयागनवृष्टिं। द्यातमानाविधून् दवी पूजनीयाश्च नन्दन। स्मृतितायुजिताङ्कः स्मृतितायुजितायिव। यय कृतिपुत्राङ्कमान मनोरीक्षणय
जनेन॥ पञ्चदशलयाववा मन्मथवायिवा सर्वे। सायवासः ७ वि० सात्वा कामकाधविवर्जितः॥ सर्वसाङ्गजितः सीतसुमनसावरुवितः॥ ययवा। भेषहोत्रेय हविषा
नेननकग॥ तिलसूर्य्यवान्द्रुत्वा सर्वमङ्गलमहिमान्। वसुधामासुसमीतिः कलगीधवीकुसुमाययत्। गतसुखासुखलवे यतिष्ठकनकाययत्। दवीभास्यार्थितव
रुम्मागमउलवदकः॥ रूततकुपहवाल गनूठषुकाग्रमे॥ प्रतिष्ठापयनिवाकेसु यथागकागुदकयत्। पूजयेद्वा मन्मथनङ्क कन्यावालां सुथेवच। दीनाध
विकलान् सर्वान् यथागका कमाययत्। तदनकसुखिवाचातु मङ्गलाधीयतामम। अथतिष्ठतुनाजाना। गतब्रमणयडासुथ। कयविदुः प्रदवालेस्यः॥ सर्वभक्तिक
नारुव। सर्वकामान् ययकलु यजनायो निकाशितः॥ तथासुधनवानेन निवर्णीतनता वित॥ ॥ ॐ ह्यद्य दववताययतिष्ठाकर्मयोगः॥ ४१॥ अगस्त्य उवाच॥
धृत्वेवदवगङ्गन कर्मयोगपितामहात्। पयकवसुर्वरुयः॥ मुनीर्त्तयथपूना॥ ॥ गङ्ग उवाच॥ सर्वदयाः पूनादव गमुनाशान्वस्ययत्। कथितं सिद्धि

कामस्य तत्रावृत्तितामह ॥ ॥ वक्रवाच ॥ ॥ उक्तं तु यत्रा न क तय सूर्य सुदृष्टं । दिवा वर्चसहस्रं केला निरवनाह ॥ तथा पिना रव रुस्य वन्दन्ति पूवान्
क ॥ ॥ पूष्य दत्त गणेशाय मूदी न तम धनं स्व ॥ तं वृद्धा तं तं विहं ॥ उक्ता वद विद्या म्व ॥ सुवनानं न तदा गुरुं तावया मास रा म वि ॥ वि चि र्यं यदवो धने ललि तं मधु व ध च
॥ ॥ ॥ उक्तं उवाच ॥ ॥ उक्तं वद विदं कता ॥ ॥ निवृत्तं रुक्म रा वरा वि तं । संसा ना ह्य री ति वि वम न सं वि ह्य य म क र्त्तुं । य ह प य नि ह्य ना ग व द लं आ या स इ ध वा र तं
क ॥ ॥ र कं मी इ वि तं वि शी य न क र्त्तुं नि र्दं उ का मा तु र्त्तुं । रुक्म रा वरा वि तं । संसा ना ह्य री ति वि वम न सं वि ह्य य म क र्त्तुं । य ह प य नि ह्य ना ग व द लं आ या स इ ध वा र तं
रु य क वा द य न्ता म्भ का वि तात् क मा वि द्म स्य वि तात् य नि स ना त्वा नी च य य व त । रुक्म रा वरा वि तं । संसा ना ह्य री ति वि वम न सं वि ह्य य म क र्त्तुं । य ह प य नि ह्य ना ग व द लं आ या स इ ध वा र तं
ने वा वि ता म्भ का वि तात् क मा वि द्म स्य वि तात् य नि स ना त्वा नी च य य व त । रुक्म रा वरा वि तं । संसा ना ह्य री ति वि वम न सं वि ह्य य म क र्त्तुं । य ह प य नि ह्य ना ग व द लं आ या स इ ध वा र तं
सं प्र ता ॥ पा र्क कि न्म म ति ॥ य व न पु न्ने र्द वा वि ता य व त । रुक्म रा वरा वि तं । संसा ना ह्य री ति वि वम न सं वि ह्य य म क र्त्तुं । य ह प य नि ह्य ना ग व द लं आ या स इ ध वा र तं

शार्ङ्गयुतचक्रवर्णजगदिदं विष्णुनामूर्तिरिति॥ कर्तृकान्तकान्तदीपगुपतिर्दर्वचर्मनर्चयत्। जेलाकसाअथतथमवर्तना। गन्धकन्यासूनयवितय। एतानि
 वान्यानिचतत्तरुर्कयर्वाहनपीतिमनावरुव। यलोकवृत्तिरुत्तिकानिवयूषाधर्मार्थकामयेदाविश्राममतिवत्तकुलनूविधाहासिगेउसुस्त। कर्तृकिस्र
 मयूखकानि किमोर्जुसुधकानादि॥ तत्सर्वविधिवत्तुमाअविबूध॥ साफविद्वर्तियनी। यत्रीलासलयजगन्धसूनर्जयीदाहुवाजीमधू। कार्मवानूविलासिनीस
 लेलिर्गसथममालिङ्गिनी। युद्धियाधुवर्गागता॥ सूकतिनसुक्तागर्तमानूषी। तत्कामानिनिधवत्तइयनर्गगर्वाहलीमध्वनी। यन्मातङ्गउनङ्गमाकूलवत्त॥ पुखातय
 धानवत्तमलेअपिगतेमदीषुविसुव॥ यद्विन्नगुसुले॥ संद्वर्तुनिसुहस्रवमनिजित॥ सैन्यानियस्यद्विर्वाविश्रुतकिनया॥ निवाचनविध॥ सर्वहितद्येहि
 री। मरुत्तमदवाविष्मोतवदेनस्त्रीलानस॥ याथिवा॥ कृष्णवत्तवत्तजिदिदगदि॥ मधूधकानाकला॥ यद्वक्तिसूदान्विता॥ सहस्रगे॥ वत्तातययाहि
 मूडशारिवातस्यतत्तलमिदं संकुशगनान्यथा। जेवर्थायवर्तनजयउनगेयद्वमगलीलया। लनिर्नमविनिह॥ मरुतगुदेयवामसकीर्त्त। गमूल

卷之四

३ वं

134

五

सुनिहिः३

संस्काराणां यत्नः पुनः ४ कीर्तनस्तोत्रपयता ॥ गता गुणुलधूपश्च सुगुनस्तं पदापयता ॥ तथा गच्छादकं स्नानं पुनः स्नायनस्तोत्रपयता ॥ श्री स्वस्ति नमः
 नमः ॥ विल्वपत्रं प्रजयता ॥ पायसं च यद्यद्या निवस्य केन राजयत कन्यादिर्जां स्वर्गस्तु गच्छीदद्याच्च किंभी ॥ काशोयनिर्गति उच्चार्यः
 प्रियं तीममसर्वदा ॥ आत्मनः ४ यानदीं तवुर्जं कृत्वा प्रातिरार्गव ॥ अथ मंधरुलं मय्यं दद्यात् लाके भस्मं धूपं नुति ॥ गदागतं ४ मूर्तिं रुमिं वृथिवं
 जायत नृप ॥ तनूर्जं लहयार्गं शिवां प्राधिकर्तव्यं ॥ मास प्राप्ता पदतुल्यं गमनं गायतृहीतुया ॥ मृगया आत्मना चैव मूषर्लिं प्युक्ता प
 यता ॥ तदा नमः लके स्नात्वा पुविः स्रग् विवर्जितं ॥ पूजय्य धूमिका पूष्यं ४ दवीं कीर्तनस्तोत्रपयता ॥ वन्दनादकमिच्छा कंकमल विलपयता ॥
 ततः ४ पूषकं लोवर्गं कर्तुं वल्लुं दद्यात् ॥ अगुनं भूपनदद्यात् मिलनं लनदीपकान् ॥ तनगा ४ राजयत् कन्यादिगा ४ सुदुर्लभं न ॥ पा
 यता ॥ कावलान् नीचां भस्मं बहिस्तुगां ॥ दक्षिणं किं तादया तस्या वाच्यं गुणं न ॥ पातनं वा सनत् ॥ वृक्षे लं मनिदं लं लहत्

३१

३१

चा

३१

॥ गच्छते विष्णुलाकं ॥ तदा विप्रादि जायत ॥ धनाद्युपहृति र्गमय ददवदानं यानगे ॥ पूर्वं बानधवा नृणां गिषुर्भद्रा पृथुर्गो वा हवत् ॥ आ वि
 नं अष्टमी ४ केन दीमत्ता दैर्हि स्नाययत् ॥ तदा दवीं स्नात्वा यत्नदध्वा सुदकं नव ॥ आलस्यं वाचना चेत्तु पूष्यं दद्यात् बालकं ॥ सतर्कं सितया मिर्ग्यं
 अथ शेषं च यत् ॥ निवर्गं नो हिर्यमी समाजं हेल्य कर्जयिवा ॥ गम्यं विवेकिं र्हे स्नात्वा कृतया कानिदायत् ॥ तन कन्या सुहाजीयात् द्विर्जां प्यिदमायय
 ता ॥ भक्ति तादक्षिणं दद्यात् आत्मनस्तु च राजनी ॥ गमसहस्रं प्रदीपदानं स्वरुलमा प्रातिमानव ॥ आनागी सुखवा न्धन्या यायतं ४ हमानव ॥ इमं नाम डुकी
 र्हि त्वा गत्या लाकं महीयत ॥ कार्त्तिकं दहं मूलादि मृदि ४ स्नायात् सुहाजीयात् ॥ दवीं गच्छादकं ४ स्नाय्य जेभा ने ४ पूषल ययत् ॥ पूष्यं च ४ न स दयं तिलं तं
 नदीययत् ॥ निवर्गं याच्यं सार्थं ४ कन्या विप्रोष्ट्वात्मनः ॥ राजनं स्वस्ति वाच्यं तदक्षिणं पीयसी सिवा ॥ जनन विभिना वत्सविद्यादानं रुलं लहत् ॥ वदव
 दांगतत्वं रुदकं भिव तां वृज्ज ॥ मार्गं भाषयत यमा सी अष्टमी गिनिमत्तर्हि ॥ स्नाय्य दवीं नृत्त ४ स्नाया तीर्थं तोयनं हागव ॥ पूजय बालकं कर्त्तुं पूजाजा

स्त्राय यरुन चन्दन नम्रगविना ॥ तता विचल्लयुष्येयुः यरु स रुम ॥ नेव र्धनक बोदया ॥ ४८ ॥ काना कत्य कात्रयि ॥ दक्षिणा ॥ किता दयाच वि
 कायति वाचयत् ॥ लहत ॥ कय रुस्य सो वाम निरुल्लसर् ॥ ४९ ॥ मित्रे वज्रा वाट निसा ता यत स्त्राय यत् ॥ तथ दवी ऊल रुष वा निदा उदक नच ॥ ५० ॥
 स्त्रात्वा सल्लय यत् कर्षु न चन्दन वाचना मृत् ॥ ५१ ॥ यं चन्दन कर्षु न वाल के सित सिंहे के ॥ ५२ ॥ रुक्मा स्त्रु स र्कने र्धु निगुल निया न कान न ॥ ५३ ॥ दध कन्य
 का विद्या न्ना ऊर्त स्त्रात्मन स्त्रु ॥ ५४ ॥ किता दक्षिणा दयाम हि षट्प्रीति कीरु यत् ॥ दीय माला द्यु तने व सर्व कामान्मु यच्छति ॥ सर्व यरु मयी दान सर्व
 तीर्थ रुल्ले लहत् ॥ ५५ ॥ नुत दुर्त वनं ॥ ५६ ॥ कुवु न्ना विष्णु नाम या ॥ ५७ ॥ इतो हि तमिच्छु हि ॥ ५८ ॥ ईर्ष्ये वर्त मरुत् ॥ ५९ ॥ नान्ना ईर्ष्ये ग्रु विष्णु ॥ ६० ॥ म त रुत वात्यना ॥ ६१ ॥
 आदवा स्त्रे य दै नाग किन्नर मानवे ॥ ६२ ॥ अस्म न्ना ही स्त्रे ॥ ६३ ॥ हि सो र्ग्य स्य विरु द्य रुत वा न्यु रुसा ईले त्व मपि रुय यथा चिदा ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ वना दयि या प्राति सर्व
 काम सुखानि च ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ निल हत ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

नय ॥ १०१ ॥ ॥ १०२ ॥ ॥ १०३ ॥ ॥ १०४ ॥ ॥ १०५ ॥ ॥ १०६ ॥ ॥ १०७ ॥ ॥ १०८ ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ ११० ॥ ॥ १११ ॥ ॥ ११२ ॥ ॥ ११३ ॥ ॥ ११४ ॥ ॥ ११५ ॥ ॥ ११६ ॥ ॥ ११७ ॥ ॥ ११८ ॥ ॥ ११९ ॥ ॥ १२० ॥ ॥ १२१ ॥ ॥ १२२ ॥ ॥ १२३ ॥ ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ ॥ १२६ ॥ ॥ १२७ ॥ ॥ १२८ ॥ ॥ १२९ ॥ ॥ १३० ॥ ॥ १३१ ॥ ॥ १३२ ॥ ॥ १३३ ॥ ॥ १३४ ॥ ॥ १३५ ॥ ॥ १३६ ॥ ॥ १३७ ॥ ॥ १३८ ॥ ॥ १३९ ॥ ॥ १४० ॥ ॥ १४१ ॥ ॥ १४२ ॥ ॥ १४३ ॥ ॥ १४४ ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ १४६ ॥ ॥ १४७ ॥ ॥ १४८ ॥ ॥ १४९ ॥ ॥ १५० ॥ ॥ १५१ ॥ ॥ १५२ ॥ ॥ १५३ ॥ ॥ १५४ ॥ ॥ १५५ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥ ॥ १५८ ॥ ॥ १५९ ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६१ ॥ ॥ १६२ ॥ ॥ १६३ ॥ ॥ १६४ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६६ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६८ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १७० ॥ ॥ १७१ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७३ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७५ ॥ ॥ १७६ ॥ ॥ १७७ ॥ ॥ १७८ ॥ ॥ १७९ ॥ ॥ १८० ॥ ॥ १८१ ॥ ॥ १८२ ॥ ॥ १८३ ॥ ॥ १८४ ॥ ॥ १८५ ॥ ॥ १८६ ॥ ॥ १८७ ॥ ॥ १८८ ॥ ॥ १८९ ॥ ॥ १९० ॥ ॥ १९१ ॥ ॥ १९२ ॥ ॥ १९३ ॥ ॥ १९४ ॥ ॥ १९५ ॥ ॥ १९६ ॥ ॥ १९७ ॥ ॥ १९८ ॥ ॥ १९९ ॥ ॥ २०० ॥

[illegible]

वि ३

महा

ॐ शंखपुष्पनैवद्यं यथा विरुव विस्फुरेः । कंन्याकावाक्रणी-रुश्रियदक्षिणाय सशर्करेः ॥ स्वर्गनांतु वलिंद स्वातथा तमूयनादयत् ॥ १५४

[illegible]

१४

जितेकेसदाशुक्तसर्वदंस्तुसुजिता॥दिनान्धरुयनोनानु॥अर्नदयैउभक्ति॥यथासर्वगतादवीतदिष्वाक्य - एवता॥नानाहस्याकृतदधिद्व
उक्तनकान्ति॥वलिमेसर्वरुतखादभादिद्वनिवदयत्॥वज्रधानोनथाऊहाअष्टविंभाऊनायिवा॥सिंहकमुसमानार्थसर्वमंगलभादि॥व
दधनिमहामनुकालिकाचर्चिकायदं॥न्यस्यसिंहसदाध्यायद्याहर्णयवकल्पित॥नुवंतवभुसंवीतसर्वहनतारुचि॥दव्याधकासहान्यस्यभ
नामधिवित्यसत्॥वज्रविन्दुडाणीसामरुद्धिदिवोकभी॥धजदानमहादानसर्वदानोरुमन्मत्॥यावकादियतशुक्रधजप्राददमूर्द्धनी॥तावरुन
लहृत्सयासाददवलीक्षित॥अन्यधजसदाहृतानागगन्धर्वनादसा॥विडवकमहात्मानानानावाधकर्वतिव॥तस्मादवगृह्णातप्रयदन्न
यवतेशाउक्तिता॥किंकामायधजाःभक्तभामाहिता॥नहिचान्यधजानादोदुरुमहवतकृवि॥दानमिहवयवचदव्यादीयितयेवच॥अन्यनवि
धिनाशुक्रधर्जधमुनिवदयत्॥सर्वकामानवाधितिसननभिवर्तीवज्रत्॥तस्यदर्शनसंलयादधियायनतानना॥विमुक्तासर्वयायथादिवयान्ति

१०

या३
संभयं॥नास्त्वननविधिनादवीलोकनलीक्षित॥सखचक्रववहर्हंसवर्हितवानशेषासाचाहकिमारुवायधजयाहिंसमृचयत्॥नतः
स्यसंगनशुक्रयाधयानचवेनेता॥नचसधवर्तयिअहवेकुङ्कुजसमृचयात्॥॥॥लाद्यदव्यवतानधजदानाचुयविधि॥॥शुक्रउवाच॥सर्व
नायथादव्यामैष्टष्टवधजतदहं॥अमुमिच्छामित्वत्यसादाहुष्मलिन॥॥॥नउवाच॥॥॥अशुक्रयथायष्टोदव्या॥मार्गसुदल॥भमर्नस
वयायानासर्वकामरुलपुदं॥यैधृत्वाहवतविज्ञाव्यहृतचभिवास्वर्य॥यनायनविरागनुतदहंवचनकृवन्॥ऊययवनगगनदिनेकनकृतव
हमभिभहिसलिलवतिआत्मरुक्तिउगत्काननरुतामूर्हित्वकल्पितनमस्त॥ऊयसकलाधव्याधिनीअनादिइलदशुद्धिआत्मस्त॥आध
नावा॥नामनकतत्त्वार्थरयितीनमस्त॥यैऊनादविन्दुयितीयामयकालिकालविद्यानियतिभनाप्राप्राव्यकधियायमितिनमस्त॥आखगसः
हनदनरुधिनिजलधनतन्माचनिअनयधनाथसंभक्ति॥नचर्वधनिनतावात्ममावनिनमस्त॥ऊयनादाकव्याधिनिर्नदनादविमुक्ततदिनामान

१०

वि२

उममदवीतवयसादन॥ ॐ ह्रस्वमर्चयित्वा इर्गय ४ य ० विरुकिमान् नतकनतलगतनिर्विघ्नासिद्धिः स्यादिति तात स्या॥ ॐ वसुत्वा दमायतविप्रवा
 गङ्गनो गेनोदागिता॥ समन्वृद्धिन उच्चा म्ना वना कामा घर्षा कृत् ॥ पुन ४ ययातमष्टौ गे कर्तुं वसिद्धि लग्रवत् ॥ सकामाविविधायगभने निष्काम ४ येनम
 यनमम्य दं ॥ प्राप्नुयान्ना तु स दं द्वा वाक्कम तत्त्व वयने ॥ तत्त्वार्थ नूयिती दवी यस्मात् सा तु प्रकाशिता ॥ तस्मात्पु यन्न न ४ ॐ कृ यथित वसुदर्थि ही ४
 वदार्थ चिन्तन न विष्कृ नाय थित ईना ॥ बुद्धि एव सहा वैरु र्धन मरुता तथा ॥ दक्ष प्रजायति व्यास द वला सित रोग मे ४ ॥ वसिष्ठ एगुमा एव यल हृदि
 हिसलु मता ॥ नुत द व्या ४ यन तत्त्व सर्व एव प्रकाश कं ॥ यठ सा कु व धा कु क्त सर्व काम रु ल प्रदं ॥ विद्या धील ह त विद्या स्वरार्थि स्वरु र्धमं ॥ वन्धना मू
 च्यत वरुणा नाग प्रागी प्रम्यते ४ ॥ सर्वदान रु यस्मि र्थ यरु र्धम बा म्र यात् ॥ ॐ ह्रस्वा ध द व्या ता न इर्ग वाक्क सव ॥ ४ ५ ॥ ॥ वक्रो वा व ४ सवो
 निरुद यस्थानिर्म गलानि ४ ॥ इति च ४ ॥ ददती ॐ सिता लो कत न सा सर्व मंगला ॥ ४ ॥ हना वै नि ४ ॥ इति या द वी द इ ४ ॥ हन ४ ॥ हकाना मारु ह न धी मि

वर

१२

५३

कि।

५४ मका ४

गल्यां तत सा सृता ॥ णिवा सृ सं मा रव्या ता या गि ती मा द्वा यिनी ॥ णिवा यथा ऊ भ द वी ४ भवा ला क त त ४ सृता ॥ धर्मा दी न विनिता न्य स्यात्सर्व लो क प्र य क्ति
 ता द वी स मा रव्या ता सर्वार्थ ज्ञ सा धिनी ॥ विद्याग्नि ह य धा न प्र स न र्थ ४ न धा गत ४ ॥ स न न्या त न सा द वी प्र ना ल य प्रिय धत ॥ साम सूर्य न ला णी ति य
 स्य ने न्म नि अग्नी का ॥ त न सा पूर्वा व का द वी मु नि र्ही ४ य नि की र्ति ता ॥ आग्नि ना ड या द धा य न ४ ने र्जो ता हि मा ल य ॥ स र्व कृ न्द न्द व र्ध र्ण ज्ञ ता र्ण म नी ति स
 सृ ता ॥ ऊ ला म न्द्र य वा क्थ यो त् ४ म्द्र ४ य ना थ वा ॥ ना ना य नी स मा रव्या ता न न ना नी प्र कृ र्त्ता ॥ स्व व ला दि ह य इ र्ता त्रि ता त्रि य र्त्त क ४ ॥ द वा ४ दं या य
 सा त न इ र्ग य की र्ति ता ॥ कृ त्वा क्ति न ४ प्रा क ४ ॥ अ स्मा सा न ४ य क्ति म र्त्त ॥ आ न ना द ४ ना वा यि का ह्या य नी म ना व ४ ॥ नो ड नि धा न क र्मा ति क न धा न
 डी म ता ॥ वि धा व ती र्थ द वा र्थ र्हा धो ना म हा ह ॥ अ शायि त य सा वा सा त न सा वि न्ध वा सि नी ॥ ऊ य नी ऊ य ना रव्या ता अ जि ता न जि ता कृ ति ता ॥ वि डि ह य म
 ना मा नी दे र्ण ना र्ज म हा व ली ॥ वि कृ त न सा द वी लो क च य ना जि ता ॥ सिं हा न र्ध क न्या त नि रु ता म हि धा म या ॥ म हि र्ध त ता द वी क न्या वे सिं हा दि नी ॥ ३

या १

से १

ध १

13

५१२

和

[illegible]

१२४

५३

नि ३

۴۱

दुखदुःखेस्मृता २

[illegible]

२५

[illegible]

15

६५

取

कर्मदुर्दिवाकर्त॥ कविदुर्दयनलेन आदुर्विष्णुतथायना॥ कनकादुस्मितास्मानानात्थसुसुमारुमा॥ नृकासादुदृष्टान्निवासर्वविधरता॥ यथाउवच्यते
 वर्यविविधसूटिकामनि॥ तआयुधवसादवीनानाशब्दवन्द्यता॥ नृकाहस्तातथामययधकृत्ववावतिष्ठत॥ वर्तमानयनलवेवतथायुधवसादुमा॥ नरसय
 तिनंनोयंयातिस्वाहंतंयथा॥ नृमेरसंविशेषेण, तथागुणवशानुशिवा॥ यथाउच्येववशाद्यायुस्केदवीकाशःपृथक्भवत्॥ दुर्गाभवासुगंधोवीतः
 थागुलवंशजया॥ मथावागारुपत्योनि, नर्तमंरुक्नववृत्त॥ दक्षिणाहवनियादिद्रुकादिपुत्रपावसा॥ उक्तत्वेनपृथक्त्वेन, प्राक्कादवानिः
 दर्शनो॥ नस्मादुक्किमवाकार्या, सर्ववर्गपसिद्धयत्॥ देवायनुषसिद्धान्तःपवमात्सामहामत॥ एवादेवाश्चयद्वाच्य, सर्वस्वेवनसंगय॥ दद्याद्याप
 मिदंसर्व, जगत्कावचजंगम॥ ०॥ श्रीकृतपूकृतदवी, नृनयानात्मिकासदा॥ सर्वगुणकरीदवी, तनूरिर्नामहिम्नया॥ वृक्षसूर्यनथावायो, यान्त्रापु
 स्वर्गोवसर्वतः॥ नवविधायदवासा, समापूष्काविज्ञानता॥ नृडालिम्बलियस्तु, सनस्तामवलीयत, अर्धवदलियानाम, क्षत्तर्धनिगमैर्वन॥ स३४स्व

27

५३

[illegible][illegible]

निमयः प्रथिताहुवि॥ मनदवाः सवक्राया दिवी संस्काध्वबालिगाथा दहं स्तुर्न उपातली समयं सर्वदा तनी॥ तथा नरुयमायना मानयन्नागनागुनी॥ वृद्ध
 निविनयात्सर्वे लकु स्यादितकाविन॥ कनापायनदवानी स्वर्गवासा रुवद्विज॥ नवननयवलाव तददलपगृह्णती॥ त्वमवलाव वृद्धलाव दित॥ लकु
 नि स्या॥ धीकादधिनिमग्नाना परिपातारुवत्तना॥ एवंपृष्टाः सदेवेभ्यु गुर्व्ववनमववीत॥ ॥ वृहस्पतिनूवाचा॥ यदमं दानवः लकु नय
 रुवमवस॥ नलनरुयमायानि अजयः लकु नलयत्भा मृतः कपटमास्त्राय प्रार्थनीय कुर्मं यमि॥ दानासत्त्ववलायनः स्वकायमधिनिम
 पि॥ अतस्त्वस्य प्रदत्तया विष्णुमायानरुदधि॥ द्विज नृपधनारुत्वा सावनायवधायव॥ गुर्व्वणावादिमादवान नरुनिधनीयति॥ गमासर्वे
 ततः सन्ना यप्रदवाजनाईन॥ माधवनतदादवा दृष्टारुयसमाकला॥ क्रमार्थान्नमालायेः सर्वे न संकुतारुणी॥ सर्वपूजितासुवः सर्व किमा
 यागावदत्तना॥ ॥ देवाउद्युधवलनवलिनादव सर्वे वित्रासितावर्य॥ मयावीर्त्वं वरधनस्य नान्नायायारुवत्कवित॥ ॥ विष्णुनूवाचा॥ कना

नर

ना॥

मिरुवगामिष्टं किस्वलोवलसंप्रतः॥ मानुगकानयवलाव सर्वे लस्तार्थपांला॥ गूढमनुविवा नीत्या इमे ककुत निव्ययः॥ तस्यानाके योर्थक
 रुर्मं सुनसुनसलमा॥ पवेकारुवमवीया मसदलागुल्लिना॥ माहनीनामविख्याता माहं साकनृगरुणी॥ मताहं नस्य नागय सनामिपनम
 धर्मा॥ समित्वापनमाविष्टा द्विज नृपाजनाईन॥ मथ कापगुनलध्व वदंपठितुविस्मि॥ पविग्रहीरुतालस्य रवापयकावृजं ऊयन॥ य
 स्तार्थयाचना कस्य कनामिकथ्यतीमम॥ तदृष्टासूर्यमजारुं युकाविषेवृजत्तन॥ चलस्यरुनिष्यकि द्विजानिद्विजसलमा॥ हनकूटे न
 लालेल मिरुमदानवालम॥ सर्वरूपिमरुमायि वैवनायन दागनधा माहनीं यजमानरु विष्टावनमसिद्धिदा॥ विविगदनुनाजस्य पूर्नसै
 सर्वयुरोरुर्मी॥ प्राविशदव दवात्मा पठमानाजनाईन॥ दानवैतुपूर्वमन्यं हायसत्तंग्रहलम॥ दानं गत्वा सुवन्द्य कुर्यात्प्राधायः
 नमदा॥ दानयालावदत्य वैष्टावदधर्निगुरु॥ धर्नलिनत्वमत्वं तददामिया वातायतुवा॥ इष्टं दानं द्विजः प्रहृष्टः दत्तं रुद्रमहामत॥ नना

केदर्शनदासदीयर्गदन्सुलमा॥ तदासपूर्वमादिष्टप्रयथायत्नं नृपं॥ बलीनेवलसम्पत्तं दानवैरुनमर्दकं॥ दानायतकर्तुं दृष्ट्वा पु
 ण्यवराधनं॥ किमायागोरुवांशप्रकार्यविप्रतदुद्दिष्टं॥ माहर्निरुपमानस्तु वदतद्विजकं वशं॥ ॥ वाक्कणउवाच॥ श्रुदं सर्वप्रथितो देव
 विद्विर्माकस्यपात्मर्जं॥ यद्दृष्टं सन्देहसमाख्युः प्रविशितसूनाधिया॥ तस्य निष्पादनार्थं स्वामिनाहं गवान्निर्दिष्टं॥ दानं यदि यतीनाञ्जन् सि
 द्धयश्च न तन्मर्त्यं॥ ॥ बलउवाच॥ यत्नं सर्वसिद्ध्यगयद्वा दवाल्वादिजातम॥ तद्याच यत्नं दानान् शिवश्रमात्मादयामिग॥ ॥ वाक्क
 नउवाच॥ यत्नं सर्वसिद्ध्यगयद्वा दवानामसूनाधिया॥ तद्ययं तस्य आदिष्टं सत्यमागवयानमि॥ ॥ बलउवाच॥ यावन्मीमनकार्यं स
 त्वविप्रवदामिग॥ सर्वस्वमाहर्निविद्यो वदतद्विजकं सलम॥ ॥ वाक्कणउवाच॥ नमधननदानैर्वा नकुप्यामजवाकिरी॥ नन्तेऽकार्यं म
 हावाहं दबयद्दसूनाधिया॥ यत्ननिष्पाद्यतयद्दं सर्वदेवदिबोक्सी॥ तमहं याचमिती॥ दीयर्गो तद्वर्तनत॥ एतस्माद्यं मम रुड मधिनीयवि

या॥

गां३

पृ३

यतशादवार्थं नवकार्यनसिद्ध्यगुमखारुमभागदादलातनुस्तनदानवनमहात्मना॥ विष्णुनापि स्वचक्रणालिनस्यरिहताऽसुन॥ पाकृते द
 रुमुत्तुङ्गदिव्याकायस्त्ररुदा॥ तस्यावयवसंज्ञाना वक्तुं शानलजानय॥ लावरावयवतज्जिही पद्मनागानि वारुवन्॥ विबुधपाशदानेन ४
 कार्यं नत्ताकर्तुं वन्त॥ एवं धामिगुक्तविद्या - मनुवननचा॥ माहयित्वा तु विद्याया तुवना सुलसुगन॥ तस्माद्विद्यावर्तं सर्वं दुष्टं हंसिदि
 दायकं॥ समीरुकिनाविप्रमनेशिनरुलंपदं॥ अथ देवगतस्वर्गं सुनस्तस्य महावल॥ सुवल॥ सागवापान्ना दृष्ट्वा दायकसुक॥ सकुः
 द्वादवनाजस्य वधायवधकांक्षया॥ दिव्यं नर्थे वने गृह्य मना गमि सदसुगं॥ पदसुद समापनं वदन् ममुसमाकृतं॥ कामदेव सर्वगपूनीत्र
 पुधर्वमहावली॥ सानर्थिवदन्नामुहं यद्वतामुविजानदा॥ अथानिर्दुष्टं यादवेऽसानर्थिसोवलाहवन्॥ पदेन द्वापदामायाऽसमाध्यामशिसरुम
 ४॥ नृकिदेव्याधिपाननादमुष्यक्षामहावल॥ यत्नविष्णुसुनन्दस्य वदन्नासंगवजित॥ नजित॥ सुसनेऽसन्देर्वृक्षविष्णुसनागमे॥ अथर्तदः

नृनाऊतुं पित्रिवेगानलाहवतु॥ न काल होतान्दवान् हागीव कालनामला॥ यंयं पश्यति देह्यन्त्यन्त्य पावकवर्षं॥ तीगमर्हदवत्कुहपह
 नृद्वंवाहूया॥ एवमदानवोर्देवा वदुधामथकीक्षिणि॥ दृष्ट्वावपीठितासर्वं नृनायदाननैगता॥ यावत्समार्जकृत्वागत्र कविप्रुपुर्नदना
 ॥ समागतसुदातो न्याः ॥ एवलावलगविना॥ दृष्ट्वाघटकनाकचित् कविनीलिगधाविगधागनचापकनाच्यान्यवदुधकृदाविगधाग
 नधिगतवकीच सुदुधधीधनापन॥ वृक्षादिपट्टिगवगुलुनिनककवीपन॥ धनयकामहावाकृगगर्हिहासुगमनिन॥ दनृजासुसुनास्त
 र्धन॥ कथयनासुदाहव॥ नृथरुग्नासुदाहृष्ट देवादिवपतिर्महान॥ उदयादिं समनिक गजनाजं सुखविता॥ सिन्दुना नगनागर्हो घट्टावा
 मनमलितुं॥ वदुर्दसंस्वनूपाद्यं महावर्ममहावली॥ गजादनृजसेनस्य कालसर्पवृवारुवतु॥ नृथतगुक्तिविन्द दृष्ट्वा कालामहाकली॥ नमनाजं
 समानुक्त दिक्ककिं यथावयत्॥ नृदृष्ट्वा महिषधर्मा दधुयाविं महावल॥ नानृद्विगुपेव्य कलकगुप्तमचित्॥ कृताकनि सूनावजदधु

८२

एवमहावलगावर्षदुनेमतिर्मेष पुनृषवतथात्मज॥ खड्गपालिस्मनकोरुकुषौदेर्हैश्चनपरा॥ वदुसेन्यासुमादाय वृन्तसेन्यासमागताभावा
 नृलोवानुलीयाथे मययध्यागधाविग॥ कपूसानसमादाय र्मकालनसमीनग॥ विमानकापगयकागदादिधमहावल॥ कुवनायक काठि
 हीवृत्तसुगसमागत॥ नृदात्वैगानयूर्वात्य वृधमासूलपालिन॥ आदित्यानथग॥ सर्वे विस्विदवासवाहना॥ नृत्विनीवासुगेतप
 नागयका महवना॥ नरुगावदुनूयात्य सिद्धाविद्याधनादय॥ काविप्रुसुदासुस्थो सेनगुफीसनारुमे॥ महावृववृवानसु मयादानम
 माचस॥ सनारुसुगर्गया नालमायुत्रिनदिगनना॥ काद्यवृदायुगासंख्यापद्यपप्रमानिना॥ नृसंख्यातामहावाहो सनागप्रसुनारुमा॥ दृष्ट्वा
 गुसवलावालेन सुवर्षतमेघवतु॥ समनाछदयीत्वा नृ पावृण्य वृकमृहि॥ ननादधनूनावलवाययानरवननवा॥ नृथनादीनदाश्रुता वासन
 रुयकानकी॥ शकिंदीफीसमद्यम दानवान्मर्दयनूविरी॥ वृक्किनाममहादेया नतान॥ सीवलवल॥ कलनस्यनर्थवायदीकगूलाम

हावल ॥ नाना यद्महासंघ काल ताकृमि नान ल ॥ सुलं कृता नन पृष्ठां सुन से न्य रुय पद ॥ ने लु ले पाद की सुनी व द्रुध रुय गामिनी ॥ दृष्टा किं सुदी
 को ३ सु विरुपास नारु मे ॥ ना सुग जाम हावली सु र्या मृग म प्र र्ण ॥ विविध निनिने वी ले दंदा रुवरु पानि वत् ॥ ए न ३ सु नाय माना पि न निवा य ३
 यदा सुन ॥ तदा लीली विना लय एक ३ सुदि यदान व ॥ अथ लेल ह ३ दृष्टा किं द व सु र वा ल म ॥ तिनी म द न घात न रु त्वा देख निघा ल म ॥ ए कि
 काद्या मु ३ देख विग ना स न र था प मि ॥ नू किं दृष्टा ह न र वा म ल नान रु य भा व म ॥ ॥ ए ख ३ उ वा व ॥ कृता न न म हा वा हा या ग दो न व वा दृ ति ३
 ॥ अ न्य थ न वि ला रु न र्म ग म न व का स्ति ति ॥ बा ३ ए कि ३ ए लि ना द रु द रु ना सो न रु व नी ॥ सा न मृ य व ला दृ दृ त व पा ल स र्व प्र मि ॥ प न्य सु
 व य थ ला रु काम काना व वा स न ॥ त नु र्व ला कि ग ल कि दृ सै दि स्का न मि थ ति ॥ अ थ रु ली सु दा का ल ए र व बा या नि ला मि न ॥ ई द रि दान वः
 डा ३ से न्य म थ स स न ३ ॥ किं वा के ३ ति रु रि सु ली प्र मा दा दि व ला व न ॥ वे नि ली र्या न ना र्म व व ली न कि रु वा न व न ॥ रु व रु न थ ग वि न्दः

ल कृ वा ल गु ह रु ग था अ न्य थ वि रु ले ये न उ न्म रु लि तु व छि र्ने ॥ आ र्म या दं नि ३ ए र्व ख न र्थ स म न दृ स थ ॥ उ न्म या रि म् र्वा व रु लि र्म गृ क बा र्म ॥ ॥ लूः
 ली लू ली ल मा का र्म सु र्वा य ध नि वा न र्ण ॥ म मा व स ३ उ न्म या ३ उ न्म पि रु लि ता ए र्नि ॥ लू ला रि या नि ए रु प्रा स र्वा स न रु य क र्म ॥ न न्म जा हा लि ता मिः
 उं लू ल रि न्ने दि धा क र्म ॥ रु मो प पा त वि रु ली ए र्म नी व शि व रु र्म ॥ व ड रु त न थ ये न्द रु रु स्य ति म रु म र्म ॥ ए म थ न्द ए न र्ण ज म् र्म ह्री त्वा सु न ना दूः
 न दा ॥ व ला रु न रु या ए र्व सु व ल रु व रु गु ल ॥ स र्वा र्वा दं दि र्ना थ क ना या य न सा म्म र्म ॥ य स्य व र्ज न व जा य द रुं द रु म य न प्र रु ॥ वि रु ली दे
 व से न न सा य ध ग रु वा रु र्म ॥ त स्या र्म ये क र्थ र्म र्वा व श या थ म मा य व ॥ क थ य स स न ए र्व स न ए म ग त व ल ल ॥ द वा ३ स वा स वा ३ स र्व न रु नी या म हा रु वे
 ॥ स व ली व ल र्म प र्म न थ पा व स म कि र्म ॥ दृ ३ स र्म स र्म रु स्य दृ स व स्य वि सा व म ॥ उ व म कृ ता न थ म रु वि न ना म पि ना म रु ॥ उ वा व र्म सु र्वा वा र्म ना व वा नि पूः
 ना ल क ॥ ॥ गी वि म् न्वा व ॥ या सा या पा ना कि ए र्क नी म नु स म ॥ प द व लू वि रु र्म न सा न रु मा य वा स व ॥ रु वि षा नि न र्म द रु म हा ग त्वा म रु रु ना

॥६५॥
॥६३॥

ननु न तावयित्वा तु. सामयामदमालिनि॥ विशासकसमायुक्ता. रुमाकमायवानम॥ दानवावलसंयुक्ता. विशामनुवलनवशा. मदि यातिवर्षकः
हर्मन्यथासोजयोरुवत॥ तदाविष्णुः सननुस्य वृहस्पतिमनुद्रु. लो॥ गत्वा एतं समायाध. अस्मान्मवर्षेपिन॥ अयत्वं अयतां. एषयाश्चमनुतः
नर्मय॥ गुहाहिनगुलत्वाच्च. अगन्तुपा लयास्ति नशा. गहिमान्दानवानीक. महानवगर्भिनी॥ सस्रनगलमादि. लैवसंवात्थीनलाकयन॥ एतन्निविः
आयजगतः कर्मकनृपिणुलिन॥ उर्वगद्गदयावाचा. विहापमधुसूदन॥ गुणाविबतदावासी. सामसीनार्ह. एषन॥ वनवयय॥ एषययहृदिवव
स्तिनी॥ यमाचमाधवाहृष्ट॥ सुवर्षेदुर्लभं विषं॥ तावत्संविद्धमंदया. पूर्वसायकनामया॥ विशानूषनरुन्मया. नायधनासनाधमथा. उर्वसायौवनं नृपः
न्यक्तुवृद्धारुवरुदा॥ निनाजालावर्षेनदा. निर्मासाकाटवद॥ पुविनलेवदावोष्टे. विकल्मनागवन्धना॥ मृडालं कृतकत्वा. वामानकनसंस्तिः
ना॥ पीठसंस्तनयान्धन. विषादयनमस्तिना॥ विवृतास्यासकम्पनि. सनायसगमयय॥ विशास्तिनश्चास्तिमायागुगुफागुका. रीः सास्तिना॥ पथपर्वन

६३

नाजस्य. दालस्यसमहात्मन॥ कौशुद्विपेमहादिप. म. सौमधसंस्तिना॥ विशासकं ततः रुस्या. दि. लोत्थविदि. लोत्थथा॥ वृषसिंहगजावाजि. हंससर्पा
भिगापना॥ गवलेमरुनाजव. सन्निविष्टामहावला॥ रुषुसानगविमान. वसनाजस्तिनापना॥ साविद्यालतधरुत्वा. कुलवायसदादिना॥ यनिशा
यदवात्मी. मर्षलाकनृपादिषु॥ अमन्दीषुविनाषण. पुलिन्दुलवलादिषु॥ लाकारुनलमार्गण. वामावाजलसिद्धिदा॥ वस्या. सुगपवालासू. अश्रुः
गरुसंषुव॥ पी० हिमवतः सत्य. जार्व. चनसुवदिशि॥ महादयवमनुच. नाययां कासलपुन॥ वानदालसका मारु. किस्कि. श्वन. एतन्मलयाका
लनामित्रका. या. रुहसिनापुन॥ उरूपिन्या. रुनाविद्याविनाषणववस्तिना॥ पुनिष्टानस्तिनागुक्. नृपाउर्ध्वकसिका॥ दृष्टा. की. उकितावाले. वीलनं
उषुज्जुकाशा. अश्रुवागुरुनाजस्य. सखायन्वयवस्तिना॥ उर्वनायापयित्वा. विदुलिकानममन॥ सुवलस्यवधार्थयस्तिना. जारुत्यना. पथ॥ सुव
लापिनदावकुल. नरुन. अगुनावला॥ दालादिं वासवैरुनु. लनयावनवाहनी॥ मरुन. एतन्मलयादन. वायनावनवाचनं॥ वृजि. विज्ञातपेयं. नादि

॥८४॥

तदादिनैतथा॥ अथतस्मिन्पथस्थित्वा नृणां पवित्राणां वलां॥ ज्ञातृत्वं संस्मृतां मार्गं दिष्ट्वा निवसस्व वै॥ तदा दानवनेनाया वदतस्य कृतां पथं॥ मृत्युं ध्या-
नथ नारगे स्तुतुं दक्षं मे न स्मृत्वा सि॥ अथ वृक्षाव च वृक्षं दानवनं पुरा विना॥ वदनं सान्नाथा कृत्वा दानवनं शुक्लमिना॥ त्रयी उयन्मयन्नं नृन्मृत्युं ध्याना न गुरुं न व-
॥ अक्षं मे रुवतत श्रीं यामां वृक्षा नमन्यत॥ तदा दानवनं ताना गृहि त्वा मां कनकिल॥ उत्सृज्य पाशं नासृष्टं पपाय नृनिगल॥ न तावन्निह तं दृष्ट्वा लोका मासृष्टं म-
॥ अथावत तदा दद्याध्वं नृणां निपातिता॥ तदा तु स वलं कृत्वा दानं वीक्ष्य न किली॥ मृज्जानि तावत्पतिनं सृष्टिं ते विगता सवशा॥ न वक्तव्यं न वा स्मृत्वा निना-
हर निपातिनीन्॥ पश्यन्मि मन्ता दृष्ट्वा स्तुतुं कृत्वा पितामहं॥ रूताया आस्मि ता देया गुला नि स नृणां किरुतु॥ घृष्टा उमन्तु निवनं कारि व वा दत-
अनरुणी रौ ह्मो दृष्ट्वा इन्दु र्बल दार्यं तभा माधवस्य वधार्थं य विपथं न बुद्धं किली॥ तावद्वी म हलक्ष्मीं महा विद्या सना निहा॥ निहत्वा दनं मां को दन्द-
रिं मे निपात्य सा॥ कपा नै नृभिर्न कृत्वा पथं काया नमहा ग्रहान् शिवा र्थां तर्प्य यां देवी मीप्सी तार्थं लपदं॥ एवमा न्या न वा कृत्वा महा वलयना क्रमान्॥ अ-

54

वयं सर्वदेवानां वासवक्षमदारुयन् ॥ क्षमदवषसादवीक्ष्वादेत्यपतठक्षमं ॥ क्षमकर्त्रीसेवनाका पूष्णलाकरुविषाति ॥ नूननेव शुभूपल विद्याष्टकसमन्विता ॥ यका
वानगनाक्षुष्कपूजितास्त्वपिनागुरा ॥ प्राणादपठकुम्भवा पूष्णकक्षलवक्षिमा ॥ निष्कृष्टायुजयन्क्षमां सर्वकामरुतप्रदी ॥ दमंनिपदमालावलीधातावक्ष्णानना ॥
त्र्यपुण्यक्षीनदद्या पूजयत्सम्पदाहता ॥ एतारिष्ठस्त्वपनंकार्यं लिवागनलवाकली ॥ कन्यासंस्कृदिजसूर्य रुवनसर्वकामदं ॥ यतादवीरुवदृष्टा पितनावृद्धनूपिनाथा
पितृगणुवर्गोत्तमा त्स्त्वपितयाधुरार्थिली ॥ रुमादिमनिनत्तानि दर्वीवादिस्थस्त्वपनि ॥ पञ्चानि विप्रवस्तुनि कर्त्तानाग्रहादिषु ॥ सगनकावयदर्वं सूर्यसन्निवतन ॥ आ
त्मानंदानसर्वसं सर्वदद्यात्कुस्त्वपका ॥ यतसंस्तानादनलानाचक्ष्णकागुर्नविना ॥ त्रुतादवीवदृष्टया गुनर्मनुप्रदायक ॥ स्त्वपकारुनवादीनां यारुवद्विजसूरुमथा
सगुनर्मनुसिद्धाना वलासर्वजगद्धित ॥ गुरुनासलाकानां देवानां स्त्वपनरित ॥ विषयवलियूजादि वलादवीनिवदक ॥ धारुरुमलवर्गनल मत्स्यमांससना
दिरिता ॥ दवीस्त्वपनंलसं रुयदंरुवलयथा ॥ विद्यतादनां विप्रतर्जनीयागुनाजसा ॥ नाममागमसायूजा सहस्रनहसात्तुका मनुमुपदमालाथीनक्षमासां प

॥ द.पू.॥

॥८३॥

[illegible]

॥८३॥

मन्दूकी-चर

सु

६१

युद्धं ज्ञानं कर्म महां तमना ॥ आनाथं गवद्विष्णुं द्वादशार्यो महावने ॥ कुरुगवने नर्मो मार्गा येन रूयश्चिमे ॥ नापि नावा सदा बहु सर्वदेव वसेषिणा ॥ गन रु
स्य वनाद रुक्म वधर्ममिहा सन ॥ साहाय्यं संगनान कनिष्ठा निममा रुया ॥ सनदा विष्णु नादना लुच सुपुम हारै ॥ सनादिना मिधर्मा रवी सवध न्यो वलै धेय
ना ॥ उर्वनस्य सनादना महां धर्मा सह सवान् ॥ सवका हृदमादाय इहिनस्य विना सनै ॥ गनवान्य गपद सु उक्त निष्ठु मि सासन धान डा ना धान मुक्ता सा रुक्मा वः
मिरु लार्थिन ॥ नन रुक्म मरुयुद्ध मरुवचन दीनती ॥ सनदानी तदा गस्मिन् सनासन जिघांसया ॥ नावस्ये नदन मानूढ मयसन महासनै ॥ दृष्ट्वा महावली तात दवी
वक्ष्म विनिना ॥ रुर्वपन ममा स्थाय सर्वदेव नमस्तुती ॥ आगना कलमायन उग्रसन वसेषिणि ॥ विनियुक्ता उर्म पूष वधाय दनै स्था ॥ मुर्तुर्मपि उयिदवि उग्रसन
विसेषिणि ॥ विनियुक्ता उर्म पूषे स्थनायकी ॥ नन रुक्म पिप्लु तै दृष्ट्वा उग्रसन नदानव ॥ उन्नाय प्रवर्षा लकिं यमदनु समा प्रली ॥ उन्नायि वज्रना नावे वदु धार्थ्यना
उयता ॥ उग्रसन रुक्मा कृद्ध उन्नाय वज्रना ययता ॥ स्वर्ग रुक्म दाव उ गजापनि निषलुवान् ॥ दवी दृष्ट्वा तथा वदु मूर्ध्नि वल विहली ॥ उग्रसनस्य संहो म्ना नया रु

॥६५॥
॥६५॥

प्रमूकवान् ॥ तनाहृतसुदाउग्रो दक्षमानः सस्यन्दनः ॥ वान् ॥ प्रमया मास समथ कलनापहं ॥ वायवीं प्राक्षिप्य द्रवी तदा वान् ॥ लभकथा ॥ विक्षिप्य मघर्षं
घातं रुमपादप रूधर्ण ॥ वृषान् रुमदादर्व पात्तं कलनायनं ॥ वसूयित्वा उतर्गार्गं महावलपनाक्रमं ॥ उग्रसनवर्तं हत्वा सवपात्तन पात्तिगश ॥ मृस्य
लनागर्गं कृत्वा हत्वा चागो निपातिता ॥ ॥ इति दवीपना ॥ पयैला कस्य दय उग्रसनवधशा ॥ ५० ॥ ॥ सोत्तक उवाच ॥ उग्रसन हतनात किं सकृर्था महा
सनः ॥ कृष्णधर्मा महाबाहो नम बुद्धि महामन ॥ ॥ मनून्वाव ॥ हतवाग्रे तथा कृष्णः कृष्णधर्मा महासनः ॥ बालमहाहववकु ब्रह्मन्त्रयदिन कस ॥ ३
वैसतजयित्वा दुदवी वकुलगा उयन् ॥ सिंह पक्षु परिहृत्वा पनदवी चगा उयन् ॥ दविकृष्णार्गदावत्स कृष्णवज्रलगा उयन् ॥ नदाद्रुत समाधाव दद्यादपु
कनायकः ॥ आयातं वीजने देवि पर्यवाहिर्य मसादनं ॥ प्रमया मास संक्रुदा तदा कृष्णस्य सानधि ॥ हतकृष्ण तथा भान कृष्णधर्मा महावलः ॥ पादस्तु चक्रमादा
॥ यदद्यात्संमखापयो ॥ आयातं नमहावाहं सर्वेऽसन्नतपर्वहि ॥ विद्वाद्दिनिनरुस्य चक्रघाननयातयन् ॥ नवैक कृष्णधर्मा महावलपनाक्रमं ॥ सैग

॥६५॥

॥६५॥
॥६५॥

मनिहर्गवत्स वक्रन्डोपाविनक्तिता ॥ ॥ इत्याद्य कृष्णधर्मवधः ॥ ॥ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ वक्रन्डोपाविनक्तिता ॥ दवा सुखा सुदादवी प्र
जयी वागीश्वर्ययन ॥ त्वंदवीपविनक्तिता ॥ आयातं रुमदादर्व पात्तं कलनायनं ॥ वसूयित्वा उतर्गार्गं महावलपनाक्रमं ॥ उग्रसनवर्तं हत्वा सवपात्तन पात्तिगश ॥ मृस्य
लनागर्गं कृत्वा हत्वा चागो निपातिता ॥ ॥ इति दवीपना ॥ पयैला कस्य दय उग्रसनवधशा ॥ ५० ॥ ॥ सोत्तक उवाच ॥ उग्रसन हतनात किं सकृर्था महा
सनः ॥ कृष्णधर्मा महाबाहो नम बुद्धि महामन ॥ ॥ मनून्वाव ॥ हतवाग्रे तथा कृष्णः कृष्णधर्मा महासनः ॥ बालमहाहववकु ब्रह्मन्त्रयदिन कस ॥ ३
वैसतजयित्वा दुदवी वकुलगा उयन् ॥ सिंह पक्षु परिहृत्वा पनदवी चगा उयन् ॥ दविकृष्णार्गदावत्स कृष्णवज्रलगा उयन् ॥ नदाद्रुत समाधाव दद्यादपु
कनायकः ॥ आयातं वीजने देवि पर्यवाहिर्य मसादनं ॥ प्रमया मास संक्रुदा तदा कृष्णस्य सानधि ॥ हतकृष्ण तथा भान कृष्णधर्मा महावलः ॥ पादस्तु चक्रमादा
॥ यदद्यात्संमखापयो ॥ आयातं नमहावाहं सर्वेऽसन्नतपर्वहि ॥ विद्वाद्दिनिनरुस्य चक्रघाननयातयन् ॥ नवैक कृष्णधर्मा महावलपनाक्रमं ॥ सैग

पद॥
॥८॥

वीमहाकाशितिविभ्रता॥पनाऊसुकनाथस्यवक्रिरुगगनामून॥रुडकालीतिविख्यातामहालंदिविस्मृता॥यप्रसासाभिगाविद्यापदमार्त्तपिनाजि
नामृत्पुंजयागथावाच्यानाह्मकशयपापवान॥नाजोऊहामहावाहासाविद्यासेवीवईकयशाविनासयेन्महामृत्पुंमपमृत्पुंनसीसय॥कलकलीयदाः
वन्डागकगेनविमं॥नदाविद्यांऊयडासोदिवावन्दुविवर्द्धता॥जनामृत्पुंरुयैधानेवप्रहृष्टादियागका॥हामनसानसंदहाविद्याऊकामहासून॥
॥८॥शयदवद्यामानस्सनपसै॥अशा॥॥लोभनकउवावहाकथविद्याउसापाफानन्दीनामृषवाहर्गालुहतागसामानन्दिसकाहाम॥अमत्सर्व
यथाचार्यकथयस्वमहामूने॥॥मननवाच॥महादेवमृदंधूनेरुत्वादवनविष्णुना॥दत्तापनाजिगावन्दुमनवन्दुवृक्षयु॥कमात्यून
वीयाफीयावत्याह्युसमादयः॥नथासैकिर्हिनालाकसर्वकामप्रसाधिका॥पदमालामहावाहाधामयदप्रकाशिता॥पृष्ठायांमृत्पुंनासायन
न्दिनामृत्पुंरामून॥दलाविद्यामहावाहामननामस्याकिर्हिना॥अमनैर्यनागनार्थनमनऊफामहामून॥ऊनपूर्वजिगादवावकाद्यावद

॥८॥

घा३

पुनः३

वा५

रा॥

भायूधि॥सत्तापकालिकाकुडाविघ्नगत्यवधेपिदी॥महासुनसूनगाह्यथाहविघ्नवाहिनी॥वाधासविघ्नकायनतदात्वेपुनार्हता॥नामकायसमूहोव
जोदार्हगमिख्यासि॥नर्वपूर्वससांपनअमय॥सापितासून॥ऊटाईपर्वगत्वाचवानदसुर्वगप॥रुत्तामूलकलाहानपधूसिअथवाचप॥अपहाम
क्रियासकाकसेवानाभनेनत॥नोहिन्यवगहमिष्ट॥समचिरुसमाधिग॥चवाननपसादवान्प्ररुताये॥समूहान्॥कायैवैसासाहस्थयरुवउछे
ऊनोऊनार्दनभाऊऊयत्वेमहावाहादसौसूनरुयैकरी॥रुविष्णुतिनसंदहानासैवृहप्रक्रियासि॥पर्वपिंनकमाहूनेरिवागत्वासेनीसमाधिया॥नयाह
वीत्तयावत्सखदुर्गिलरुगवानक॥नर्वपूर्वमहावाहातेपसासूनान्॥विजिण्यकिउतगातपृथीसवनकाननी॥दिजान्दवान्पिरुजित्वाअविन्म
रयानरुडवता॥पनिअममृवाकामेपिदालेनपिवाधिता॥दणुकेवनमासाईयउदवागजानन॥नामनिप्रसक्ततात्मावृहगत्वविभा नद॥अमुग्रामप
हामावनिसेर्गदालपूर्वका॥नत्रगत्वामहावाहासुमर्गिपुत्ययावत॥नगत्वाहिनर्दवीगजवकुप्रियासदा॥नदाकुदपनगुरु॥अपवनवलनवथा

॥६५॥
॥८८॥

विमिर्योसुसंनष्टा गजवकुलं नमः ॥ नाम उवाच ॥ स्त्रीयनामसुनप्रसूता मया यस्माद्यवः ॥ मया धाम्ना गवक्षः पर्युषितं निष्कलितं ॥ नाम वाक्
लवा विदं अमायामन्युना नदा ॥ ममावसहसा वाभनः प्रावृषीव द्युना कली ॥ तस्य बाले घना विदं ककरुर्न नलस्य ॥ नीहानलनली कननिष्कलित
८८५ ॥ तनसुं वा जत मसाः कुर्वेदस्य गजाननः ॥ समर्पितं दत्त्वा कुमाद्वै हानि निर्ममः ॥ कक्षपक्षी तनस्य दत्तुं रागसमं पुलं संहान कृतावुहा ॥ सफ
प्राका कमादिमा ॥ प्रहनादं संसुः ॥ धनाया ललकृषिकः ॥ पुनिष्टसु पुनिष्टस्य संजया विजय सुथा ॥ स्थूलकः ॥ विष्णु लव विष्णु रुद्र सचमू मूरवः ॥ मयसु
वीकनलयाः दूर्जपक्ष गथपवः ॥ रागा गमपसकटा मकनाथ पतनकः ॥ मनुससर्वतारुद्राः दध्दव्यवृत्तं पूतः ॥ समवविगमचैर्विंशं मरुतो तीर्थग
मपजा हलः ॥ मनापः पृथवायश्च कावुः ॥ एव वला वली ॥ तस्मिन् गजाननस्तान् सपर्णकास्तु राजानान् ॥ मुर्यसंखवायमानः कृत्वा यद्दं समस्तहः ॥ अमया पितदा क
८८६ ॥ क्रमाद्युहान्वया वसः ॥ पुनिष्टुहैर्यथा मार्ग्याव नुलैः स मायिका ॥ यवहास्वावतावुहाः सनिष्टदनिगदिनः ॥ वदुः ॥ वयावुहः रिघमानः सुना निष्कलितः ॥

६५

२२

रामसेहारासर्नसु कृमिपुलिः सन्निवारयत् ॥ तदामयः सुसंकुदः लना न्युमिलने हरुनत् ॥ हित्वा सना सुर्ननाम पर्युषितं विद्याधपक्ष निष्कलितं ॥ एनेव कुलमाका नेदल
रिक्ता उयच्छिवः ॥ तदा लना हर्मनामः दृष्ट्वा पार्श्वमीनन्दनः ॥ महा मघनिनादनः ममावदानुर्णमर्नः ॥ विद्युत्पूर्वमहा वार्वः मनुधनि समाकली ॥ त्रिलिङ्ग नदः
वाना वि लिलिदं नली कली ॥ केवा कल सुदाधुर्वा वातकं कुप्रवर्कः ॥ नीललाहि तमध्यान् गवलरुसमः ८८७ ॥ दयकादिगः सर्वाः पुनयको धाम्ना
रिः ॥ पाः ॥ शतकर्न धान ममापनिययातः ॥ नयना गखपादार्तं हन्यमानं सुभ्रं ॥ नसंख्या विद्युतनाम घातमानस्य दानवान् ॥ तदामयः सुसंकुः
दावाय चामुचि क्रयत् ॥ लनं गवथमानुर्ण संपताका धजा कली ॥ नर्मडिलिखे वात्वा त रुग्ण प्राणदना वली ॥ वानुर्णना लया मासु जला सुपवन
सुदा ॥ तदानाभन कुदने आग्नयं चिकीर्तनं ॥ पिशाकं च्छुगमानुर्ण सफजिदं रुयानकं ॥ लकिरुर्कमहा उयं कालाग्नि समराज संहर्कदान
विंसनाः रुसि कुर्वे वनाचरं ॥ तदा दानवनाथन युर्कना नायनं लनं ॥ रीखवर्कं गदा रुर्कं स्वगेषुष्टवृक्षिनी ॥ तदा लीकी सुना जम्भुः सुनना मानिया नि

८४

६५

॥८०॥

॥ ८॥

॥८॥ तदा विमुक्तयममावासाः श्रुत्वा नैव संहरति ॥ श्रुत्वा सर्वं यथा विमुक्तयः कदाचन ॥ दिव्यानां संहतिश्चास्य नाम प्राप्ते वसंतं दत्तं ॥ गदानामपि कुक्षे न व
॥९॥ कास्तु प्रसिद्धानां ॥ नाना यनैव धर्मा य विनिर्गन्तु नाननं ॥ मृजमखल दण्डः श्रावदं कृतांजिनी ॥ दुःकानां ववदुर्लभं आगत्य पुनरुत्थिनी ॥ गदारु यमः
रुदासि देवस्य वसनस्य वधः ॥ अमोघ दिव्य वपुः श्रुत्वा सर्वं महावत् ॥ दिव्याः प्रवृत्त विष्णुः कथं महा निबर्थकः ॥ श्रुत्वा नाथ कान्तं सुखं स्वस्थानं वज्रं नि
॥१०॥ ततः पृथुः सर्वं नृपः दृष्ट्वा सुवृत्त विष्णुः ॥ गजाननापि सर्वं विष्णुः यत्कृत्या सुपतं लनं ॥ महा नृपं महा मायं यमकाग्निं समपहं ॥ पञ्चवक्त्रं महा धनं दत्तं व
कुत्रिलोचनं ॥ सौम्यं धारं सदा नास्य मूर्ध्नि कलं रथात्कटं ॥ ऊढालं नृपं गमहि धनमानं निवात्मजं ॥ वलविनास घट्टवः उमन्कनालं सैकुली ॥ दि
वानावरुया क्रोसि गृध्रकायं सवस्त्रिनी ॥ उल्कादं पुङ्गवः कालं ॥ गमहि धनमानं निवात्मजं ॥ वलविनास घट्टवः उमन्कनालं सैकुली ॥ दि
लखद्वीगं धनिनी ॥ प्रसिमानं समसुदं येलाकुं सवनावनी ॥ पुनता विघ्ननाथस्य ललिहानं यवस्त्रिनी ॥ वदनातरुयन्कीना यनाहं स्मनिगः स्वया ॥ कनवा

LC 11

कस्यानामयत्नयातमर्दिनयः॥ उर्वर्तयूजयित्वा तु अरुयापनिभाविती॥ गदासेन र्दमानसु रीत्वा दानववाहिनी॥ विदार्य वक्रविष्णु मध्यगत्वा विदा
र्यवधा दानवान् र्दमानवक्रकाटिधा वक्रधामहत्॥ कृतान् र्दानवानान् अस्त्राभीशु र्दनतदा॥ अमर्यं धातयित्वा तु आगता र्दस्वर्कवर्ती॥ तनू लप्रहान् वि
गता र्दमहासु नः॥ प्राकृतं दहमुष्णं स्वस्वस्वर्न विना र्जुन॥ हततस्मिन् महासथ सर्वदेवानि कण्टक॥ दण्डकपूजिता देवी नृजाली तनू दामना॥ नवम्या क
जकाम् अकृमूर्त्तिं वराहकृत्वा॥ कृष्णपद्मव्यामर्धं अमया विनियामिता॥ गर्भं संपूजिता देवैर्दिविविधिनान्मना॥ सर्ववाधा विनिर्मुक्ता देवा याना नृपा
स्तथा॥ पूजा स्मर्तुं तत्तदा नैकतममथ कामिकं॥ ॥००॥ एषा दद्यावता नृपे लाक्षाद्युदय अमयवधः॥ ॥३॥ ॥ मनुवाच॥ गजानना पिस्वस्मर्तुं गतामा
लीं चरुधनीं॥ नामा यि पृथिवीं जीत्वा दिग्देवेषु विन्यसता॥ चक्रना अक्रु दाना त देवीनां कानयत्पूनीं॥ सा गता नामहा धन्यै यः एषा दमुरुना र्त्तवि॥ तत्र सु
मानय देवीं कालिकां कालनासिनीं॥ अथा ध्याया महादेवीं तनसा सा न्नवर्णिता॥ तदसा पूर्वमाख्याता यादु र्गनवकीर्तिता॥ महादय महावाहा दवान्येव

किस्किन्धरुप्रवीदवीसर्वकामरुसप्रदा४

मदु.पु.॥
॥२०॥

[illegible]

॥ २०५

[illegible]

॥दे.पु.॥
॥२१॥

नाभिरुवस्यसिं. हस्तस्कन्दमवेदनामागममहासिद्धि. सर्वेषामिन्द्रावना॥ रुवतधनवान्स. प्रथमारुरुताताना॥ स्वर्गपिर्वर्गमिंसिदि. इग्नयागमयजाय
ना॥ माघाद्येर्महतांशका. कृष्णद्येर्वर्गयायैना॥ नृत्ताद्येऽकालिकाद्यामु. यष्ट्याविधिनामून॥ ॥२२॥ दद्यादद्यावतावदवीपना॥ गृहनिष्कस्योगमहात्मी॥
॥२३॥ वक्रावावः॥ देवीमृदुजयाविष्ट. मधुंकादिप्रविसुनै॥ वक्रादिरुमुपर्युक्त. मत्स्यनीसवनावरै॥ अत्रुदिनधर्मस्य. यद्वैगर्हसिंश्रितै॥ तशत्यन्तमिदंशामक
पालद्यमिहिरुवता॥ नृत्ताकाकनमय. स्वकुत्रु॥ अक्रितामहान्॥ उत्तानः सवउ॥ मन्ददेवतसंलयः॥ पृथिवीविपद्यदिकर्गमन्सुसुवकर्त्तिका॥ यमकाकाठिवि
विन्यास्त. गप्रकृतावर्थनवि॥ दविवसंस्मृतादयो. याविगस्यप्रदक्षिणी॥ नस्मिन्मनोयशस्विंलदसकयाहिकासुना॥ नृदात्रकादहृया. नादित्यादादलोवगु॥
माथेववसवाकृष्टो. श्राव्तिनोहोवयाहिको॥ वसन्तसन्निधुपिन्दुनृदी॥ अपिपिनामहान्॥ पमिनामहानादित्या. नन्विनीवात्सनरुनै॥ पिरुनूरुयः॥ प्रविदीध
अशुसंवसुनारुवान्॥ नृत्तायहृकुजापर्व. पृथ्वीनामानिमल॥ अक्रिताकादहिरुव. त्वष्टावृडास्वविर्यवान्॥ रुचयेवाथसर्वश्च. शम्भकः॥ अपनाजिगः॥ वृषा

॥२५॥

कपित्वर्त्तुत्थ. कपर्देनैवतसुथा॥ नृत्ताभिरुवतस्योत. नृदात्रकादहस्तुता॥ आदित्यानाकुनामानि. विष्णुः॥ लकृत्थवीर्यनै॥ अर्यमावेवधाताच. मिगाथवन
सुथा॥ विवस्वानसविनावेव. पूषातवशागयेवचक्षत्रकर्तुगत्सहिनजा. आदित्यादादशसृता॥ धनाध्रुवस्यसामत्य. अर्प. त्वेवानिलानलः॥ प्रत्युष
स्वपरावत्थ. वसवाहोपकीर्तिना॥ नासत्यात्वेवदगुत्थ. स्मृतीदावष्टिगदपि॥ वि॥ दवात्यवस्तुमि. नामतस्तान्निवाधम॥ क्रउदकाकुवत्वेका. मकाः
धृतिः - कन॥ मन्दभास्त्रोधमाननु. विष्टदवागतः॥ स्मृताः॥ वर्त्तमानाः॥ मदवाः॥ लृण्मन्त्रकनारुवान्॥ मायात्यमुषितात्वेव. तयेववसवर्त्तिनः॥
सत्याश्रुतनरुसः॥ साध्यात्वनदनकनै॥ यद्वसमवन्तथन. दवादादलदादल॥ याच्याग - सुभात्वनसत्यासुउरितः॥ सरु॥ साध्यादवाप्रवक्षामि
नामतस्तान्निवाधम॥ मतानुमन्त्रप्रमानेत्थ. नजानावायनसुथा॥ विहिन्यादुत्थिव. हंसाधर्मत्थविर्यवान्॥ विहृत्सपिप्रुत्थिवसाध्यादादलकीः
र्त्तिना॥ जगयहृकुजादवा. विष्टयहृपुनिष्ठिता॥ अतितान्वर्त्तमानात्थ. पुनः॥ अपिनिवाधम॥ आदित्यामन्त्रानात्राः॥ कस्यपस्यात्मजाः॥ स्मृता॥ वि॥

^{४२} ॥६०॥ ^{४३} कीलक ^{४४} सोम ^{४५} साधन ^{४६} विनायक ^{४७} तु ^{४८} पवित्रा ^{४९} प्रमाथी ^{५०} व ^{५१} आन ^{५२} चाना ^{५३} द ^{५४} सोम ^{५५} न ^{५६} पि ^{५७} लं ^{५८} काल ^{५९} म ^{६०} क ^{६१} सि ^{६२} धा ^{६३} ध ^{६४} न ^{६५} उ ^{६६} द ^{६७} म ^{६८} द ^{६९} द ^{७०} इ ^{७१} द ^{७२} ही ^{७३} न ^{७४} धि ^{७५} ना ^{७६} द्वा ^{७७} नी ^{७८} न
 ॥२३॥ ^{७९} का ^{८०} का ^{८१} को ^{८२} धे ^{८३} न ^{८४} द ^{८५} य ^{८६} ॥ ^{८७} ष ^{८८} ष ^{८९} ष ^{९०} स ^{९१} च ^{९२} स ^{९३} ना ^{९४} क ^{९५} न ^{९६} य ^{९७} गे ^{९८} द ^{९९} द ^{१००} हि ^{१०१} ॥ ^{१०२} स्मृ ^{१०३} ता ^{१०४} ॥ ^{१०५} गु ^{१०६} नो ^{१०७} द ^{१०८} द ^{१०९} ल ^{११०} ल ^{१११} क ^{११२} व ^{११३} त्सु ^{११४} न ^{११५} ३ ^{११६} द ^{११७} या ^{११८} सु ^{११९} थ ^{१२०} ॥ ^{१२१} ना ^{१२२} म ^{१२३} म ^{१२४} क ^{१२५} वि ^{१२६} रु ^{१२७} द ^{१२८} न ^{१२९} प ^{१३०} ध ^{१३१} ध ^{१३२} प ^{१३३} नि ^{१३४} व ^{१३५} र्त्त ^{१३६} ना ॥ ^{१३७} अ ^{१३८} नु ^{१३९} ग ^{१४०} च
 वि ^{१४१} का ^{१४२} ला ^{१४३} र्थ ^{१४४} वृ ^{१४५} का ^{१४६} दि ^{१४७} क ^{१४८} ल ^{१४९} ना ^{१५०} थ ^{१५१} वा ॥ ^{१५२} स ^{१५३} द ^{१५४} क ^{१५५} ल ^{१५६} वि ^{१५७} रु ^{१५८} द ^{१५९} न ^{१६०} क ^{१६१} न ^{१६२} स ^{१६३} च ^{१६४} ना ^{१६५} व ^{१६६} न ॥ ^{१६७} का ^{१६८} र्त्ति ^{१६९} क ^{१७०} ल ^{१७१} ल ^{१७२} न ^{१७३} म ^{१७४} र्थ ^{१७५} सो ^{१७६} म ^{१७७} र्थ ^{१७८} गु ^{१७९} म ^{१८०} ध ^{१८१} र्म ^{१८२} म ^{१८३} र्थ ^{१८४} ॥ ^{१८५} पृ ^{१८६} ष ^{१८७} ॥ ^{१८८} म ^{१८९} धो ^{१९०} - ^{१९१} हो ^{१९२} व ^{१९३} र्थ ^{१९४} म ^{१९५} ध ^{१९६} मो ^{१९७} ल ^{१९८} ल ^{१९९} म ^{२००} ध ^{२०१} व ^{२०२} ॥
 ॥ वे ^{२०३} ल ^{२०४} स ^{२०५} व ^{२०६} प्र ^{२०७} क ^{२०८} र ^{२०९} स ^{२१०} र्थ ^{२११} म ^{२१२} म ^{२१३} ॥ ^{२१४} गु ^{२१५} वि ^{२१६} न ^{२१७} गि ^{२१८} न ^{२१९} ॥ ^{२२०} आ ^{२२१} वा ^{२२२} द ^{२२३} क ^{२२४} ध ^{२२५} म ^{२२६} ॥ ^{२२७} ३ ^{२२८} उ ^{२२९} क ^{२३०} ॥ ^{२३१} अ ^{२३२} व ^{२३३} र्थ ^{२३४} म ^{२३५} म ^{२३६} ॥ ^{२३७} रा ^{२३८} ॥ ^{२३९} ५ ^{२४०} प ^{२४१} द ^{२४२} म ^{२४३} ध ^{२४४} - ^{२४५} ल ^{२४६} अ ^{२४७} व ^{२४८} र्थ ^{२४९} ल ^{२५०} वि ^{२५१} ना ^{२५२} व ^{२५३} र्थ ^{२५४} ॥ ^{२५५} क ^{२५६} र्त्ति ^{२५७} क ^{२५८} ना ^{२५९} हि ^{२६०} नी ^{२६१} का
 मा ^{२६२} ष ^{२६३} रु ^{२६४} न ^{२६५} हि ^{२६६} र्थ ^{२६७} गि ^{२६८} र्थ ^{२६९} ॥ ^{२७०} न ^{२७१} र्थ ^{२७२} म ^{२७३} ध ^{२७४} र्थ ^{२७५} वि ^{२७६} दि ^{२७७} ॥ ^{२७८} मा ^{२७९} ध ^{२८०} र्थ ^{२८१} वि ^{२८२} व ^{२८३} र्थ ^{२८४} ॥ ^{२८५} न ^{२८६} र्थ ^{२८७} ॥ ^{२८८} न ^{२८९} र्थ ^{२९०} ॥ ^{२९१} न ^{२९२} र्थ ^{२९३} ॥ ^{२९४} न ^{२९५} र्थ ^{२९६} ॥ ^{२९७} न ^{२९८} र्थ ^{२९९} ॥ ^{३००} न ^{३०१} र्थ ^{३०२} ॥ ^{३०३} न ^{३०४} र्थ ^{३०५} ॥ ^{३०६} न ^{३०७} र्थ ^{३०८} ॥ ^{३०९} न ^{३१०} र्थ ^{३११} ॥ ^{३१२} न ^{३१३} र्थ ^{३१४} ॥ ^{३१५} न ^{३१६} र्थ ^{३१७} ॥ ^{३१८} न ^{३१९} र्थ ^{३२०} ॥ ^{३२१} न ^{३२२} र्थ ^{३२३} ॥ ^{३२४} न ^{३२५} र्थ ^{३२६} ॥ ^{३२७} न ^{३२८} र्थ ^{३२९} ॥ ^{३३०} न ^{३३१} र्थ ^{३३२} ॥ ^{३३३} न ^{३३४} र्थ ^{३३५} ॥ ^{३३६} न ^{३३७} र्थ ^{३३८} ॥ ^{३३९} न ^{३४०} र्थ ^{३४१} ॥ ^{३४२} न ^{३४३} र्थ ^{३४४} ॥ ^{३४५} न ^{३४६} र्थ ^{३४७} ॥ ^{३४८} न ^{३४९} र्थ ^{३५०} ॥ ^{३५१} न ^{३५२} र्थ ^{३५३} ॥ ^{३५४} न ^{३५५} र्थ ^{३५६} ॥ ^{३५७} न ^{३५८} र्थ ^{३५९} ॥ ^{३६०} न ^{३६१} र्थ ^{३६२} ॥ ^{३६३} न ^{३६४} र्थ ^{३६५} ॥ ^{३६६} न ^{३६७} र्थ ^{३६८} ॥ ^{३६९} न ^{३७०} र्थ ^{३७१} ॥ ^{३७२} न ^{३७३} र्थ ^{३७४} ॥ ^{३७५} न ^{३७६} र्थ ^{३७७} ॥ ^{३७८} न ^{३७९} र्थ ^{३८०} ॥ ^{३८१} न ^{३८२} र्थ ^{३८३} ॥ ^{३८४} न ^{३८५} र्थ ^{३८६} ॥ ^{३८७} न ^{३८८} र्थ ^{३८९} ॥ ^{३९०} न ^{३९१} र्थ ^{३९२} ॥ ^{३९३} न ^{३९४} र्थ ^{३९५} ॥ ^{३९६} न ^{३९७} र्थ ^{३९८} ॥ ^{३९९} न ^{४००} र्थ ^{४०१} ॥ ^{४०२} न ^{४०३} र्थ ^{४०४} ॥ ^{४०५} न ^{४०६} र्थ ^{४०७} ॥ ^{४०८} न ^{४०९} र्थ ^{४१०} ॥ ^{४११} न ^{४१२} र्थ ^{४१३} ॥ ^{४१४} न ^{४१५} र्थ ^{४१६} ॥ ^{४१७} न ^{४१८} र्थ ^{४१९} ॥ ^{४२०} न ^{४२१} र्थ ^{४२२} ॥ ^{४२३} न ^{४२४} र्थ ^{४२५} ॥ ^{४२६} न ^{४२७} र्थ ^{४२८} ॥ ^{४२९} न ^{४३०} र्थ ^{४३१} ॥ ^{४३२} न ^{४३३} र्थ ^{४३४} ॥ ^{४३५} न ^{४३६} र्थ ^{४३७} ॥ ^{४३८} न ^{४३९} र्थ ^{४४०} ॥ ^{४४१} न ^{४४२} र्थ ^{४४३} ॥ ^{४४४} न ^{४४५} र्थ ^{४४६} ॥ ^{४४७} न ^{४४८} र्थ ^{४४९} ॥ ^{४५०} न ^{४५१} र्थ ^{४५२} ॥ ^{४५३} न ^{४५४} र्थ ^{४५५} ॥ ^{४५६} न ^{४५७} र्थ ^{४५८} ॥ ^{४५९} न ^{४६०} र्थ ^{४६१} ॥ ^{४६२} न ^{४६३} र्थ ^{४६४} ॥ ^{४६५} न ^{४६६} र्थ ^{४६७} ॥ ^{४६८} न ^{४६९} र्थ ^{४७०} ॥ ^{४७१} न ^{४७२} र्थ ^{४७३} ॥ ^{४७४} न ^{४७५} र्थ ^{४७६} ॥ ^{४७७} न ^{४७८} र्थ ^{४७९} ॥ ^{४८०} न ^{४८१} र्थ ^{४८२} ॥ ^{४८३} न ^{४८४} र्थ ^{४८५} ॥ ^{४८६} न ^{४८७} र्थ ^{४८८} ॥ ^{४८९} न ^{४९०} र्थ ^{४९१} ॥ ^{४९२} न ^{४९३} र्थ ^{४९४} ॥ ^{४९५} न ^{४९६} र्थ ^{४९७} ॥ ^{४९८} न ^{४९९} र्थ ^{५००} ॥ ^{५०१} न ^{५०२} र्थ ^{५०३} ॥ ^{५०४} न ^{५०५} र्थ ^{५०६} ॥ ^{५०७} न ^{५०८} र्थ ^{५०९} ॥ ^{५१०} न ^{५११} र्थ ^{५१२} ॥ ^{५१३} न ^{५१४} र्थ ^{५१५} ॥ ^{५१६} न ^{५१७} र्थ ^{५१८} ॥ ^{५१९} न ^{५२०} र्थ ^{५२१} ॥ ^{५२२} न ^{५२३} र्थ ^{५२४} ॥ ^{५२५} न ^{५२६} र्थ ^{५२७} ॥ ^{५२८} न ^{५२९} र्थ ^{५३०} ॥ ^{५३१} न ^{५३२} र्थ ^{५३३} ॥ ^{५३४} न ^{५३५} र्थ ^{५३६} ॥ ^{५३७} न ^{५३८} र्थ ^{५३९} ॥ ^{५४०} न ^{५४१} र्थ ^{५४२} ॥ ^{५४३} न ^{५४४} र्थ ^{५४५} ॥ ^{५४६} न ^{५४७} र्थ ^{५४८} ॥ ^{५४९} न ^{५५०} र्थ ^{५५१} ॥ ^{५५२} न ^{५५३} र्थ ^{५५४} ॥ ^{५५५} न ^{५५६} र्थ ^{५५७} ॥ ^{५५८} न ^{५५९} र्थ ^{५६०} ॥ ^{५६१} न ^{५६२} र्थ ^{५६३} ॥ ^{५६४} न ^{५६५} र्थ ^{५६६} ॥ ^{५६७} न ^{५६८} र्थ ^{५६९} ॥ ^{५७०} न ^{५७१} र्थ ^{५७२} ॥ ^{५७३} न ^{५७४} र्थ ^{५७५} ॥ ^{५७६} न ^{५७७} र्थ ^{५७८} ॥ ^{५७९} न ^{५८०} र्थ ^{५८१} ॥ ^{५८२} न ^{५८३} र्थ ^{५८४} ॥ ^{५८५} न ^{५८६} र्थ ^{५८७} ॥ ^{५८८} न ^{५८९} र्थ ^{५९०} ॥ ^{५९१} न ^{५९२} र्थ ^{५९३} ॥ ^{५९४} न ^{५९५} र्थ ^{५९६} ॥ ^{५९७} न ^{५९८} र्थ ^{५९९} ॥ ^{६००} न ^{६०१} र्थ ^{६०२} ॥ ^{६०३} न ^{६०४} र्थ ^{६०५} ॥ ^{६०६} न ^{६०७} र्थ ^{६०८} ॥ ^{६०९} न ^{६१०} र्थ ^{६११} ॥ ^{६१२} न ^{६१३} र्थ ^{६१४} ॥ ^{६१५} न ^{६१६} र्थ ^{६१७} ॥ ^{६१८} न ^{६१९} र्थ ^{६२०} ॥ ^{६२१} न ^{६२२} र्थ ^{६२३} ॥ ^{६२४} न ^{६२५} र्थ ^{६२६} ॥ ^{६२७} न ^{६२८} र्थ ^{६२९} ॥ ^{६३०} न ^{६३१} र्थ ^{६३२} ॥ ^{६३३} न ^{६३४} र्थ ^{६३५} ॥ ^{६३६} न ^{६३७} र्थ ^{६३८} ॥ ^{६३९} न ^{६४०} र्थ ^{६४१} ॥ ^{६४२} न ^{६४३} र्थ ^{६४४} ॥ ^{६४५} न ^{६४६} र्थ ^{६४७} ॥ ^{६४८} न ^{६४९} र्थ ^{६५०} ॥ ^{६५१} न ^{६५२} र्थ ^{६५३} ॥ ^{६५४} न ^{६५५} र्थ ^{६५६} ॥ ^{६५७} न ^{६५८} र्थ ^{६५९} ॥ ^{६६०} न ^{६६१} र्थ ^{६६२} ॥ ^{६६३} न ^{६६४} र्थ ^{६६५} ॥ ^{६६६} न ^{६६७} र्थ ^{६६८} ॥ ^{६६९} न ^{६७०} र्थ ^{६७१} ॥ ^{६७२} न ^{६७३} र्थ ^{६७४} ॥ ^{६७५} न ^{६७६} र्थ ^{६७७} ॥ ^{६७८} न ^{६७९} र्थ ^{६८०} ॥ ^{६८१} न ^{६८२} र्थ ^{६८३} ॥ ^{६८४} न ^{६८५} र्थ ^{६८६} ॥ ^{६८७} न ^{६८८} र्थ ^{६८९} ॥ ^{६९०} न ^{६९१} र्थ ^{६९२} ॥ ^{६९३} न ^{६९४} र्थ ^{६९५} ॥ ^{६९६} न ^{६९७} र्थ ^{६९८} ॥ ^{६९९} न ^{७००} र्थ ^{७०१} ॥ ^{७०२} न ^{७०३} र्थ ^{७०४} ॥ ^{७०५} न ^{७०६} र्थ ^{७०७} ॥ ^{७०८} न ^{७०९} र्थ ^{७१०} ॥ ^{७११} न ^{७१२} र्थ ^{७१३} ॥ ^{७१४} न ^{७१५} र्थ ^{७१६} ॥ ^{७१७} न ^{७१८} र्थ ^{७१९} ॥ ^{७२०} न ^{७२१} र्थ ^{७२२} ॥ ^{७२३} न ^{७२४} र्थ ^{७२५} ॥ ^{७२६} न ^{७२७} र्थ ^{७२८} ॥ ^{७२९} न ^{७३०} र्थ ^{७३१} ॥ ^{७३२} न ^{७३३} र्थ ^{७३४} ॥ ^{७३५} न ^{७३६} र्थ ^{७३७} ॥ ^{७३८} न ^{७३९} र्थ ^{७४०} ॥ ^{७४१} न ^{७४२} र्थ ^{७४३} ॥ ^{७४४} न ^{७४५} र्थ ^{७४६} ॥ ^{७४७} न ^{७४८} र्थ ^{७४९} ॥ ^{७५०} न ^{७५१} र्थ ^{७५२} ॥ ^{७५३} न ^{७५४} र्थ ^{७५५} ॥ ^{७५६} न ^{७५७} र्थ ^{७५८} ॥ ^{७५९} न ^{७६०} र्थ ^{७६१} ॥ ^{७६२} न ^{७६३} र्थ ^{७६४} ॥ ^{७६५} न ^{७६६} र्थ ^{७६७} ॥ ^{७६८} न ^{७६९} र्थ ^{७७०} ॥ ^{७७१} न ^{७७२} र्थ ^{७७३} ॥ ^{७७४} न ^{७७५} र्थ ^{७७६} ॥ ^{७७७} न ^{७७८} र्थ ^{७७९} ॥ ^{७८०} न ^{७८१} र्थ ^{७८२} ॥ ^{७८३} न ^{७८४} र्थ ^{७८५} ॥ ^{७८६} न ^{७८७} र्थ ^{७८८} ॥ ^{७८९} न ^{७९०} र्थ ^{७९१} ॥ ^{७९२} न ^{७९३} र्थ ^{७९४} ॥ ^{७९५} न ^{७९६} र्थ ^{७९७} ॥ ^{७९८} न ^{७९९} र्थ ^{८००} ॥ ^{८०१} न ^{८०२} र्थ ^{८०३} ॥ ^{८०४} न ^{८०५} र्थ ^{८०६} ॥ ^{८०७} न ^{८०८} र्थ ^{८०९} ॥ ^{८१०} न ^{८११} र्थ ^{८१२} ॥ ^{८१३} न ^{८१४} र्थ ^{८१५} ॥ ^{८१६} न ^{८१७} र्थ ^{८१८} ॥ ^{८१९} न ^{८२०} र्थ ^{८२१} ॥ ^{८२२} न ^{८२३} र्थ ^{८२४} ॥ ^{८२५} न ^{८२६} र्थ ^{८२७} ॥ ^{८२८} न ^{८२९} र्थ ^{८३०} ॥ ^{८३१} न ^{८३२} र्थ ^{८३३} ॥ ^{८३४} न ^{८३५} र्थ ^{८३६} ॥ ^{८३७} न ^{८३८} र्थ ^{८३९} ॥ ^{८४०} न ^{८४१} र्थ ^{८४२} ॥ ^{८४३} न ^{८४४} र्थ ^{८४५} ॥ ^{८४६} न ^{८४७} र्थ ^{८४८} ॥ ^{८४९} न ^{८५०} र्थ ^{८५१} ॥ ^{८५२} न ^{८५३} र्थ ^{८५४} ॥ ^{८५५} न ^{८५६} र्थ ^{८५७} ॥ ^{८५८} न ^{८५९} र्थ ^{८६०} ॥ ^{८६१} न ^{८६२} र्थ ^{८६३} ॥ ^{८६४} न ^{८६५} र्थ ^{८६६} ॥ ^{८६७} न ^{८६८} र्थ ^{८६९} ॥ ^{८७०} न ^{८७१} र्थ ^{८७२} ॥ ^{८७३} न ^{८७४} र्थ ^{८७५} ॥ ^{८७६} न ^{८७७} र्थ ^{८७८} ॥ ^{८७९} न ^{८८०} र्थ ^{८८१} ॥ ^{८८२} न ^{८८३} र्थ ^{८८४} ॥ ^{८८५} न ^{८८६} र्थ ^{८८७} ॥ ^{८८८} न ^{८८९} र्थ ^{८९०} ॥ ^{८९१} न ^{८९२} र्थ ^{८९३} ॥ ^{८९४} न ^{८९५} र्थ ^{८९६} ॥ ^{८९७} न ^{८९८} र्थ ^{८९९} ॥ ^{९००} न ^{९०१} र्थ ^{९०२} ॥ ^{९०३} न ^{९०४} र्थ ^{९०५} ॥ ^{९०६} न ^{९०७} र्थ ^{९०८} ॥ ^{९०९} न ^{९१०} र्थ ^{९११} ॥ ^{९१२} न ^{९१३} र्थ ^{९१४} ॥ ^{९१५} न ^{९१६} र्थ ^{९१७} ॥ ^{९१८} न ^{९१९} र्थ ^{९२०} ॥ ^{९२१} न ^{९२२}

॥६५॥ नृपविदहास्त्रनेपालेनेवनामिनि॥कास्मिनाउम्वनत्वेवउरुनपादविनस्यमि॥केकयत्रुद्वद्वनविर्गकेलासमर्वकनकउरुनदन्मकृपापरुनविनस्यमि॥
 ॥२४॥ वहिकामथुनाविधीपुनृषपुनकाकासी॥पार्थमावमहिपेविमपादविनस्यमि॥वेदसोविलोसिन्धुवालासहानाकाणि॥सोनासुपुनाधिगनादन्मपुनृवि
 नस्यमि॥त्रवन्तिकाविदहत्वंकीवीपूनीका॥सिंहनात्वं॥वर्नमलयवासीवलेकापुनित॥वव॥वकार्यददिकापादहवनस्यमिपीठिना॥नर्मदायामहिमर्थ
 वेजयन्तीवकाङ्कली॥पुनृषपुननासीवसर्वात्पुनमहामिनि॥त्रवन्तिकापुनरीमैरुकोदकिलगैहरी॥वर्नकापलकाकावहनकिशमहाधना॥वत्वागदं
 समस्तवगतांपूर्वादिमाहता॥विनस्यमिहनाकुर्वेकुर्वेनत्यानसुविना॥सूर्यासादयमकादि॥सैकाकोक्रमपीठिना॥तिर्यग्मनामकाक्रमसुमिगकासुखा
 नविस्वन॥त्रवन्तिकाविदहत्वंकीवीपूनीका॥सिंहनात्वं॥वर्नमलयवासीवलेकापुनित॥वव॥वकार्यददिकापादहवनस्यमिपीठिना॥नर्मदायामहिमर्थ
 वेजयन्तीवकाङ्कली॥पुनृषपुननासीवसर्वात्पुनमहामिनि॥त्रवन्तिकापुनरीमैरुकोदकिलगैहरी॥वर्नकापलकाकावहनकिशमहाधना॥वत्वागदं
 समस्तवगतांपूर्वादिमाहता॥विनस्यमिहनाकुर्वेकुर्वेनत्यानसुविना॥सूर्यासादयमकादि॥सैकाकोक्रमपीठिना॥तिर्यग्मनामकाक्रमसुमिगकासुखा
 नविस्वन॥त्रवन्तिकाविदहत्वंकीवीपूनीका॥सिंहनात्वं॥वर्नमलयवासीवलेकापुनित॥वव॥वकार्यददिकापादहवनस्यमिपीठिना॥नर्मदायामहिमर्थ
 वेजयन्तीवकाङ्कली॥पुनृषपुननासीवसर्वात्पुनमहामिनि॥त्रवन्तिकापुनरीमैरुकोदकिलगैहरी॥वर्नकापलकाकावहनकिशमहाधना॥वत्वागदं

पुनर्वसु॥हृहृहाउपुष्पा॥उज्जुजउम्वनत्वेवउरुनपादविनस्यमि॥केकयत्रुद्वद्वनविर्गकेलासमर्वकनकउरुनदन्मकृपापरुनविनस्यमि॥
 तिरुतनाविन्मत्वा॥ननिनृननृनाभा॥नामामिपुनृष॥ययारुहिनूल॥उधरुदपूर्वावादा॥रुजाजिउरुनावादा॥रुजिजावात्रुहिजि॥विषुषकापुवत्वा॥
 गगिगुगधनवा॥रगसासिसुसगहिवा॥ससाददिपूर्वाउपदा॥दधाम्मउरुनहाउपदा॥ददावविनवनी॥वववालत्रुविनी॥लिलललाहनलि॥उनेवत्वाकने॥
 सर्व॥हृहृहाउपुष्पा॥उज्जुजउम्वनत्वेवउरुनपादविनस्यमि॥केकयत्रुद्वद्वनविर्गकेलासमर्वकनकउरुनदन्मकृपापरुनविनस्यमि॥
 उतसंख्यानापेवदलवगुदन्म॥विन्मसूर्यावन्दावसूर्यावा॥सनिपत्तिमा॥द्वया॥सर्वका॥ययारुहिनूल॥उधरुदपूर्वावादा॥रुजाजिउरुनावादा॥रुजिजावात्रुहिजि॥विषुषकापुवत्वा॥
 यागपुष्पा॥रिषकवद्वयासैसाधनिगुला॥॥००॥यागदविपुनालकालव्ययस्तु॥॥००॥॥वर्ग॥००॥कवटनयालाहितरुगुसोम्यजीवसीनाली॥सूर्यावन्दावसूर्यावा॥सनिपत्तिमा॥द्वया॥सर्वका॥ययारुहिनूल॥उधरुदपूर्वावादा॥रुजाजिउरुनावादा॥रुजिजावात्रुहिजि॥विषुषकापुवत्वा॥
 उतसंख्यानापेवदलवगुदन्म॥विन्मसूर्यावन्दावसूर्यावा॥सनिपत्तिमा॥द्वया॥सर्वका॥ययारुहिनूल॥उधरुदपूर्वावादा॥रुजाजिउरुनावादा॥रुजिजावात्रुहिजि॥विषुषकापुवत्वा॥

॥६॥
॥१॥

तथेववगवीमना॥वदुर्थउमश्चाक निष्ठक कल्पवासिनः॥प्रजानीपतिहीः सर्वः सद्यतपंचमामहान्॥मनुः सनत्कुमानासी वेनाजयवथानीयाः॥षष्ठुः सः
स्थितास्तदवाधवविनाधका॥सत्यनुसफमालाका, कृपूनरुववासिनी॥वक्त्रलाकसमाख्याता, कृपनिघातलक्षणी॥महितलां सहसाभीमनाद्वीदिवाकनः॥द
डानानि कुवायाव, द्विगुलद्विगुलनः॥यथाजनकाद्यनु, उमनर्धकवस्मृताः॥यथाविंशतिनकयाजि, ऐलाकः इवकउच्यता॥द्विगुलपसहप्रयुजाजनानीगतवः
च॥लाकान्ननगथेकेकी कुवादूर्ध्वविधियता॥दवदानवगभर्त्त, यक्षगह संपन्नमः॥रुतविद्याधना, एवमृष्टीनदवयानयः॥गवका, पुष्ट्यमशुष्टपन्नसुसमा
नी॥तनामिर्वायुनाका, तनारुनादिनृचग॥तनामहान्प्रधानश्च, प्रकृतिः पुनमस्तथा॥पुनकादिश्वनाहृया, यस्यानक्का वनीजगत्॥निवामाहान्दवानी, प
नासुवगनामता॥ ॥०॥ स्याथश्ववनायग्रहगमिर्त्राजा॥ग॥ ॥वक्त्रावा॥नाकावानुमति, एव, द्विविधपूर्णिमागना॥नीमीवालीकृद्, एवमृमावास्या ॥१॥
द्विष्टेवगु॥अमानामनवनस्मि, एवमुलाकप्रतिष्ठिता॥यस्मात्साभावसखस्या, अमावास्याततः स्मृता॥पूर्वादिनकलोहित, पूर्णमास्यां निमग्नः॥पूर्णिमानुः
वि

॥१॥

मनीहृया, यश्चाकमिगरास्तुव॥यस्मात्कामनुमन्य, दवगापिरुहिः सह॥तस्मादनुमतिर्नाम, पूर्णिमाप्रथमास्मृता॥यदावासुमिगसूर्यः पूर्णवन्त्यवाहमः॥युगप
त्सोक्तवानागस्तुदानुमतिपूर्णिमा॥नाकानामनुमन्य, दवगापिरुहिः सह॥वज्रनात्रेववन्त्य, नाकनिकवयावुवन॥निनीवालीप्रमाननु, कीनलानिग्नकनः
अमावास्याविगत्यर्क, निनीवालीततः स्मृता॥कुरुनिकाकिलनाकाः यः कालसुसमाद्यत॥ततः कालकीहात्, यावेमृमावास्या कृद् स्मृताः॥अनुमत्यासनाकाया
ऽलिनीवाल्या कूर्ध्विना॥उमासांदिनलंकालः कुमाग्रतिकृद् स्मृताः॥कलांशोऽलसामस्य, पुक्कवर्धनतनविः॥अमृगनामृर्गकषु, यीयन्तदवगेकमागु॥प्रथमा
पिवगवन्तिः द्वितीयांनपतः कली॥वि, एवदवास्तुनीयादु, वदुर्थः उषजायनि॥पंचमीवनृगस्त्वानि, अर्धेयिवतिवासवः॥सकमीनृषयादित्या, वसवाहोतथासृमि
नवमिकषुपकस्य, पिवर्तिः ४ कलामपि॥दसमीमन्नतश्चापि, नडाऽकादशकला॥द्वादशिकलाविष्णु, धनदयप्रयादनी॥चउर्ध्वपलुपतीः कलीपिवनिमित्यगः॥
ततः पञ्चदशमेव, पिवनीपिनः कली॥कलावनिष्ठानिः पाक, प्रतिष्ठः सूर्यमपुर्ल॥अमायांविगतनमो, अमावास्याततः स्मृता॥पूर्वादिप्रविगत्यर्क, मध्याह्नवदन

॥६५॥ स्वर्ति॥ नृपना कवितायस्स धर्निवानवितरुवशात्रयः प्रविष्टः सामन्तुः लषया कलयैकया॥ लसत्तुल्लगावृक्षा त्रिष्यादयमिवोषधी॥ तमोषधिक्षिर्तमवत्त्वनन्त्यायः
 ॥६५॥ पिवन्ति॥ तदंभानुगतागमश्च॥ कीरत्वमृपगच्छति॥ तत्की नममृर्नरुत्वा मरुपूरं दिजातया॥ स्वाहा कानवषट्काने॥ कृतास्त्याहृतयकमात्॥ कृतमग्निषदेवाय॥ पुनःसामविदेहय
 तू॥ नर्वर्त्तकीयमसाम॥ कीलम्भप्रायनपुनः॥ तस्मात्सूर्यलक्ष्मिस्त्यक्तयवृक्षीद्विधेवगु॥ ॥६५॥ द्वाद्दवीपूजावक्रकयवृक्षि॥ ॥वक्रावाव॥ यदयं वदतलाकावालि-
 त्वात्महामुन॥ तदहं संप्रकाशिवन्तुसूर्यपनागिकी॥ यदि सत्यमयं पुनः॥ तज्जानासिदिवाकन॥ तत्कर्त्तुमादनस्तुननादुनारुसता न्कन॥ अथवा नादुर्नैकम्याहृवकुपुवनिर्त॥ तत्क
 र्थं दत्तने श्रीकृष्णनग्नानवित्वसिगुग॥ विमुक्तत्वं पुनदृष्टु॥ सुखेवात्वं ह्युत्तुला॥ नस्यापहर्तनजा॥ नस्तुनादपसानित॥ यदिवाप्यनिष्पीत॥ तर्थादिपुननारुवन्॥ तस्मान्न
 नज्जसां नासि॥ नाहावर्कुगमिष्यति॥ शकार्थं सर्वदवानी॥ सामः सूर्यः स्वयं उवा॥ तयस्तुममृर्नवापि॥ सूर्यं सूर्यं नज्जसा॥ पिवन्त्यामृमयं दवापिगनत्त्वस्वभामृनी॥ ययत्त्वर्षिग
 र्त्तवैव प्रययिषितलुखेववशा॥ ययत्त्वयिसहस्रत्वं दवासानपिर्वति॥ योपापुमिहृन्नरुत्वेन्दु॥ माच्छादयतिहृत्तयया॥ पुञ्जववन्तुमायानि॥ कृष्णपर्वलिहास्तुर्न॥ सूर्यमपुलसंस्तु
 ॥ नाहानवमृत्तं तागपूना॥ ६५॥ स्वयस्तुवानस्मात्ताद्रुतागलयागुमिहृत्तियर्वत्त॥ ययत्त्वयिसहस्रत्वं दवासानपिर्वति॥ योपापुमिहृन्नरुत्वेन्दु॥ माच्छादयतिहृत्तयया॥ पुञ्जववन्तुमायानि॥ कृष्णपर्वलिहास्तुर्न॥ सूर्यमपुलसंस्तु

वन्तुमवर्जिष्यसति॥ तस्मात्स्वित्तिर्नाहृस्तुनमस्यविनासयन॥ अविहिंसन्त्यथायर्त्तयिवनिश्चमनामध॥ वन्तुस्तुममृर्नगद॥ दहदाद्राहृमन्त॥ वन्तुकान्ममलियदः
 लुहिर्नैकनतकमात्॥ कनत्रपिहीयत॥ नैजसानेवमृचन॥ यथासूर्यमलित्वापिहृत्तयाहृत्तयावर्क॥ नरुवर्त्यगहिनापि॥ नज्जसानेवमृचन॥ उर्वचन्तुत्त्वसूर्यत्वं
 दितावपिनाहृना॥ स्वनज्जसानमृचन॥ नाहृहीनोवरुवगु॥ पर्वमृवववन्तुस्य॥ मात्तिक्ककलसाकृति॥ सामादेवतसंयामा॥ कृयायागवयार्थिवात्॥ नाहृत्त्ववनल
 जाद॥ प्रहृनदमृर्नगनि॥ स्वदाहृत्तुलसयाफवसंदृष्टायथावर्त्ते॥ सूर्यगदवः कनकीर्न॥ तदन्दुः कननमृर्त॥ पीनवस्तुर्थादिवानी॥ सामागवत्तुका॥ यथापाहुम
 र्त्तपीत्वाजीवकसर्वजंतवशा॥ पीत्वामृर्तमथासामा॥ हृत्तुनसर्वदवना॥ सूर्यं पर्वयागु॥ तथायैकनगलानि॥ तैकनार्त्तयथाहाग॥ मपजीवनिदवना॥ तस्मि
 कालसमरुगी॥ नाहृनयावकर्षति॥ सर्वमद्विहागंवा॥ यादीयादार्द्धमववा॥ आकृन्त्यार्थिवाकृत्तयावर्त्तवन्तुमपुल॥ मृत्तसहागमनाहृत्तु॥ दवहागममुसर्वग
 ॥ हृत्तुविषयदवानी॥ नाहापर्वमनस्यवशा॥ वन्तुनहृगमायानि॥ नज्जसानेवमृचन॥ मिथीहागत्वयावक॥ पुनचर्कपमाणन॥ पूर्वकृयास्तु॥ कालस्तावानवपकी

॥८५॥
॥१२॥

कामप्रसाधिका॥ गिरिदत्तासुगन्धर्व, यक्षनक्षत्राणां रत्नमालाप्रकारकाया उच्यते परमलाभप्रदा॥ प्रत्येकं सप्तसंस्कारं कर्तव्यमस्ति सरुमा॥ अथवा मंगलदत्तपञ्चप
ञ्चपूजिता॥ मातंगारुद्रहावन, वरुणाकाश्यादि गणेशदेवपुत्रकाया मन्त्रानुगुणं प्रकीर्तिता॥ गुरुदत्तनादद्या ४ नवसंख्यापूजिता॥ वसन्तकृतप्रवृत्ता अथवा
कलङ्गिकीर्तिता॥ मन्त्रगुरुसंस्तुतिं कुर्वन्तं कान्तपूजिका॥ नमस्कारान्तर्गता॥ पूजाहोमप्रवृत्ता॥ लाकपालां प्रकर्तव्या दद्यान् नमस्करिता॥ नागसंस्तुतिं कुरुदत्तः
नूतनाद्याविवनिका॥ सूर्यहादगुरुदत्तं नडाग्रकुरुहासना॥ नवसंस्तुतिं गतादेवा परं वरुणं नृसिंहा॥ परं वधातासमाख्याता॥ दत्तात्रेयगुणमष्टांगिवा॥ उतास्तनकरुद
नसर्वमङ्गलार्थलभभा पुरुवादिपुरुदत्तं कथयामि लुप्तं सततं॥ सिंहसंस्तुतिं गतादेवी कृतामिकुटमल्लिता॥ लूलाक्षसंस्तुतिं वीरवन्दारुयवापधुक्॥ दर्शयन्तं नव
दत्तं रविकुम्भकनामिवा॥ सन्तुपालकाशपना सुस्तनी वानुहासिनी॥ सर्वरुद्रमरुषा मी सर्वसाहायिस्त्विति॥ नवग्रहकृताद्याना सामर्थ्यकृतासना प्रवीविः
धामहादवी गुरुसफाकुलाधवा॥ नवहादगमातावा वरुणाध्वनपूजयन्॥ प्रासादेकवमात्मसा यावत्पञ्चदशकना॥ कन्यासामग्रमावृत्ता दिगुत्तमिगुत्तमसना

॥१२॥

हेमानाजतनासा महाध्यामनिवर्तिता॥ हमात्मासा सदाकार्या सर्वकामप्रसाधिका॥ नागतीचायनामायी ताप्राप्तो रोगप्रवर्द्धिनी॥ लेलाप्रयत्नकामलवार्द्ध
वप्रियवर्द्धिनी॥ विश्वमृदुवितादेवी गणगंधर्वपूजिता॥ समस्तनक्षत्रविनी सर्वसारसमकला॥ रावकार्या नृपपत्नी पुरुवस्तुपथसदा॥ नवकृत्वागुलीदवी
पुनिष्ठा कान्तयलगा॥ मन्त्रपंचाशत्कारि ४ कीर्तिवृत्तसमूहवे॥ दत्तादत्तानां स्यावहस्तलगीरुवन्॥ अष्टाक्षरमूनिपुष्ट वदीरुस्तवपुष्टया॥ नमस्तुभ्यः
गताकार्या संप्रदत्ता सखायिका॥ नृत्तानपूर्वचायुयदिगुत्तममन्त्रगुष्टिद॥ दवीगुष्टिप्रकर्तव्यं सर्वलक्षणलक्षिनी॥ नृकादगकनका - - - र्ययावहस्तलगीरुवा
॥ विदुषा कुमलवत्स अष्टाक्षरविधीयत॥ कन्यासंस्तुतिं लेपकसुकाष्टकी॥ सर्वगुरुद्विन्नास - - - मधिष्ठुमथापिवा॥ विजयास्वीकृत्येवापि सैयिसगवा
दकरुषिनी॥ विद्यासासक कालाक्षी मलवानलभरिनी॥ नृनेकविरुपदायी पद्मसुक्तिकमल्लिनी॥ होवात्पलकनापी ३ हंसवर्हितावर्द्धिनी॥ नवविधम
हासोर्ध्वदेवार्थकान्तयद्वय॥ नमस्तुभ्यः नवग्रहवीरवदेस्तुते॥ समेकता॥ यथा कुसमाकार्यं नृपादकिनिर्गपनी॥ पादानवधुकाकार्यं पूर्वज्ञानसमपिवा

धो

॥८५॥
॥१००॥

॥निष्ठादिनायदादवी.सुमृगानस्त्ररुषिता॥तदामपुपविन्यासतात्रापनिकल्पयन्॥सर्वकामप्रसिद्धार्थमीषामासप्रकीर्तिता॥वालनैस्कापनैवापि.पुनर्सेकानमव
वा॥तस्मिन्द्व्यापकर्तुमैहार्थरुत्तकौक्षिरि॥स्वल्पवीजमलालारंवाभुकांलश्रवाप्रयाग॥ ॥मननवाच॥अथानर्सेपवद्भामि.दवीगानलक्ष्मी॥सर्वासीयेनदे
वीनी.यजनायप्रविष्टाति॥सकनवक्रलनिष्ठाते॥वदीसुमसमे॥पुर्ण॥कर्तव्यातददवीनी.गानलीविसुनाच्यु॥हसुस्मिगर्तकार्य॥दत्त॥हसुवतुष्टय॥न्या॥आधा
दन्वनाच्यु.पुर्ण॥पूर्वदिल॥कमाता॥सर्वभातिवपद॥गि॥लूलैलीकैर्नलुर्ण॥दरुनीवनवफाद्यं॥प्रद्यानिगुर्विर्जित॥विजयतिपदाज्ञाना.कानली.सन्निवलयन्
॥रुनिचन्दनसमाकानान्.सुनवक्रा.कलानुसिगान्॥धूम्रकुलनी.नारान्.पुष्पापीठविविधितान्॥वक्रान्.सुपुष्पा.रान्.दवाकान्.कुयद्वजान्॥अदिः
लोकया.नानी.मल्ल.वृक्ष.साल.हर्ण॥सदृष्टपुष्टवर्णस्वर्ण.वृषसत्तिकलीविनी॥वडुर्दसुपमा.लसं.पना.कारु.सुवि.सुना॥यक.नव.वर्ण.लोच.उक्तयदि.रुयमि
व॥पददद्या॥सम्बार्थयसुद्धे.सर्वकामिकी॥गजसिंहकते॥सर्वे.कल.लोच.सर्प.हि.ने॥पञ्च.वक्र॥सम.कृ.ने.पंव.वक्र॥सना.वक्र॥सक.स्या.धम.के॥पु.त्रै.ली

॥१००॥

५४

श्वर्हि.लुकादि.की॥वसुनत.विल.वे.रु.षय.द.वि.द.की॥गार्थनाय.स.मू.रु.हिः.सिक.ना.हि.वि.ना.य.ना॥तदा.म.ल.या.दि.वृ.र्ण.के.मो.कि.का.रि.न.जे.लि.ख.न्॥प.क.था.ग.वि.ध.मी.
नार्थ.म.लु.ले.नी.हृ.र्ण.म.र्ण॥अ.न.का.नि.व.लो.म्या.नि.द.र्त.य.द.वि.म.लु.ल॥उ.डा.दि.क.धु.पु.या.दि.पा.ग.म.र्ण.दि.या.हि.की॥रु.ला.नि.ग.भ.पु.या.दि.पा.ग.नि.स.मि.ध.म.था॥मृ.द.क.ला.नि.न
ला.नि.त.दा.का.नि.स.मा.ह.न.न्॥अ.धि.वा.स.न.पु.र्व.कु.हार्थ.क.त्वा.दि.र्ण.व.लि॥द.त्वा.स.न.य.ना.ह.ला.प्र.ति.ष्ठा.वि.धि.हा.मि.ता॥ग.म.प्र.क.म.ल.या.द.या॥सी.हि.ना.न.ट.प.स.ह.म.॥गार्थ.पु.रु.
मूल.म.र्ण.ग.सु.ना.म.य.द.र्वि.का॥प्र.ति.ष्ठा.ता.सु.कर्.ह.या.प्र.मा.ल.न.क.दा.व.न॥पु.का.हु.ला.स.मा.न.रु.या.व.ह.वा.द.न.म.मू.ली.गृ.ह.उ.ल.भ.र.ना.अ.र्वा.ध.र्म.का.मा.र्थ.मा.दा.॥स
र्व.म.र्ण.ल.म.र्ण.श्र.या.नी.क.य.न.रु.व.ग॥य.द.मा.ल.मि.म.था.नी.अ.न्त्या.नी.व.र्जि.का.य.द.या.दानी.ग.म.ह.हि.न.ल.या.दि.ध.न.वा.पी.य.त.नि.वा॥आ.चा.र्या.य.प्र.दा.त.द्यं.दि.जा.द.॥क.न.य.का
स.वा॥त.उ.द.र्य.स.दा.व.स.नृ.प.व.न्ध.ग.न.स.व॥प्र.रु.र्व.व.त्स.न.का.र्यं.पी.त.व.र्ण.स.ल.ह.नी॥व.द.ने.न.प.ट.ने.रु.वी.म.धु.मू.द.न.नृ.वि.र्य॥त.स्य.पू.जा.प्र.कर्.ह.या.य.था.वि.रु.व.वि.सु.ने॥नृ.डा
दि.पा.व.सु.र्द.वा.दि.या॥पि.ग.न.मा.त.न॥ना.ग.य.दा.वृ.नु.या.व.प्र.हा.त्य.वि.वि.ध.क.ल.भ.त्॥म.रु.ह.मि.त.वा.यो.का.अ.य.ना.नि.क.ला.नि.वा॥उ.र्व.ह.त्वा.म.हा.या.नी.प्र.ति.ष्ठा.पूर्व.वा

मा

॥८५॥
॥१०॥

दिनी ॥ दवीपी ॥ गतावस्य पूजनीयादिनदिना ॥ प्रातर्मया क्रमसंस्था समर्पणी समस्तानी ॥ मनुजापः क्रियाहमः कर्तव्यसर्वसिद्धयः ॥ न करु कनन कनन मया विरुपाः
मजे ॥ कीनाहो विष्णुमाहो न कन्दमूल फलानने ॥ यवगमधूमरुकेषु हविष्यकृतलजने ॥ कर्तव्ययजनदद्याः सर्वकालं गित्तये ॥ नूननेव विधानेन सर्वपापक
कथा रुवत ॥ महापातकनामयः रुनुत्थकृतवान्पूजा ॥ दिर्जवृणसर्नहत्वा पिरुनुहत्वा समानिना ॥ नृपध्वनामनूना गुनगोतमका ॥ पर्ववर्द्धिगतावस्य गक्र
दवाः प्रजापते ॥ नार्थवसना कृत्वा बुक्कामहविष्यमता ॥ नृपविष्यनंदगर्वविष्णुगमलरुमः ॥ नूननेव विधानेन वदानुर्गुहृहीगवान् ॥ नृपकर्मनृकृत्वा पाप
वानमधुसूदनः ॥ नृपध्वो कृतवानाहि उषर्दगवथनवः ॥ नृपध्वो वृषभर्तृल प्रजापूनामकोक्तिरिः ॥ कृतवीसवगन्धर्व्यकनक्षामर्हानृपे ॥ ययनर्ककिमास्तु य
सर्वकालं यजीनिह ॥ नयामायः प्रीयावापि स्वाकृच्छर्नवमस्वर्ग ॥ यावद्वचमुमादित्या तावत्की उतिगसर्व ॥ स्वर्गविष्णुपुनन नयमन्त्रा कृत्यहृषिना ॥ नृगण ०८
हजायन्त नृपावदार्थपावना ॥ दवीपका सदावाजा स्वासुभाविगतावयः ॥ देहाकनिवसा ॥ पृथ्वीप्राप्तवनिपनामि ॥ ॥ ०८५॥ दवीपना ॥ नृपेलाकल्पदयपुरुषपुरुषमस्तुला

॥१०॥

रु

॥८५॥
॥१०॥

विभर्तु ॥ ०॥ ॥ विरुवविजयादवीपलपद्राकृष्णनिर्ली ॥ वनदाघनसिंहस्तु सर्वकामप्रसादिनी ॥ कृत्वाहमादिलारुनपूजयश्चक्रावितः ॥ सर्वदास
र्वकामास्य पूर्विका लरुतमून ॥ सर्वपीतायवावगसगधिकृतादिहिरः ॥ हार्मकीनघृतेर्कय्या लकमर्कगुक्मर्मा ॥ रुडीगुक्मे समीकय्या रुडाः
सनव्यवस्थिता ॥ नीलास्यलरुलरुका पूलपूजाकृष्णनिर्ली ॥ पुष्पनागकृतामर्हो पूर्विकविधिनायती ॥ कीनासिपूजयश्चक्रावितः ॥ न
र्वपीतायवावगसगधिकृत्समानिहिरः ॥ हार्मकीनघृतेर्कय्या लकमर्कगुक्मर्मा ॥ सर्वकामान्नवाप्राप्तिमुच्यतवक्रहृष्यया ॥ नृपसुसुभृषा ॥ ०८५॥ दवीप
नृपध्विहृष्या ॥ निवाः ॥ ०८५॥ दवीपका ॥ दिनप्रवनपालिनी ॥ उमनगुमधानीवसगूलावसुताविगु ॥ गोमेकृत्वा पुनृकसकिहृगुरुष ॥ ॥ ०८५॥ दवीपका
विधिना ॥ निवाः ॥ ०८५॥ दवीपका ॥ पद्मविल्वदधिसर्पिः ॥ सिलहामेव नृपदो ॥ नयनयजमानस्य देनस्यैव नृपस्यवर्तमानि ॥ ०८५॥ दवीपका ॥ पद्मासनवावस्थिता ॥

प्रमदुदे

सं ३

दवी॥

पाण्डुगंधरीदवी स्वयं विरुवादिता जातिका (भक्तपूषेष्ट पूजनीयास्वरुविने)। हसप्रलाह वीकृष्ट पथो हवस्य सिद्धिदा॥२४॥ स्वयं यत्रा जिता दवी सिंहावृत्ता
महावला। पितामहकृष्णकाया स्वयं खटकधनिनी। विनज्जठरा नन्दवा पुकि कृत रूपभा। कृत्वा सर्वपिहाननु पतिविविधविदिता। स्थापनीकावधलाग ताप्य
जापुनातना। महाविरुवरुपभा हामीकृष्णमचन्दनी। दधिरुकी चूर्णकीनी नेवई दिजतय्यनी। कन्याराजनपूजाच सर्वकामरुलपदा॥२५॥ जयती नन्दनकाया कृष्ण
शलासिधादिनी। खटकवा ग्रहसुच पूजनीयास्वरुविने। प्रलाकृष्णमकपूत्र गभगपूकपूयकेशयेयकृति पुरानकामान तगनात्रगहामने॥२६॥ विजयमानसी
कायस्थानन्दनसं व्यवहिता। यन्मामुद्रनधनीच वजाकृष्णकाया। सर्वरुचयलयात्री सर्वधनमरुता। वमकागीनपूनाग पूजना सर्वकामदा॥२७॥ मायाकथयकृष्ण
या खटुपासुपाशना। पाण्डुगंधरीदवी मालाचामलधनिनी। ग्धमवधसूत्रयाद्या पीतवकुपविहृता। सरुकावकृतापीता मदकृष्णमचर्विता। हसननमगिव जय
जिताविधिनामून। कीनकायसहामन सर्वहामावसिद्धिदा॥२८॥ दिगिदेवपूनीदवी ममाथवजयन्मून॥ दण्डसनसिद्धी रुद्रा सर्वरुचयलयात्री। रुलनीलासुलक

इमं ख०

ना मत्सङ्गगिरिस्थिता। रुलग्नापहानदा हवधश्चुरुषदा॥२९॥ (धर्मदत्तनवर्क मां पतयकृजसीसिद्धी) दण्डा कसुजधनीच वतह्नीयागमासिद्धी। जयहामार्चनदा
नगध्वदीनवलियिया। वसनिर्जसिहामन मध्वाकसुखदा यिकी॥३०॥ विमाहिनीरुमलध पीतवकुपमगमना। धजशलाकधनीच वधरुकाधनिधिया। स्वयं योवनरुच
हानकपूनरुविता। मध्वायसहामन पूजायांच पुरुषदा॥३१॥ विलम्बिकावधदवी गन्धवधकाय्या। सिंहासनसमासीनां सातयव विरुविता। ग्धमवधनन्दनीचवर्चिता
सितवाससी कृष्णमाधुन हामन चिकितार्थयसाधिनी॥३२॥ कीलकीकीलिकावृद्धी कृतवधकियालिनी। कर्मकामपुहृकाश्च जिहलकनरुखवी। वलिमीमोदनाहानी क
झगध्वजयिया। पुनरुकापुनरुहामन विकारिरुयनामिनी॥३३॥ (मेवीन) इन्द्रवधरुसां सर्ववीवविषयज्जो। वययद्रासनासीमां साकसूयकमधुर्तु। वनदाद्यतनपाद्यां सर्व
मात्यरुलियिया। तगनापुनरुहामन कृष्णमनपुरुषदा॥३४॥ पुनराविमलाकाया। पुनरुहानन्दवर्चसा। मृकाकसूयधनीच कमधुलुकनावना। गडासनसमानूटा। (धर्ममा
त्याम्वनधिया। दधिरुकीनादनाहाना कर्षुनमदचर्विता। सिमयकृजहामन प्राज्ञापूर्वपवर्चनी॥३५॥ (गहर) रुद्रविताकाया वसुका कालरुखभा। नृपमानापुरादवी समस्ता

पार्ति ३

प २

निकर्तु यापना

नावा २

दवी॥

लयले र्यता॥ वीक्षवादनगीता च मयक र्यत्र चर्चिता॥ अमकसु उदा मन सर्वकामरु लषदा॥ ३६॥ पुरुष कुरु वसी कार्य का विनी पृष्ठ सी स्मिता॥ अउदर्य वरु सा च सितवन्द
 नचर्चिता॥ हानक यूज (भराद्या सुनकवसना कला॥ यर्य हो दन पूजा र्यां उय हा मन सिद्धिदा॥ ३७॥ आधे मूनु वती धवीं सितवर्मा यव स्मिता॥ पप्रयथा दक कर्ना चन्दन से
 चर्चिता॥ हा मा भय न श्रं गी स्ता श्र हलक न्दा गन यिया॥ उगी ना गुनु हा मन सर्वस्वरु या य हा॥ ३८॥ विभव सी क्रिया कार्या यज्ञा मप्रति रुषदा॥ अवन स्वलक्ष नीच
 कनक सिता कला॥ पहा पति समा सी नां पूजय य म्मु रा विता॥ वम्य का गी नयू नो गे॥ सलरु त सितान मून॥ ३९॥ इ ग्ग दि ग्ग उ म रु वि पृष्ठ ग म्मु नि रु दनी॥ वम्य सि ग न पि
 ना क धा वि नी म हि या ध हा॥ तदि ना रु महा का ये रु रु ८॥ य वि वा रिता॥ न क स प्र क न य ध र्जिता म्या महा व ले॥ वरि ता ना ग पा ग न क वि हि ना ग ता स व श द वी ग ल रु
 ता॥ का र्का ८ स र्व त र्म मू खान न॥ पा द य म्मा स न च क॥ ए का र्ह वि नि व रिता॥ ए व वि ध न वृ य द प ना व स स म रु ता॥ पू ज य त्ता र्ता य म्मु ग न्ध धू य अ उा दि रि श॥ हे म वा उा त य य
 का न या य स र्गा उ ने॥ सलरु त सितान कामान् वि गु म्मा जी व त समा॥ अ नू काना नु द वानां हा मी की व र्च त र्म ता॥ अ य र्ध ख रु रु ल श्र ने व र्ध य ता य र्म॥ ४०॥ ॥

१०५

रक्ताम्बरपरी धा ना रक्तवर्णातिभी वरा २

१ करा। रुद्र वर्णा क यु ला स्या हा र के रु र्धारिणी॥
 वक्र ४ र्धो रुद्र प्रिवंती व पीत वा सा॥ त्रि रु दरी॥ २

रुद्रा श्र द्रव्य वता वृद्धि ती या विं ग तिका वि धि॥ ५०॥ ॥ काली प्रव रु ना मा र्क द यु या (भय ता र्ध व त रुद्र ग (धायु हा व न पू जि ता पुरु दा यिनी॥ ४१॥ जो डी रु की ल क का र्का
 मू उ क रु क धा वि नी न क ग (धाय हा व न पू जि ता पुरु दा यिका॥ ४२॥ सो म्ये क या लि नी का र्का रु ल क या ल धा वि नी पी त न का य हा व न हा म न च व न यु दा॥ ४३॥ सा ध व न स
 य धा रु य धा क र्क वि रु लि नी न क रु द्रा य हा व न सर्व कामान् यु य रु ति॥ ४४॥ नि रा ध रु न य र्वा की म यू ना स न र्म स्मिता॥ पा ग न कि क ना द वी वि न या क न का क ला ग न्ध य
 धा य हा व न च न्द ना गु नू च र्चिता॥ पू जि ता हा व हा म न सर्व कामान् यु य रु ति॥ ४५॥ य वि श्र यं यि उ द वी म य नू या न ना स नी रु ल रु द्र ध र्वा व त्स स र्वा रु व न रु वि ती॥ उ रु
 पी ता न त न क ग न्ध धू य वि रु के॥ पू जि ता सि हा म न व लि दान न रु दि दा॥ ४६॥ य ना थि नि रु नू या रु हा न क र्क र्क वि ती॥ द रु स न स मा नू र्ण प द्म रु लि क धा वि नी म धू
 माला सु जां यी तां स र्व ग (धाय च र्चिता॥ व लि मा ल्या प हा व न रु व न न गुरु यु दा॥ ४७॥ अ न न्द र्थ वि न श र्थ रु ल य दि न धा वि नी उ दा न ग स वि रु रु रु वि ती नि व नू पि धी॥
 गी ध मा ल्या प हा व न पू जि ता सि र्ग य क उ॥ य य रु ति उ रु रु कामान् उ य हा म न सा नू र्ण॥ ४८॥ वि रु हा ना क रु का र्का वि रु च क ध नू र्ज ना पू जि ता गी ध मा ल्या य व लि
 पुष्प २

रक्तवस्त्रा रक्तनेत्रा दि क रूपा समुज्ज्वला ५

३२

शरहस्तामलो ग्रावरिपुजि द्वा गिनी परा १

दवी॥

होमनसिद्धिदा॥४२॥ अनलमूषिकाधवी रत्नसूत्रा कक्षाविनी नकुवाक्षयहानेन घृणता हवना गुरु॥४०॥ मारुवनी वृषा मूढा त्रिभुजा रत्नधाविनी वीर्यादा
नगीलाच हात्रकं यूनरुषिता चन्दना गुत्रदिष्टा गी अतिवम्यकपूजिता वलिमामालका हात्रो हवनार्थिगते गुरु॥४१॥ कालमूर्ककमानी तु मयूनासनगीकेरु
त्रिदलीवालनूपाच २कमाल्यासकृच्छ्रा २कवासावलिंगश्च कीडमसिसवधिया पूजिता विवदवी हवना हनृगी गुरु॥४२॥ सिद्धार्थवैष्णवीकाया गीखवकं
गनुत्तमा चनमालाकृतापी जी पीतवस्त्रा उभाभरता पूजिता गन्धपूयाश्च कीर्ती चमकचन्दनेशवलिल इकदानन सार्थिवा हवना गुरु॥४३॥ त्रीडसूत्रवना ध्वजाग
ऊनाजी पविस्त्रिता वज्राक्षयधनाधवी हात्रकं यूनरुषिता पीतगन्धपराधनी वलिमाल्या निवृद्धनेश कृच्छ्रमा गुत्रकथून हवननवनयदा॥४४॥ वैवस्वती एक
रुद्या इर्मदमहिषापनि रत्नवास्या कपालन पिचनी दक्षुधाविनी २कमाल्या कृतापी जी गन्धसवसूजिता वलिहामाद्यदानन सर्वकामरुलपदी॥४५॥
३॥ इन्द्रास्थ अथाना उ कनालवदना दाला सिंहरुवर्मधनाधवी नूनचर्मधविक्ता मूडमाला कपालाद्यो पत्रहस्तवलिपिया सर्वगन्धपराधनी यवहा

१०५

मनमहिदा॥४६॥ कनाली नूषिनात्रा उर्ध्वकणी रुयानका मूडमाला धनाधवी कर्ककायिसिमानता सर्वकक्षा पराधनी मासासवयपूजना विल्ला गुत्रघा
कीडहवना कूरुदा यिका॥४७॥ नकाक्षयिककाया उष्ट्रावृदा महागुजा पागदक्षुधालास्या सर्वसत्वरुयकना कृष्णगन्धनूलिका श्री वयिके रत्नरुपिता॥
वज्रमसवमत्तादा ऊवाकसुमवर्जिता गेलायका महाकक्षसा दुर्मासवलियिया जयहामावनाधवी सर्वोष्टरुनिवाविनी॥४८॥ आधनवृद्धिदि ४ कायाधिव
मातावद्रुयजा रुद्रमनसमावृता मारुवनी लकेवृता रत्नपूया परहाच गिगुमवनकाधना वादुर्वधनाधवी कीनाहवस्यसिद्धिदा पूजिता यकृता नीवेचन्दना
गुत्रवर्जिता रत्नककालहामाद्यघातकी रासनगुरु॥४९॥ कृयुवधिका काया उष्ट्रावृदा महागुजा उर्ध्वकणी कृष्णकाया निमसिसास्त्रायवधना नागरुवनरुषा
श्री कनालवदना दाला खड्गखड्गकक्षानीच कर्कका मूडधाविनी मारुवनी पवनाधवी सर्वधनुनमरुता हमजा वलजावकी लिलजा विज्जापिवा स्थाया पूर्व वि
धानन सर्वकामपसाधनी॥५०॥ मारुवका गुडकायो विंशहस्त ४ सुनधन ३ सुवृत्रेववावाथ अकविध्वनाखवत् मऊवका वरुकाया लमवो (५)

वगु ३

व ३

क (६) १

[illegible]

श्रीरवन्मधयुगविक्रयकोलितः। सर्वरुवदगमराद्यं नकमाल्यामनयिणी॥ वक्रोसंपूजयद्वैकालंयुक्तनरावितः। सर्वनिकामानवाधिति युगपीठद्विमुच्यते।
नविहामाद्यगममिदत्वागमधमायुयात॥ १॥ वषट्कारवत्सूर्यः सूनकायुगमूचत। यष्ट्यामविद्वैद्वयगिध्वूययविष्टकेः॥ सवषाण्डुलेद्विद्विद्वि
गकजकतथा। अथत्तुसमिधाहामाग्रपीठंवेधादिति॥ २॥ अथवामिधूनकायः। उक्त्विति युगंयजतु। नकपीठापरानवहमवमुखलासवेः॥ यष्ट्यागवःपकर
या युगपीठनिवातनः। हामंविनृतिलायेधजायुःसंपददायकं॥ ३॥ धातवक्रिनियष्ट्या युगवर्द्धिपूजयत। मिगनकायचानलगध्वययविष्टकेः। विद्वमा
त्पलेवेष्ट्याहमरायकासनः। युगसूर्योपकरुवो सर्वकामरुलपुष्टो॥ कृष्णमागुनकयुननकयुष्ट्यापगमरितो। अशुनवर्द्धनकृष्णभूतिपीठयुगरीडनी॥ ४॥ सि
हमिषाप्रियष्ट्या युगंत्वेष्ट्यपूजयत। हमन्दनीलको युगसूर्योसूगमरुतो। मालनीवक्रागमक कृन्वकसमाधनी। यष्ट्यास्वस्तिकध्वजोपीठुडिनीवनदायकः॥
५॥ यष्ट्यावनूगःकथ्य अरिर्वध्रयुगं तथा। पूषागमसूर्य युगंमौक्तिकठं कृन्व। गतयष्टिकयुष्ट्य कयुनोनुवर्द्धितो। दत्तामौक्तिकदानन्द युगपीठयथाह

श्रीपति

को। रुक्मायुगसूर्योऽनु आयुनायाश्रवद्विदो॥६॥ विवस्वानसफमकार्यः। यि श्रीं वतियुगकथा। गच्छस्त्विकजोदवीनाउतोयत्रिकल्पितो। गधयुष्यायरात्रववक्रु
 नदरुषितो। उपरामंयुकरुषीं सवर्धननिधनव। सर्वकामानवाप्नोति युगपीठं विवाचयन्॥१॥ वृषिकसविताकार्यविल्वमियुगमूयात। तोवजनीलसीरुतो
 रुसधानससञ्चितो। नकपीठावृणुक्क वसुसीवतवर्द्धितो। कलाकुकुमभाशो यकजात्यलमालिनी॥रामेधवदलनागं घृतकोव विमिश्रितं। रुमानंदकिं अ
 दया गधावमुवर्त्ति कुर्वी। युगसूर्यवप्रो पूज्यो पुष्करमकुचतुर्थको। सर्वकामानवाप्नोति युगपीठं विनश्चति॥७॥ वृषाधनुषियष्टया युगसामाविधीयते। म
 रुनीलरुवःसूर्यः। उकिंकायासुधायुगी॥ युगसूर्योऽनुमसो सितकुकुमवर्द्धितो। वसुयुष्याकततायध्वनेवशयुजितो। दिवाईषथमाकन सर्वकामरुलय
 दो। युगपीठं निवाचय यष्टयोऽविमंयुगो॥८॥ यष्टयायुक्वस्तुष्टा वृद्धियुगसंयुगः। कनविन्दुन्दनीलाको यष्टापत्रिसुसञ्चितो। चन्दनागुचकयूनि प्राचना
 मकुवर्द्धितो॥ नकवृषासुवक्रुशो मरुचमिनिरुषितो। दत्तात्रीनादतर्ध्वयं पुष्पनिधिससीरुव। सूर्याःसमिधाम्ना वक्रवन्दनसमवाः। ततःकमाययदतीय

गवभीदिवाक्यो। मधुलाननमकुण आमसुद्रायुगननु। द्विजानान्दकिर्धदत्ता सर्वयागरुर्ललरुतं॥ युगपीठं नजायत तस्मिन्नुद। मरुमून॥ यष्टाय विधिमीयनः
 सयुगः। युष्टोऽविशः॥१०॥ कुकुमी। अदि यष्टया युगमाभिनमवव। दहपदकोदवी युगसूर्योऽनुमसो। नकपट्टयत्रिकुनी कयूवमदवर्द्धितो॥ कद्रुकुकुकोवृषयुष्या
 पीठविरुषितो। दत्तादवदलध्वयं स कुवक्रुसाविर्ग। पञ्चमननकुमकुण रामे कलाकमाययत। द्विजानीदकिर्धदत्ता वाजपयदललरुत। वक्ररुणां यया रुतयु
 गपीठं नजायत॥ वृद्धाय कथिर्धदं वृद्धावस्थापनकय॥११॥ मीनेरुणितजया युगध्वपिरुगकथा। यष्टयो युगसूर्योऽनु पद्मन्दुमेनिसञ्चितो। रुमगाजगय
 कुम्भे जातिकामदवावर्द्धितो। कनवीवक्रतापीठे काद्रिकावजुजाविर्गो। नकवक्रुपत्रिकुनी ध्वयागुनुसुगन्धितो। दधिदधादनकीत्रया यसं वलिशाउनी। कलावादि
 दवन युगनीरुदयनकु। दत्तादानीद्विजानीनी रुमरुषितवाससी॥ ततःकमाययदतीयावमधुरुलयदो। वक्ररुणा सुवायान विरुहया वि। मध्वने। तोयुग
 को पुष्यष्टयोमहं सीमोस। मरुमो। युगपीठं विनामय सर्वकामरुलयदो॥ यमादिविकसूर्यकु नानायययुगविर्ग। यष्टावक्राकन्यायम पुनिमामगुलपिवा॥

द्वी॥

[illegible]

मधुलूकनाम्बुडी। नुडानुकपालशृला। कदवाः खखायुधकिता। वसवावलुसंभावे प्रकगीखाकिता। रुनि। मूलधा। मासि च काका। निवसूया। शिकारुनि। यष्टयाः सर्व
रावेन थागदायाग्यदामून। विपूरा। सिद्धिदावत्स। स्वाकषधुयुडिता। मूलमन्त्रेः स्वर्कदीप। कुंकावना। रियाडिरे। चन्दना। पुत्रकयनि। मदवा। वनकृकमे। गन्धधूयादिनि
व्यास। पुत्रकृकनखसम्भवे। वम्यका। त्यलपडागि। जागी। कडकमालिका। विल्वय। पादियुध्यामि। मन्त्रय। प्रादियपिका। मेवडी। चरु। रुकानि। द्यतयुध। दिल्डुका। वलि। गन्ध्यादन
दीर्घ। दधि। कोड। विमि। जिता। पध्दन्ती। लवडादि। नत्तानि। बडवा। ससी। अलुडा। पुजरो। दानि। विवि। जान्यरुतानि। वधु। ऊमा। ला। वितानानि। वात्रुया। गिका। नयत्। पताका। वामनादी
नि। वडुधा। यनिकल्पयत्। ककिनी। शयवडुलं। द्यध। गदवना। कली। कर्ल्यी। दवना। गभर्। विवि। उन्दु। सदा। यमी। उवि। सन्नद्ध। मन्त्रु। मीनी। ध्यानपना। यग। गतका। मयमद्वं। द। ना
गमत्सुववर्जित। आत्मानं। पूजयि। बाहु। सगन्ध। सितवासस। समूक। र्ण। यऊदवान्। स्वर्क। यासनं। सिंहातान्। आकाशना। र्थ्या। आदि। रुमपा। प्रदा। प्रयत्। उक। विल्व। दत। युष्य
दधि। इव्वी। द्वा। म। किला। सा। मान्य। सर्व। दवाना। मर्था। र्य। यनिकल्पित। मरुवा। धधि। इव्वी। दि। मानसं। वा। प्रकल्पयत्। दत्तार्थं। पूजनं। कार्यं। वदा। ज्ञेयं। कपालया। गगना। मयुद।

दवी

भक्त कलादिगवदीयुगी मृदादिदर्शनकार्य अर्थदत्ताज्यादिव कृत्वा यवाय तदत्वा वलिदानं यदादिष्ट वलिकृतपिभचष्ट दयात्रकागधयुव। निवादिऊफका ना
नी नागनीयतयायसी कृतीनी पिठदवानी रुवि र्यकषुवा सर्वदेहानी मत्स्यमीसानि धवीनीय न लोदनी वलिपूजा पुदानात् नतीहामी समावयत्। रुसादिलकिनेकुलुस
मखात समीकृत। डाष्टमका कुली कार्य नारी द्वादशवायता। रुकुविकानसामान्या नोजयसमायमा। वरुनी गुलमाननयथ मा मखलारुवत्। एकनद्वितीयात्तु एवंकषु
तवही। वरुनमुष्कपूर्वादि नभक्तदल सन्निही। अष्टद्वकृत्वाकार्ने वरुयश्चक मयथा। यथा कार्ययकृत्वा कलुषेभानमावने। भक्तान्तेकथयसी च प्रतिवेदकापि
वा। खदिनासनवित्वादी पूर्वहस्तादिदेयतः। अष्टुष्टयनिभार्या यलुकककहृषिनी। पूरुनी पूरुनीद्वौ मध्यवखा कितानिनी। पूर्वसाईकेनीक्यात्तु कलुवृहंसूभ
रुनी। यलुकुलपनीभरुं उमियनुविनिर्गती। द्वाष्टुलीमूलदाहीतु कर्मयूक्तनमूलगी। गलुकागद्विजानीया क्रिहागनतुयूक्तनी। दवीसफाकुलाकाया पञ्चवृहंस
कल्पयत्। यीगिरवानीसमीकार्य मयीकार्ययलुकुली। गभक्तकृतिभार्या कन्यमाकुलित्रधुनी। यगनिक्रमवीकार्य यवययसूत्रविनी। एवं अविम्वकार्यतास्या

११०

हामीसुखावह। नमीगर्हावनीकार्यो दद्याद्विस्तपमागिता। वितस्त्रिपनिभार्या सुर्मवेवाउभकुली। वरुंकवदथायती दग्भकुलसूचिणी। ज्ञापीउततममी कार्य
मभक्त आयासवधनी। अष्टिकाकुंथामर्ध बालवेजायमासता। सुदृढवद्रिमकुल यलुयित्वातुपातयत्। अरुवात्तु सुर्मकान्तच तदरुवाप्रवीयजा। सामान्यायतना
भय आनयत्तुमराऊन। गनावमन्मयपाथ कलुपूजाविगनयसत्। अग्निवकविधानन सर्वकमीलिकप्रयत्। हेमनाजततात्रा वि काष्टमेलमृदानिच। वनादीनि
वयायाहि गुरुदवाक्किनेनच। अर्थनिवेद्ययुजार्थ वलियानश्चकल्पयत्। यद्व्यादवीविधानन हामीकृत्वा यथाविधि। मकुलीदर्गयद्वत्स लुयोतुकडपाविनी। मकुपुन
नरुक्तन दत्ताकुलित्रसिसुड। पूष्यानि कन्यादत्ता मकुलकृत्वापयत्। यतिनीयूयदवाडू तदगनविद्वम्भनी। एवंदृष्टानिवावत्स गत्वावर्द्धिदमापयत्। पूरुनी
इतिपदानश्च दृष्ट्यापयत्तुमृयत्। सर्वानकामानवाप्राप्ति विगताधामरुमून। स्नातामकुलार्थ कृत्वाष्टसर्ववाधिविमुच्यत्। गभक्तदिनअवमुनि नलवाडिगजा
दिवा। आवाय्याय पुदानार्थ आत्मानश्च निवेदयत्। विजानीदकिभदया कन्यकानीविगनयतः। लाकयूजायकृत्वा यथाहकममागता। दीनान्ध कपलानाश्चरुनी

दवी॥

मविधि॥६३॥ ज्योतकडवाच॥ सर्वलाकायकाय संप्रदायानुविस्तरात् । उत्पत्तमनीमनि (अ) गुमि कामितव ॥४॥ ॥ मन्त्रवाच॥ अथवा नवपापानाम्
पसंज्ञापापानां । अथवा कानिनाभय सृजकिदवामन । उत्पत्तानुविधिधवस्तान सर्वजन्मपस्तान । दिव्यान्वीकरोमाय यथावदिनिधाधत । सयाचीदिगम
तावरुत अथयदामागिमाककृष्टस्त्रीदीवगमाया सावाडकलविवादावा योनकयगया सनोवस (अ) धुगृहिकदग ४ पुरुषा । गडवाडिमूखा ४
समीयने रुक्मिणीनामायति । ॥ ह्यवे मादीनितान्यतानि सर्वाणि इन्द्रदेवतानि अङ्गुतानि प्रायश्चित्तानि रुवन्ति । इन्द्रविष्णुअधीवृषमिति स्त्रीलीपार्कद्रुता पक्षरि
वाश्रुद्रुतिरिचिद्रुति ॥ इन्द्रायस्वाहा । अथीयतयस्वाहा । वज्रायस्वाहा । इन्द्रायस्वाहा । सर्वपापमनायस्वाहाति यादृतिरिचि यथकयथकद्रुता ॥१॥ स
यक्षिर्दिगमन्तावरुत । अथयदस्यगमीन विष्णुनिरुवन्ति याधयावानकविधा ४ स्वप्नमस्वप्नादिहा जनमतिनिडा स्वात्स्यगृहदानववा सयागेच्छति कपात
पुविगति । श्रीगनीनमावा नृहति कृष्णमृदगनमादधमिहवमादीनितान्यवेतानि सर्वाणि यमदेवतान्यङ्गुतानि प्रायश्चित्तानि रुवन्ति ॥ स्त्रीलीपार्कद्रुता पक्षरि

११४

२

माद्रुतिरिचिद्रुत्यात् । यमायस्वाहा । यथाधियतयस्वाहा । दधुयानयस्वाहा ॥ इन्द्रायस्वाहा ॥ सर्वपापमनायस्वाहा ॥ इति यादृतिरिचि यथकयथक ॥२॥ सय
तीचीदिगमन्तावरुत । अथयदकृष्टरुसंक्षुब्धन्यसीतय आनययगु मग आनयति आख्यत रुचिपीलिक मधुकरोमक सूक्ष्मकालरुक इत्यवमादी
नि वनूगदेवतान्यङ्गुतानि प्रायश्चित्तानि रुवन्ति ॥ वनूगवाप्रियायस मिति स्त्रीलीपार्कद्रुता पक्षरिवाश्रुद्रुतिरिचिद्रुत्यात् ॥ वनूगयस्वाहा । अथीयतयस्वाहा । या
यायस्वाहा ॥ इन्द्रायस्वाहा । सर्वपापमनायस्वाहाति यादृतिरिचि यथकयथकद्रुता ॥३॥ सयदिउदी विदिगमन्तावरुत ॥ अथयदस्य मरि कनकवज्र
वमुवैदूर्यमरिविया भवारुवति । आनमृकाविवाविषयत मिषाविवाविषयने वम्भनिमधूनिवालीयत । अलप्रातिवाजायन वास्मीकावा द्रियन गुक्षव
का ४ पुत्राहनि तिलाग्नि यन नायाविन्दधनृदृष्टा रवतश्रवायसं भग्नभधूमाजायत । अथतनीवागे दर्शगृहाति इत्यवमादीनितान्यतानि सर्वाणि वेद्यव
देवतान्यङ्गुतानि प्रायश्चित्तानि रुवन्ति । अरिर्इदवमिति स्त्रीलीपार्कद्रुता पक्षरिवाश्रुद्रुतिरिचिद्रुत्यात् ॥ वेद्यवयस्वाहा । यथाधियतयस्वाहा । दिनयया

कवा॥

११५

१३

यथाह॥ ॐ श्वनाय स्वाहा । सर्वपापशमनाय स्वाहा । ॐ किंवाह किंरिध्वपृथक्पृथक्स्वति ॥ ६ ॥ सपुथवीमन्वावहेन । अथयदास्यपुथिवीसुटीनरुज्जिकम्यकिधूमा
यनिअकस्मात्सलिलमृद्भिर्नमिअकालवटकाऽपुथरुलाजिवरुन ॐ श्वमादीनिताम्यानिमिर्वाधमिदेवत्यान्यदुगानियायधिरुनिरुवनिअग्निरुतामिर्निर्
नायाकेइत्वापेश्रिनामाइकिरिइरुति । अग्नयस्वाहा । अर्धियाय स्वाहा । अर्धियाजय स्वाहा । ॐ श्वनाय स्वाहा । सर्वपापशमनाय स्वाहा । ॐ किंवाह किंरिध्व
पृथक्पृथक्स्वति ॥ ७ ॥ मानवीक्रमस्ववरुन । अथस्यरावावर्षाजिवास्वाऽयननिनिघनकिमिः ॥ ८ ॥ यमनिकावः ॥ अकिरुमगावीं ॥ गमपुधिवमवकिअस्यथ
हिमानिउत्पति ॐ श्वमादीनिताम्यानिमिर्वाधमिदेवत्यानिपायधिरुनिरुवनि । सामीवाजानमिमिः ॥ ९ ॥ लीपाकेइत्वापेश्रिनामाइकिरिइरुति । सामाय
स्वाहा । नरुगाधियतय स्वाहा । मानपाजय स्वाहा । ॐ श्वनाय स्वाहा । सर्वपापशमनाय स्वाहा ॥ १० ॥ किंवाह किंरिध्वपृथक्पृथक्स्वति ॥ ११ ॥ सपुथवीमन्वावहेन । अ
थयदास्यविधातावाधयन । अथमूकवपाइध्वनधवकरकववक ॥ १२ ॥ अथगुपुथस्वाहा । सवायसीकान्यत्यलमांशुमांसधेयस्मिन्नुधिववर्षाजियवहेन ॥

विष्णुवस्वाहा

३३

श्वमादीनिताम्यानिमिर्वाधमिदेवत्यान्यदुगानियायधिरुनिरुवनि ॐ दिविपुत्रिकम ॐ मिस्वालीपाकेइत्वापेश्रिनामाइकिरिइरुति । सर्वपापशमनाय स्वाहा ।
यथाह ॥ नकुपाजय स्वाहा । सर्वपापशमनाय स्वाहा ॥ १३ ॥ श्वनाय स्वाहा ॥ १४ ॥ किंवाह किंरिध्वपृथक्पृथक्स्वति ॥ १५ ॥ अमिकन्यादिः ॥ १६ ॥ गुरुयश्चलुकायन । गग
लाइध्वनकंडनादि ॥ १७ ॥ अकिरुमगावीं ॥ गमपुधिवमवकिअस्यथ
कविग । गगनाकुयनदिवी । निर्यागिरेवकायन । अथपुनमहाध्यावः । सुहिरीरुजकावके । वास्वायसीरुनः ॥ १८ ॥ श्वमादीनिताम्यानिमि
र्वाधमिदेवत्यान्यदुगानियायधिरुनिरुवनि ॥ गुरुगुरुवकाकि । मानज ॥ पूरुनेवलि ॥ दानेनिरेवदुजयनिली । रास्वनागुरुवने । लकुरु । मेमकाह । मेकाठि । सामी
नादिने । ॥ १९ ॥ अकिरुमगावीं ॥ गमपुधिवमवकिअस्यथ
पराजालियानि । अथपुर्वीकुरुवपागनाइकिइत्वापेश्रिनामाइकिरिइरुति । सामीवाजानमिमिः ॥ २० ॥ लीपाकेइत्वापेश्रिनामाइकिरिइरुति । सामाय
स्वाहा । नरुगाधियतय स्वाहा । मानपाजय स्वाहा । ॐ श्वनाय स्वाहा । सर्वपापशमनाय स्वाहा ॥ २१ ॥ किंवाह किंरिध्वपृथक्पृथक्स्वति ॥ २२ ॥ सपुथवीमन्वावहेन । अ
थयदास्यविधातावाधयन । अथमूकवपाइध्वनधवकरकववक ॥ २३ ॥ अथगुपुथस्वाहा । सवायसीकान्यत्यलमांशुमांसधेयस्मिन्नुधिववर्षाजियवहेन ॥

सार्ज

दवी

नृपती। ताजानमिति पूर्वयुगार्थं अनिनितासि पुरुषादिः समा कर्तुं यत्पूर्ववत्कति पूनः युगार्थी। सविष्वक्पुसव उत्पूनामीत्युत्पूवर्त तदवाग्निविष्वक्वर्त। ध्रुव
 सीति पयस्कृती प्रववर्तै के संयुक्ती सर्वशामय्यादिकी। विधानं विहिर्गर्तु उक्तं नमिताउसा। अन्यथा यत्पूर्ववत्कति सु प्रमापे त्यक्तवली। निवानमस्तु गच्छति
 सर्वदेवानसंगयः। यदवा दवदुर्जनं दवा सयक्तिमावयं। अग्निस्मात्तस्मादनसो विष्म नृधत्तं सः॥ पत्रिसमस्तुनमस्तु॥ १॥ मानस्माकतनयमान आशुषिमाना
 (मधुमाना) अग्निधुनी मधुमाना वीर्या नृदरादिना वधीह विष्मकः सयमित्वा दवामह॥ उपलेपनमस्तु॥ २॥ त्वामिष्टं धिन्न सत्यं नवस्थाकाष्टा सर्वतः सत्त्वं त्रिभुव
 डादुरुधुक्क्या मरुत्तवानाः। दिवः। गममर्थं यथा मिदु सकिन्न सत्त्वा वाजिनेति श्रुते॥ इत्युत्पूवर्तनमस्तु॥ ३॥ वृद्धं गच्छ (मधुमानं) वर्वदुर्गो वं पिधानं दवसविता
 यनमस्या यथिवी सतनयालो यस्मान् ददियि कवयं दिवः॥ उक्तं नमस्तु॥ ४॥ दवसत्त्वा सविदुः पुसवग्निना वीर्या यूप्रा रुक्माया। अग्निना क्वं यज्ञेन
 तजसु उक्तं वर्वसाया रिषिधमि॥ अत्युक्तं नमस्तु॥ ५॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककृत्यतिः यथिवी अयं अया ० नगां सिजि वति साह॥ अग्निवाहनमस्तु॥ ६॥ ॥

११७

समिधाग्निं दवयगच्छते धियतागिर्था अस्मिन् रुक्मा इहातनः। स्वसमिधाय (मधु) विधाय तीर्त्वा इहातनः अयय जातवदसः। समिधां नमस्तु॥ १॥ दिवः अगर्हः सम
 वरुता (युक्ता) सयजातः पत्रिपक आसीत्। सदाधर्नं यथिवी आमूर्गमां कस्मै दवाय रुविषा विधमः॥ उक्तं नमस्तु॥ २॥ आपादिष्टा मया उवस्तान उक्तं दिवः तुन मेरुन
 नय वज्रव यावः गिवतमान सः। प्रतीतायुधमस्तु॥ ३॥ कयान्तिरु अरुवदुर्गी सदावृधः सखा कया सवि रुयावृता यनीता। पत्रि रुक्म नमस्तु॥ ४॥ यविष्म
 वेष्टयो सविष्वक्पुसव उत्पूनामि अदि दनय विष्म॥ कदनमस्तु॥ ५॥ इत्युत्पूवर्तं वायवसु दवावः सविता पार्ययतु (यष्ट) तमाय कस्मै (य)। अग्निनृपताम
 नमस्तु॥ ६॥ ताजानमिदु मवितामिदुं रुवदुर्वं सूरुवं गूवमिदु आकयामि गजं पूनरुक्तमिदुं खलिनामयवाक्ष विदुः। अययगर्थनमस्तु॥ ७॥ अनिनितासि सप
 न्रकिदाजिनं दवाजं धार्येसं माग्नि आदिष्टेनासातासीत्। अयसमस्तुनं विष्मार्धं (य) यूप्रा रुक्मा दवन् दवावृक्का वयं अमि॥ समा कर्तुनमस्तु॥ ८॥ यत्पूर्ववत्कति युत्पूव
 अवागयः। युगार्थनमस्तु॥ ९॥ ध्रुवसिधुर्वं ध्रुवर्तं ध्रुवजीवर्यं ध्रुवमिष्टं। दवानामसि वक्रितर्म सत्त्वं तमयं यिक्तर्म इष्टतर्म दवदुर्गमं अर्द्धमसि रुविद्वानं ददु

धर्मा

दवीलाकभगवति॥अवलापुजयदेवीपतिपथादितःकमात्।वक्त्रमूर्तिगतांशुक्रयोद्योरोज्ज्वलमपिवा।अथवास्वविधानेनयविज्ञाद्वाहनीरुवत्।वक्त्राभ्यामागला
भननोगकन्दतनूस्मिता।अविमातवन्प्राप्तुमकलायमन्त्रपगा।वृषविष्णुसमाकायाकालवृद्धसमाकृतिः।गजवृषाशययव्यादेवीगन्धश्रुतादिरिः।यथमवाप
मपूजां।वृषकर्मवृतादिव।कृत्वाकामानवाप्रातिविगताया मूनीश्वरः।श्रीश्रीश्रीसुकरुवापूजागमनीनिशि॥महासर्वविधानेनसोत्रामदिरुल्लेखरुग॥अथ
म्यांशुहोमपूजासायवासमुपूजयत्।विष्णुलाकमवाप्रातिसर्वकामसमुद्दिष्ट।तत्तुवेकामयदेवीपिठव्यामहादया।कन्यासुतुनवोवत्सपूजनीयायथविधि॥
श्रीजज्ञीतिथिमासाययावच्चन्द्रार्कसंगमे।तथापिमहतीपूजाकर्तव्यापिठदेवता।जगदिषुयदानतुअथयुगविवर्तयत्।अथवेष्टवियन्तानांजलाभिरुगुयातिनी॥
चतुर्धर्माहवत्पूजाअमावास्यातुकाभिकी।कन्यासुतुनवोश्रीश्रीश्रीपूजाहम्यापूजयत्।सायवासानिभक्तुमहाविरुवविष्णुने॥पूजासमानरुदद्यावर्ककवा
त्रुलपिवा।पशुपतिः॥यकर्तव्यागवलाजवधसुथा।वानकयमुनकाभकार्यःसर्वविभक्तय।अथयायुकर्तव्या।यायवर्सेयकीर्तिता।गजासुवमहायुष्यतस्मि

१२१

नदवीपूजयत्।गुलासुदीयदानतुपूजाकार्यमहारुला॥दीपवृक्षाः॥यकर्तव्यादीपवृक्षासुथापना॥दीपयाजयकर्तव्या।चतुर्धर्माकुरुष्व।सिनीवाली
यदावत्सुतदाकार्यमहारुला।सर्वमर्वयकर्तव्यावलियूजामहासुर्वदेवतानांसमूहानां।कथानिधोक्कुरुद्विमातानिवाजनेयकर्तव्या।नृनागपुत्रगदिभू।कार्त्तिकी
कात्रयपूजायागदेवीधिर्यसदा।वृषविष्णुनिवादीनी।तुपूजामहारुला।गमसुनेतु।यकर्तव्यानीलीवावृषमूलेजगत्।सर्वयकुरुल्लेखमन्त्रयायुयादविवाच
सात्।मन्त्रार्थपूजनेतयकर्तव्यासर्वसिद्धय॥मार्गपूजायकर्तव्या।अहिर्बुध्नकमपुत्रा।सामायाःकात्रयपूजा।सर्वकामरुल्लेखदी।युधय्याविष्णुकलुकर्तव्या
पूजयकुर्यात्॥चतुर्धर्मापुत्रमायस्यमहापूजाविधीयते।मायापूजायकर्तव्या।देवीदेवमन्त्राभिर्गयत्।रान्द्रावपूजयदेवी।अथुक्तिचयामना।मानवानांविभक्तयतय
पूजाविधीयते॥अथसर्वगतादेवीसर्वदेवतनूस्मिता।पूजिताविधिनावत्सर्वकामानुययचुति॥॥॥एषादेवीपूजा।वृषदयपादकमपूजा॥॥॥॥॥मन्त्र
ववाच॥अथमधममपूजा।वृषासुतुनदेवायत।अथवावाचिनमासि।कार्त्तिकीकार्त्तिकस्यवा।गविवाहाथकाकार्यमायादेरान्द्रावपिवा।निवावामकुरुल्लेख
उत्साकर

ददी॥

रुनीयुयीमहाहर्ली। अथत्वा इम्वनीयागं विवाहविधिनाहवत्। समावदीरुवली (थ) डत्संगं कलियिवा। चमसावस्ति कारुडा। दीवासनवतायिवा। वत्सं सर्वम
संपूर्णं कन्यासावस्ति कारुवत्। अर्लीकृत्य यथाभश। होत्सर्गं कानथमून। विवाहमेकवत्सीकं नीलनरुवत्सदा॥ वृषभजम्भमधस्य यागस्यरुलदायकं। जाय
वनवहवः पूजायुधकोपि गयविडत्। यजुदाअधमधन नीलेवावृषमूत्तजत्। नोहि (थ) यलुवधेन नीरववर्षेव नावृषः। लीगृत्तागिबस (थेव) सर्वनीलवृषः स्मृतः। अ
दितात्तु अर्गं पूर्व गभक्षलीकृत्यसर्वेन। तफनवानतथर्कं याम्यश्ले समातिखेत्। धातुनादिगतावेन अयसनाथवाक्येत्॥ अर्धं कृत्वा अवाध्नाति रुलीवाडिमखादिनी। य
मूदिष्ठात्तु जवत्सं सल्लंतावि यात्रभग। यथागिवा मडा अर्धं पूडिगासर्वकामदा॥ अर्धं दववर्षं यद्व्य अतर्कलरुगहर्ली। मेरुला विहिरियव यच्च भदानर्कं रुली। सहस्र
कावश्चन वसासंनिदिवायत्॥ गभक्षमीरवन्मा (र्ग) गभर्धरुलेदायिका। कीनहमीमहायुध। चन्द्रलाकरुल्लयदा॥ दध्राविक्रयर्पयाति रुविषावविमं रुली। मधूनायव
ताः सद्यः। निर्वगभलिकानूजः। वास्ती नीवानयुजाहिर्मं गलासंययकृति॥ इहैव सर्वकामानि प्रदद्यात्सर्वमेभन्ता। यथेष्टितानि लाकानी निवायूरुनयुडिता। ययकृतिस्व

१३३

बलाके प्रकान्यपि समन्ततः। कृमा नाम तठागनि दवतायतना निव। पूरुनि नवपि चर्षं कामदानं महाभूत। उपकल्पितं भूया (गव) यदि विधाय जायत। तदा युगादिषु
कार्ये तिथिषु सर्वकामर्पे। वेभखडुवस्य रुयाततीया नवम्यसौ कार्तिके शुक्लपक्षे। नरस्य मासस्य तमिष्यपक्षे। गुयादनी पञ्चदशी च मास्य॥ उपपूव चन्द्रमसाय वयति
आष्टकाया मयनेदथेव। यादीय मययतिले विमिर्षं दद्यात्पि रुयः। पुयता मनयः। अर्धं कर्तुं नन समाः सहस्रं बहस्यमत्तितना वदति॥ अतश्चकाले प्रवदानहाम मूत्त
रुथातायतनपूदलं। अतर्कगीर्गं सनसिद्धगीर्गं दववृषं सनयावदति। अथय कीर्त्तं सीकावविधिः। यथा महाभूत। दवतादिषु कर्तव्या। महाराग रुल्लयूरिः। मूलादहं
दीयुर्षं जीर्त्तं सीकावकरुवत्। तस्मादनाथजीर्त्तं कार्यं संपूज्यमून॥ स्वकीयं ववकी यथा यथा विरुवविह्वेः। स्वतावायवतावापि यमुसीकृतां सजान्। सयावचन्द्रस
थो (गो) कावकालं सखीरुवत्। लाकयुतयुधवानी विनडा ख वृकृष्टः। यथा (गभ) मधयर्कं ययुवामसमाः समाः वसतं विनडाकाक तथाव च समाः समाः॥ वसतं दिवि कृष्ण
त्मा जीर्त्तं सीकावकावकी। अनाथावासनाथावा पूजनीयाः सदा सदा। विगधनयन पूर्वसुधकाः सगतीं मने। यथुना चष्टवानादो मेनाकडमगकनी। ययतिनाच (गभ) मने

दश

१३५

पाधिपौहमकूठविनूपाके. रुद्रुवंगनमायन. सिद्धिपवनकुआका. हा. गोपेसदाठके. ववने. अद्वयविमुनामानि. दवदवसुधीमनहा. पूजा. ला. वाचनी. गानि. व
 म. पा. व. स. य. र. व. ॥ अ. १. य. ०. त्या. न. न. क. य. स्ना. ना. वा. य. चि. क. हु. वि. ॥ म. य. न. स. र्व. या. य. र. य. १. हा. व. ला. व. स. ग. कु. ति. ॥ ॥ ॐ. स्वा. ध. अ. ध. मी. ध. वि. ना. मा. नि. क. व. द. व. स. ॥
 ॥ १३ ॥ वृ. म. वा. व. ॥ वृ. व. म. वी. समा. दा. य. य. वा. मो. स. क. ना. नि. गो. ॥ रु. म. ध. ॥ रु. म. रु. नो. ध. स. व. को. पू. ज. य. न्म. ने. ॥ मि. वा. मी. पू. रु. यि. ला. तु. न. दि. न. य. १. य. य. कु. ति. ॥ हा. व. रु. क. य.
 वि. या. य. नो. दि. धी. वा. मृ. ॥ वा. पा. वा. न. वि. या. ॥ म. रु. व. रु. स. म. य. नी. य. मि. रु. न. ॥ ध. न. वी. रु. स. व. मा. ने. र्ग. रु. दि. व. य. वे. दि. ज. ॥ ग. गु. हा. म. म. वि. वा. न. रु. द्वा. ॥ ॐ. रु. अ. म. ग. य. ता.
 य. न. ॥ स. मृ. द्वा. ध. न. ध. न्वा. र्वा. पू. रु. मि. रु. स. मा. क. ल. ॥ वि. ग. ना. वि. रु. व. द्वा. म. व. ग. म्वा. स. य. रा. व. न. ॥ या. वा. न. स. मा. य. र्क. या. य. नी. पू. रु. म. ल्म. ने. ॥ य. य. रु. ति. मि. वा. म. व. यी. य. नी. रु.
 वि. ना. ल. न. ॥ स. स. र्व. या. य. १. १. या. र्वा. वि. मृ. क. १. १. रु. म. द. ॥ ॐ. रु. सा. के. रु. व. द्वा. द. द. न. क. प. न. मी. प. दे. ॥ ॥ ~~.....~~ ॥ रु. नी. या. य. तु. रु. क. या. नि. ख.
 द. रु. य. ॥ म. रु. ॥ वा. व. ना. सि. रु. का. म्मा. १. १. हा. वा. मी. पू. ज. य. रु. न. ॥ रु. म. व. ल. मृ. उ. र्व. स. य. न्म. य. म. म. रु. दी. न. य. ॥ न. द. मा. न. म. न. ॥ ॐ. य. रु. ल्म. र्व. मृ. दा. द. नी. ॥ ग. न. जा. यो. र्व. नी. द. मी.

करु. धी. दि. ज. स. रु. म. ॥ अ. वि. या. गा. य. ना. नी. पा. व. न. वा. जे. स. दा. दि. नी. स. रु. मी. न. ल. पू. या. द्यो. स. व. रु. द. य. य. द्वा. नी. म. रु. पू. र्व. म. रु. हा. र्ग. स. र्व. का. म. य. दा. यी. के. ॥ स. रु. रु. रु. वि. या. ग. रु. न. रु. व. रु.
 न. रु. दि. ज. ॥ न. धा. धि. नी. य. स. र्ग. म्. य. वा. व. रु. न्म. रु. म. ने. ॥ ता. व. रु. स. म. मा. ला. व. की. रु. न. मृ. दि. न. वि. र्व. ॥ रु. रु. मा. गा. रु. ॥ न. का. र्वा. अ. रु. द्वा. न. रु. नी. म. गा. ॥ अ. धा. य. या. व. ला. दी. फा. ना. व. रु. दी.
 स. मा. न. रु. ॥ रु. वी. सी. पू. रु. यि. ला. तु. धा. रु. म. ल. न. रु. वि. न. ॥ रु. म. पू. र्व. रु. धा. ग. न्धे. १. १. न. वि. रु. य. धा. वि. धि. १. सी. व. ल्म. नी. य. था. न्वा. यी. स. र्व. का. मा. न. वा. पू. या. ॥ अ. धा. फा. न. व. मी. व. ल्म. रु. म.
 ॥ म. द. रु. पा. म. गा. व. ना. न. वि. धि. ना. न. न. सी. धा. म. अ. य. वा. जि. न. ॥ रु. व. रु. न. रु. सी. रु. स. य. था. द. वा. म. रु. १. १. ॥ अ. न. न. व. वि. धा. न. न. मृ. रु. ला. गु. ति. का. थ. वा. ॥ पू. रु. यि. ला. मि. वी. म. रु. १.
 पु. दी. फा. रु. य. य. दि. ॥ यो. पू. रु. का. द. रु. पा. वा. रु. रु. सी. वा. जि. म. ॥ धा. दि. नी. ॥ १. १. ॥ न. न. रु. वा. व. ॥ अ. रु. दा. वा. य. रु. रु. स. वा. दा. वा. ज. रु. स. वा. ॥ म. रु. धा. वा. मृ. ना. य. था. दि. जा. दि. स. थ. वा. ज. न.
 ॥ वि. य. य. न. रु. ली. य. स. अ. य. य. ल. रु. ना. य. म. ॥ ग. जा. य. ॥ म. रु. धा. वा. १. १. य. रु. रु. हा. नि. १. १. य. रु. ॥ अ. रु. रु. मा. न. नी. रु. व. उ. य. स. र्ग. म्. य. जा. य. न. ॥ ग. रु. क. र्वा. न. रु. दा. दा. या. गे. पू. या. रि.
 म. व. नी. ॥ मृ. ली. उ. न. मा. स्या. न. ग. स. य. गा. या. पु. जा. दि. के. ॥ न. रु. य. सी. रु. न. सी. रु. नि. रु. रु. वा. अ. रु. रु. पि. वा. ॥ य. रु. का. र्वा. १. स. दा. व. ल्म. १. १. मृ. स. ॥ म. रु. वा. दि. के. रु. व. ॥ मृ. ल. वि. न. रु. न. ॥ य. नि. १.

ना.

ॐ. मा. अ. द. वी. पु. ना. ला. म्म. व. ल. वृ. र्व. ॥ ३

दवी

स्वाद्याः रुतसं च याः शतार्थं मूलवकार्या यतिर्नमो मूलमनः । धर्मार्थकामना कार्वा सुदिहं दुः १ यययय । वृक्षवायायुनामकि मरुत्तार्थं वृक्षस्यतः । वाख्याता की र्ति यि यामि तान्
 ज्मेनकः २ वती । पूषा स्मार्त्तं मरुत्तं सर्वं पापपुण्यनी । उद्यातं मनोदिवं यय कथा विधात्रय । वल्ली कडुवकं भादि कडुकं वृक्षेति । निष्पुष्पं नरुत्तं निविगता कामही
 तले । कंकायातं ३ धालू कादिपत्रिवर्जित । ज्युत्तं चमका । भक्त वक्रला मथ ४ धल । तत्रुव विप्ररा तानि नृपदत्तदलानि । समधुन वक्रयाया रुतयन्त्रव ५ भरित । यकि सा
 प्रगल्भी । ६ कंकवाकय ७ भरित । जीव जीवकरुनी तं तययय काकल । वक्रात्र वक्रवचास वक्रवाका प ८ भरित ॥ निशियावावता श्रीकंका कका किलनादिता । मधुपूषा सवाया
 नमरुत्तयय वनधकल । यागी कथादिना ९ ध । कृयात्र १० धथवा ११ उरु । हिमाद्रा वक्रया नका सृष्टि विन्ध्या वलपिवा । नदीनीयूलिनवाथ सृष्टमवामनात्रम । सिकता यक्रताकी १२
 जलपक्षिनयवकत । यादु उरु सृष्टरा गीतका ननु सानसे १३ सृष्टरा सृष्टरा मय सवक्रुदी वक्रकावा । विकसितक मलवदना वक्रक कलहं सरा विदी । प्रादिनक मल ववान
 लिनी यय विलासिनी । भवमत्तु जसकृत् नृक खनरुन वनाकल । सृष्टी पृष्टी कान १४ अवत्सवयव दिता । समुद्रगीधकथाच्च यया याता १५ उरा गता १६ वलसी पृष्टी कावा धनिव

१३६

सन्निनिनाकला १ सनील निवृत्ता की २ उपा न्क वाखना विन । मिरु काल गजाना ३ यय नृक वक्र मृदा । विरिया यय ज्ञासक खगमगसम निता ४ तय कथा त्मदास्तानेय
 प्रमा ५ रुद्र ६ उरु । काशी कलायनृपुन रुधना नुरुवालसा । ययवामरुमातु ७ गमना यमदालसा । श्रीमती मुगक धवा पययू ८ रुद्रा विदी ॥ ९ रुद्रयय मुदा ज्ञासक तय क
 र्था धवामने । पृष्टी दक प्रव रूमो पद रिता यथजले । १० विन्ध्या विन्ध्या विन्ध्या ११ ककडी वासवर्जित । वरुगध्रमसायता यना १२ विन्ध्या १३ समा १४ उरा १५ कया मावा वा जयारु
 ये वृद्ध १६ सयनी किता १७ गताती १८ मृदु १९ को वयमि धिवा सयत । वलियुथा ययानु मल्लयुक्त निवदयत । जगत्तु सव १० सर्व यययु जालि ला विन ११ दि १२ भदि
 ज्ञानग १३ वेव यवान् १४ गगिन १५ आवा १६ वेव तत १७ सव निवृत्तया लुना हित १८ यय १९ यय गता २० दत्ता २१ कि मही २२ उरु । कलायुजी गगसासी वाजी मखिन यनिव २३
 मयु २४ उरा गता २५ भवत्स दधि दवर्द्धि दर्नि । पूषा वला कत २६ रुत गता जया वरा २७ रुद्रा मय ग २८ रुद्रा सितवा सादिदनी । लाला वा सर्वकामानी पूषा ययय की र्ति २९
 रुत पूषा लतव का ३० की विन ३१ उरु दामता ३२ तया मावा रुदी ३३ सासा दवयरा दिवा । वन्डा रुद्रा रुद्रा मरु पर्वता वा रुदी ३४ निगु ३५ वरुन स प्र विद्विष ३६ जया

दवा॥

वरुणपवित्रहृदिना खेवंकुडुकाकारगुरुति। वरुणयशसुपासाय स्वास्तेमस्यजयारुवतु। रुवगविस्मिर्तसर्वं तामो यस्यतनुर्हवत। मूर्ध्ना वादनमगस्य गमनीयं शुभावर्ह॥
 स्वप्नदुःखपयः कस्य गह्वरिहृदयं गुरुं नदीप्रातपदी मूर्ध्ना समुद्रालुवदी तथा। निरुतिगणपुसेन्यधरु जयं धातिमानवध। कटकादिजुर्लिकायाः पूयनाय सुखपदाः सुहृदयः
 नवेयश्रीलाराभ्रधनदायकाः नृधिराभ्रधिवधम् तननवायदिकविग। मांसाईरुकागलारु लरुगवादिर्गुरुत्। तस्यनरुत्तु उत्साह प ० ना कालिकाल काधयाम्यः
 यामाकनाकसुनयनरुयमयुर्द। यकयानाधगमिर्त्त कपमन्युवगनी। उरुवरययदस्वप्न वकमात्याम्वरागम॥ स्वभायु कयिलोकात् वराहादिनिग्रहयः दृष्टाशुता
 नृजयभकाथाः शुभानरुसपदी। वातयिरुकका। मधुमानाधतनवादिका। ग्रायसी नदसुनय पुकायानरुलपदा। पूषा नृकीर्त्तनदृष्ट मन्त्ररुगानृगहिता। नचखा
 यदिवा दृष्टा सुदायपथमं तथा। मध्यममध्य कलाः सध्वं वाकनायुलपदी। अ विस (नचि य दृष्टा म्) तथा पनिकीर्त्तनाः दृष्टा स्वप्रातः शुभानयागी कयानिष्ठानुकाय
 यत्। स्वार्त्तदवाचनेर्हामं जयं मर्त्तिसमायत्तु। कलागुरुं रवत्सर्वं गतामलुलमालिखत्। चतुर्हस्तं समानस्य यावद्वरुणं रवत्॥ मधुर्लं गयकहृत्तु अगदुर्द्वं न

१२७

कावयत्। विमलं विजयं रुद्रं विमानं गुरुदं जयं। वरुणमानधदेवधर नदास्वीकामदायक। नृवर्कस्व किकस्वाधर द्विदगधृतिमधुलाः। सितादिहृदिता काध वजाः काय्याः स्वा
 रुनाः मलिषष्ठिककीसु म् वजानिहृदिपूयजाः मलिषिद्रमवागध रुसना अरिमद्रिताः। सितसर्पधूपाद्या वजाः कलागुयातयत्। अमुनाजं न्यसे नन्दी ससुगयिपद
 लिवा। समुत्तानं गुरुं कला (ममयता) पलययत्। चन्दनागुनकयन् कादधूपादिवासिर्त्त। रुगाणीयमिर्त्तसिद्धं पूर्वपथिमयाहृत्। सोम्यस्व किकमत्याः ई २ २ ईवस्वुति
 पदजोः यशयजाष्टकं मध्य द्विगुणी द्विगुणी चवा। कानादिसमसुजालि कलिकाकमवाहली। यद्वीतथव (मवालि) स्वस्तिका नृत्यलानिवा सयावनस्वरुसुन्दु वजाः यागी समा
 नरुत्॥ मध्यमानामिकादुष्ट नृपवहासुखसया। आधमस्वाकुर्लिक ला पातयतविचकृदः। समनखाहुकहृत्वा विष्किनायुजवर्जिता। अरुद्वयवर्धे वृथा समाकाय्यवि
 जानता। संसर्कविषमं पूनं विद्विर्नरुषेना वती। यथर्त्तसर्पिर्त्तं ग यमालिखन्नकदाचन। सीसककलहं विन्वा दृष्टवैखुविग्रहं। अतिरुल रुवद्याधि निरुपीजाविमि
 श्रित। विन्दुकिर्त्तयमाप्राति गयुपकान्नसंगयः। कण्ठयाचार्यहनिः स्या दिद्विन्नमवनी धुर्वी। विआ (मवाहव) रुस्य २ २ द्रव्यसुतस्यच। अविदित्वालिखशमु मधुलकु

[illegible]

न श्रुताः स मिताः कृताः यथा मासा र्द्धं कुमारी समायुग युग कनाः कल्याण मरु कल्याः यथा वैव समा लिखत । यथ मम लुल दर्व जे वं वि श्रु सी मू री । ग वना य क सी यू कं दि ती
या व न । य ज त । स य रं रा ख रं पा या मे ग न्या नु वि ल कि नी । सी या स्य क म रं व क य धि मा र्थ पि ता म रं । क ती ये म ल ता व न । म दि न्या मू य क लि त । ना मा न त्रा क ना की र्त्त र य
द वा न् स मा लि ख त । यू ना दि ता य थ र्त्ता न ना ग न य कान यि न् स न्ना न । ग र्ध व यि न म र्थ व मू नी न सि द्धा दि ध य य त । य र्त्ता य स रु न क र्त्त । स वृ ज्ञा यै व मा त र १ र्त्ता न् वि र्त्त वि
ग र्ध व १ ला क या ला न् स न्ना यि य १ व र्त्त के र्त्त वि वि ध १ रु त्ता रु डी र्त्ता गु णा दि र्त्ता १ य थ र्त्ता यू ज य दि द्वा न् ग र्ध मा ला न् ल य न १ रु क र्त्त यै य वि वि ध १ रु ल मू ला मि ध र्त्ता ॥
पा नी य वि वि ध रु डी १ रु त्ता रु डी स वा दि र्त्ता वि । ग र्वा दि दि ता यू ज्ञा य रु य र्त्ता म य यू ना । मा त र्ता र्त्ता न् स न्ना यि र्त्ता यै य वि वि ध १ रु ल मू ला मि ध र्त्ता ॥
यू ज य त । अ य र्त्ता १ रु त्ता रु डी स न पि ता न रु त्ता । म न य १ सा म य यू र्त्ता र्त्ता रु डी य मा र्त्ता य वि म र्त्ता न् स न्ना यि र्त्ता यै य वि वि ध १ रु ल मू ला मि ध र्त्ता ॥
न ग र्त्ता यै य वि वि ध १ रु ल मू ला मि ध र्त्ता ॥ य थ र्त्ता यै य वि वि ध १ रु ल मू ला मि ध र्त्ता ॥ य थ र्त्ता यै य वि वि ध १ रु ल मू ला मि ध र्त्ता ॥ य थ र्त्ता यै य वि वि ध १ रु ल मू ला मि ध र्त्ता ॥

वस्तुना गवनादवी मरुदवीमना कमा। पूर्वेका वासिता पा ७ गुल्मा उरु मेका नती। बापका गजदक तु गतयुष्मा पुनर्नवा। उक्तीदवी निजा नूडा सर्वग
 अनिका धर्म। समा कुरुगुनीतान कल्प (गवनिधाययत) कल्यादी विजय धूमो वरु दय सम मले। सर्व वत्त मली कार्ने थाटना खनु पद्रक। व आद्य कुरु मरुत
 प्रविभा मूल धावधि। वरु म्वा के उरु म्वा पद विप्र क ग हि क। वा म्भ स पद्र म त्प र। ग रु सिक विना य के। श्री श्री व क व म्वा रु म् अमी दवी गुला निती। सर्व वत्त मली का १३१
 वः पद्र का य दिह रु क। रु स विस्म न उ क्ता य द म्भ क्क ल म्भ र्ने। स्ना ना र्थ सा इ रु क तु पद्र व रु म्ना निती। सवा र्थ दि गु दी य र्थ इ न्म मी नि मयी ० क। गज सि रु क
 म्गा य इ म्भ व त्ति रु विती। मिं हा र्थ सा इ विस्म वा क्क अ स न म्थ पिवा। सम पा द्ग रु क्ति वा रु म्भ य वि रु विती। व रु रु नी ल व रु र्थ म्हा र्थ म लि व र्तिती। व रु र्था य थ
 वा का य मि म्भु ल स मा पिवा। वा य वि प्र क पद्र व उ प व न्ना दिका व य त। अ न्ने वि वि जिते म्भ र्ने इ रु ल क वृ त्तान। ग्या द् व्वा इ विस्म य्वा उ रु रु स ल क र्मा
 वि रु रु धि क मि क्ति न्ने म्भ गु र्वा वि य य। य म्भ पा द्ग य य द्वा गज सि रु प द्वा ध क्ति व नि द क वि वि जिते। रु म्भ व त्ति रु विती। उरु पद्र म्भाना वा क वि। वा रु रु म्भु

[illegible]

वर्यकमलकादिती। कलनेर्वलियुषाथे। सविश्वेयस्यपयत्। अरुणा उगर्विभासगतमसाधिकं पित्रा। कलनना समाख्याता मधिकाना मरुयाकन। कयालीनमुमकु
 लमकलनजयनवा। दवीगुदुगुवनाथसाययथन अथापिवा। आर्द्धतउ३ समुदितं आर्द्ध पापहर्त्रुं। आर्द्धसूनामहाव नाथलीका। यतिष्ठिता। लीमाकत्रिक्रिया
 म्वा यरुकलमपमागर्ग। सर्वेताउ सस्यभत प्रभासयगवृद्ध। कसलमयनीयत३ प्रयत्नानास्य युनिते३ कलने३ साययडाजा नमायाथी ननमकुटा। सुनात्तामहिधि
 अतुयवमिडा३ यनातना३ वक्रा विरुध्वनूडय साध्यायसमनुद्रव३। अदिषावसवीनूडा अविनोचलिषम्वी। अदिगिद्विमाताव खाहासिद्धि। सनसती। कीर्तिर्लक्ष्मी
 यति३ प्रीय सिनीवालीकुरुत्था। दिति३ सुवसावेव विनता कडुप्रवच। दवपत्नीय यनाका दवमातवप्रवच। सर्वस्वामहिधि अतु पुत्रायामवर्मागना३ न कयालिमू
 र्त्तय पकाहानावसन्धय३। सस्यनादिनुगम्य कला३ काष्ठा३ कललवा३। सर्वस्वामहिधि अतु कालस्यावयवा३ पुत्रा३। वेमानिका३ सुवगम३ मनव३ सागवे३ मरु। स
 विताय महासागना३ किंयुनवास्तथा। वेवानसा महासाग दिजावहयसा यथी। सवर्षय३ सदावाय कवस्तानामियानिच। मनीचित्र वि३ पूवह३ पूतस्व३ कुड

६५३

मर्द४

नदिना३ २३३ समस्तमानय सनकाथ सनदन३। सनातनय दक्रथ जेगीयवोरुनदन३। उकतयद्वितायेव प्रिडा वालिकाथयी। इवीसाइ विनीतय कल्ह३ कात्यायनरु
 था। मार्क३ पुयादीयतया पुन३। गुरुविद्वन्मथ३। उर्व३ सखर्क कयेव यवना प्रि३ यत्रागव३। देयायना यववीगा दवनात३ मरुनूउ३। प्रीयना वसुनया धयवतयनायना३।
 निषाक्त अरिषि अतु सदावायतयाधना३। यवना सुववावन्ते३ पुन्यान्वायतनानिच। प्रजायतिद्विनि। येवगावाविष्यमातव३। वरुनानिवदियानि सर्वलाकायवाचना३।
 अग्रय३ पितृकुला जीमूता३ र्विदि। मजली। जगवायववदव३ पुन्यमीकीर्तना पुन३। मयेस्वामहिधि अतु सर्वस्यागविवेदने३। एवंपुन्यदेवतेमैकु दिष्टे सुधायये३।
 निवेनीयायनिजोडि उडमक समुद्रवे३। आयाहिष्ठिन। यमिपकवतिराथेवया। सर्वमकलमकलोर्व मुंकार्या सकपिवा यत३। गीखवम्ववैरुथे वाचाकममलेन
 य३ तत३ स पूजयद्विपान् पुन्यदवान्धडा युधन। नूडवाडीगजानमनुपनिजफानिधनयत्। दवनयउयनति अर्नका नापिपार्थिव३। द्वितीयायतितावशी गत्वा रु
 याइतागनी। दवाना मयनस्तान निमिलानि तुलकयत्। स्वाहा नूडायगद्वय विष्णुवव म्वातिव। प्रजायस्य कृमानाय विष्णुनायविनायक। सुशायिप्रदनाजायववा

हयविचित्रम् । मादृशं वनं दमात वा मृगं यैः सुखं तिष्ठति । नागमाज्जयनं कायं ततामाज्जयनं समाहृतं । कमणसी स्निग्धं चर्मं धृतं विष्णुना विष्णुः । वृषस्य वृषदं गच्छ
 उवाच पृथक् तस्य च । तस्यामप्यविर्षिहस्य वायुस्य वतः । उपविष्टं पुनर्धर्मं तिमिरं ४ सद्यो तिमिरं लेशं कृत्वा । लघुसमाहृतं पाञ्चलि ४ सौमि गावदं २ । यानुदवने
 ०११ सर्वं पूजा मादाय पार्थिवारु ॥ सिद्धिं दत्वा स विष्णुर्लायनं नागमनाय वै । नृपातिवता देवज्ञानं पृथग्धाम् । धिज्ञानं च यत्नं ॥ तं न हि नृपं न लेधुमं न्यान्
 धिक्कमागताम् । स्नानं दत्वा नृपं दत्वा नृनदीकृत्वा पुत्रं यथा नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ स्नानं नृपं समाचरेत् ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥
 वद वीति विज्ञाय वन्दे नृपं धुमाचरेत् ॥ नामाचरेत् द्वा द्वयं दुःखानकं १ पुनस्तु नागमान् । विरुवान् नृपरावै धृष्टं वृडांसमाचरेत् ॥ मिहसर्नसमाहृतं
 च दुष्कृष्टं तथैति हे भदीयेन उक्तं पृथग्धाम् स्नानं च यत्नं ॥ नाचनादिना तथाप्यध्वर्यं नृपं हलानिय ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥
 मृगय ॥ विनापि नृपं हलं दत्वा पृथग्धाम् स्नानं च यत्नं ॥ नाचनादिना तथाप्यध्वर्यं नृपं हलानिय ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥

कस्य उक्तं नायाचकं नननं गम्यति नम हलं यापले नृपि यदस्यादति निश्चयं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥
 धिक्कमागताम् । स्नानं दत्वा नृपं दत्वा नृनदीकृत्वा पुत्रं यथा नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥
 वद वीति विज्ञाय वन्दे नृपं धुमाचरेत् ॥ नामाचरेत् द्वा द्वयं दुःखानकं १ पुनस्तु नागमान् । विरुवान् नृपरावै धृष्टं वृडांसमाचरेत् ॥ मिहसर्नसमाहृतं
 च दुष्कृष्टं तथैति हे भदीयेन उक्तं पृथग्धाम् स्नानं च यत्नं ॥ नाचनादिना तथाप्यध्वर्यं नृपं हलानिय ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥
 मृगय ॥ विनापि नृपं हलं दत्वा पृथग्धाम् स्नानं च यत्नं ॥ नाचनादिना तथाप्यध्वर्यं नृपं हलानिय ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥ मृगय वदुः सन्दर्यं नृपं ॥

६४ मन्त्राणां

[illegible]

यामनिदाहयनेमायां कामदामही ॥ को वर्यां गमुं तारुयं नू कोदि ॥ गीवि न सतुदिगिरा ॥ ४ समाख्या तामुत ॥ कर्म समापन ॥ ५ दान पापान्तरु न च नान
कायिच ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

निम्न
 इति संहिताः प्रकृत्या पुनर्गति वासः पादगड्यात्। तानः स्मृता मध्यमया। नमः कर्तव्यं यत्ना मया। कति कथावितति मुदादना कुल उच्यते। अवर्तेन नुलान्युक्तः संहिता
 यावत्कर्तव्यं गतिः। चत्वारि विंशति चैव रुसंस्या दकुलानि मु। किं कुरुः स्मृता दिवस्त्रिमु द्विचत्वारिंशदकुलेशः चतुर्हस्त धनुर्द (अनादिका युगमवव। सरुयदरुवतु काजी गद्य
 ता द्विउर्गमर्ग। प्रकृत्या नः सरुयादि याऊर्गवतानुर्ग। प्रवमान विहा (गन वावह नः स्मृता उवि विन्दा रुन प्रवरु मो पूर्ण इति श्रुतिः। चतुवस्रमथावर्त यः प्रदी
 र्धमथापि वा। पूर्ण यथा कमा कुर्त मध्यमारुम कन्यसौ समन्ता याऊना न्यक्षे नन्दे दव पूर्णमर्ग। दगद वेवूर्व पादः ४ षष्ठिमाननुगुणः कर्त। दगि वा ऊर्गमथापि सौमान्यं
 सार्वभौमिकी। याऊना द्वा द्विमानानि प्रवागिस त्रिवर्गयत्। मध्यवाउ गृहकार्यं विष्णुमध्यम उवादिहः। कमा द्वावादि कार्यादि प्रकृतिर्वा प्रमः प्रमः। वसयन यथा दामा
 वर्तस कन्या मलना। कति मयुच इ (नैषु वरुपाका वकल्पना। चतुर्ध्वव कमानेन कल्पयद्विधिनामून। स्वातिका वविगी कार्यं पुनली लिः समन्ति। चत्वार्यक्षेधवा
 श्रीलि द्वावा रुमिवम रुवत्। नवदग्ग समुपतश्च सनि वै कुकमविती। नगर्व सर्वकार्द कर्तव्यं नृचर्कयिवा स्वस्तिर्क मध्यगतायै। क्रमानी पूज मववा। चतुः पाथ चतुर्ध्वकस

वृका मसूखावर्त। चित्रकर्तु विना गधः इः खिर्ग कत इवर्ली। नगर्व नयुगी सनि गली विह विह दिती। अग्रतः सत्यसादं चित्रया विह इवर्था। दिमर्ख कर्तु हीनव
 कर्त म (अ इ स विहः। तस्मिन् निमयाम्य कु नेमर्त धन इवर्ली। सौम्यं सर्वसखा द्वादि। पूर्वित वावूर्ग वगी। याम्यमा यः पदं पुथ नगर्व यतिवर्तनी। हीनवा यवर्ग प्रमः
 श्रीमाथ सुखयर्द। मध्यं चतुष्य (थापर्ग नयुगी यय कविह। उक्कसूर्ग हिर्ग विष निवसु उ स दस्तिहः चतुर्विंशति नाथकु हस्तान नगर्व यनी। अग्रमथ पुगी स
 नि कस्वा रुव विवर्तनी। अथकि कगता न्यक्षे पाऊर्मख निवर्गनी। नगवा द्वा विह कर्त स्वर्धमर्ग ता। इतिहः नगवा याऊर्ग खटः खट द्वा मा द्वा याऊनी। द्विजागी
 यवमासी मा कयसी मा चतुर्ध्वः। विगद्वर्ग विविस्ती (वृदि (म मार्ग मुनेः कतः। विगधन गुमिमान् ४ सीमा मा (नदिले वदु। धनं विदग विह्वी ४ श्रीमा
 वाऊयथः कतः। नवा वि नथनाम ना मसखाधः सुसंख यः। धनं विवैव वत्ता विमरावथः मुनिमिता। विकवा (अपवथः मु द्विकवा ययवथः काः डी यापथव
 कुषाद निपदं स्या इहानुनी। वृतीपाद लुई पादं याध्वी गयदिकः स्मृता। अग्रकनः पविवावः पादमा उ स्मृता स्मृता। पादको स उसावली कर्तवा अग्रमथ नहि।

[illegible]

सुचत॥ निविष्ममन्त्रालं यदकद्वारं सूद नर्म। गुहाखी यावर्तं दुर्गं पुवदनिमनी वि०॥ धातु न ठ क विद्धि तं सायसारं सुसीकृती। याकृती निविद्गं स्यात् सर्वद
नं सुलक्ष्मी। वहिर्निर्मसलितं कर्कटवृक्षादिवर्जितं। कुर्यन्निबूयकं सुखं सदा दुर्गविक्षायकं॥ अबदवधवि कुर्यं सावित्रीं सुखं वृद्धे॥ स्वल्पज्ञानं उनायनं
द्वितीयं धातु नर्म। पूर्वमन्त्रं धातुं द्वितीयं सायनं मर्तं। एतावां सुवि०॥ १४॥ धातु न ठ क विद्धि तं सायसारं सुसीकृती। याकृती निविद्गं स्यात् सर्वद
नायकं नवदुर्गं सुकीर्तिं। धातु न ठ क विद्धि तं सायसारं सुसीकृती। याकृती निविद्गं स्यात् सर्वद
हितं तद सर्वकामससाधकं। धातु न ठ क विद्धि तं सायसारं सुसीकृती। याकृती निविद्गं स्यात् सर्वद
यथायागं दितकामं जितं सदा। खलु सुदितं सुखं दुःखं निबूयकं सु०॥ १५॥ धातु न ठ क विद्धि तं सायसारं सुसीकृती। याकृती निविद्गं स्यात् सर्वद
१६॥ सुदितं सुखं दुःखं निबूयकं सु०॥ १७॥ धातु न ठ क विद्धि तं सायसारं सुसीकृती। याकृती निविद्गं स्यात् सर्वद

[illegible][illegible]

धिन्नलिङ्गी नञ्चरिक्कश नञ्चिन्धनया त्मका नञ्चो वक्रगालवो । यवगयन्नवाहान याक् पुविष्ठां यन्धयत् । आयुधो येन पुन्यानि सदा दाना लिका यथ
 ॥ अगमिन्ध ॥ साधना मयरागय कल्पयत् । विकर्म सर्व पुण्यानां बहिः ॥ सुलाखवाखेव । अद्यावत् पुविष्ठस्य दानेन समययिका । द्विपादा युदनेन दत्तवत् ।
 जोडयन्निग्रह । कर्म्यादिनिषेधार्त्तं सत्त्वाद्यवयोषणी । पुष्प कवा यठलस्य यत् नृगजार्त्तं यनास्यथ । नापहत्यादमन्धन नगर्त्तं स्थापयत्कवेः । गुरुकाष्ठ गुरु
 वीचि द्यवमार्त्तं नञ्चयत् । अन्त्यात्याला किकर्त्तव्यं स्नानकं स्नानकात्तवात् । प्रकानवाङ्मर्क्के कं चनयन्निग्रहकिटी । तान्यवरुयर्त्तं कर्त्तव्यं नाहि दूरे गतयि
 वा । निवक्तव्य लिङ्गीत्त स्नानकानि प्रयत्नवान् ॥ यामिन्ध ॥ पिक्कर्त्तव्य ॥ सैनिके ॥ युववा सिद्धिः । लेखका दूरुतजाति । अथ सखादिलङ्किता ॥ प्रकमाधि
 धिर्त्तं पादं पादं सर्वं यथाविधी । आवहकवर्त्तं मन्ध्र वनस्योद्गीन पुर्वगयत् । उद्या ॥ यत्तमा दूरु ॥ गी ॥ सुदूरे पुयायि लिङ्गी । सौम्य ॥ यविता ॥ रुमिर्द्गीत्तयाद
 नयाजनात् । यता यता रुयागका मृगमृगमहामति । यामिन्ध ॥ यत्तमा दूरु ॥ तस्या यार्त्तं समाचयत् । सत्त्वागमजयु सर्वं कौटुम्भजयु निरूपण ॥ जलमला

[illegible]

नाना यथा (महर्) यथा कर्म। मध्यमं वा उग्र मान मन्तानमथापि वा। द्वायं सर्ववृद्धिं (नैव) पुण्यं किमनी विना। सकपाज्जन्तलाधर्मा नष्टान्त मथापि वा। युजा
 न्तले सपयया द्या नगवन्धसुसधितान्। आयसानकालानि यथाशयगुणानि वा। कामय द्वायं सीकानि द्वायं द्वायं नमो विना। म पुण्यं वीथिका वाथ यत्तु गम्यमान
 नाशानि वृत्तिदानवाला य निरीसन्निहि तायुधः। इ (नैव) कानयदुर्गं महिषासूत्रयातिनी। द्वायं स्त्री गजवकुला धनदा वाथ यद्वाजी। विस्तरा मास नादि धी द
 वद (नैव) कथवा। कानयत्तु न द्वायादि पैला प्रवृत्ति। मया पुत्रायुगवाथ दृष्टा वा कुयथवा। निलान्मासुवनिः काया पुसाधा कायथाविधि। हे मं कर्म सनत
 धी मखाधः सन्निवमया। पूतना गकनी तप उ कदा न पूजय द्वायं। द्वायं नय कान तथा नागन पूजयिता यथा विधि। देवज्ञान सुप्रधानं वसुधै मयि कुर्वते।
 वाक्कलन सुस्मिता वाथ ये नृणां नि नि पातयत। दधे कते ४ अजा कुरुते सुशो धे व कुर्वेत्। कानयत्तु वमनादि मसुर्वविधि धनं। गी र्वरनी निनयन कुर्याद्वा द्वायं
 नादिकी मखा कुयं नदा कार्यं कुर्यात्तयगति की। उर्वसु मकुय काया सर्वदानव नृ दिमान्। पूर्वी नै साधय वास्य स्वातय्य समुद्रम। निनाय यति सिद्धा गमाः

१४१
 २२

सिद्धा यत्रा मून। दिगुक्तं ४ समस्तान् धावे नै यस्या तत्रि वा सिनी। उरु मन्त्रं समा कार्यं वा इष्ट मन्त्रं कथिवा। सा इष्ट हस्त कुविस्तीर्ण मकुयं हस्त मानिनी। मखा विमं स
 हीनो नु वा उग्रं ममथापि वा। विगाख मथ कर्तव्यं मथा द्वायं विपयिता। सुहावला थ द्वायं। वा उ मखा वमववा। वतुन याथ कर्तव्या यथा (महर्) यथा पूरी। विविक्तार्थ
 तथा मखा इष्ट द्वायं निवमयत। मृद्धिमा प्राणियत। रुय (मक) विवर्तिता। नाजा यजावन नदि। सम्यग् द्वायं कृतमून। सामान्यं ल कदी नासी। (मोर्) सर्वजगत्स्यत॥ य
 नद (नैव) कर्तव्यं यथा व रुनिवा धता। ना (मरु) मसुमा नूट ४ स कुओ विगत यदा। तथा यशान्यः कर्तव्या इ (नैव) धर्मार्थ का मदा। अथवा अय सी गु द्वा ४ गृह विस्तरा ४
 रुली। नवा इष्ट पक्ष विस्तरा। पूर्व विद विवर्तिता ४। रुवा न्या ४ यश्च विस्तीर्ण षष्ट्या य किम मता॥ सकस फ हया गोया पक्ष स फ हता रुवा यव अ रुल वृद्धा वा स
 दा कार्या मु (मयू) ना ४। आयमान विहीन मु द्वा न्निवा क्का रुया वरु ४ निष्ठा द्वा गतया त्रु म् तत्रि वा सिनी उवा ४। स पूर्व मान वत्वा ऊ सुखदा (मयू) ना सुदा॥ तासा
 नामानि वञ्च मि यथा यापयि की र्तिता। प्रिया कानि र्ति र्ती क्री र्क्या र्द्रा ववा डिता। अनका (मरु) ना द्वायं पूर्व विपयि की र्तिता। मनि र्चि द्वि र्वा दवी कासी धो

नाविभाहिनी। विमलायति याम्यनपुशान्यः पुर दायकाः। भावनामरुताप्रीति उग्रवज्रयामवती। यकिदीप्तिवात्रयभीतिः सर्वकामकाः ॥ कथयति
 ॥ पुराणायाः भावधनदाउमा। नवव्यापारोद्योत इति। यमि कामताः। अस्मितासुसमाकार्या अविद्यासुसमायमा। सर्वलक्षणसंपूर्ण पञ्चसफाथरुमिका ॥
 मलाद्यादगदीनामि मनाद्यावाभिकल्पयता। जेला निकाद्यव्यानि वज्र। यमि निकाययता। लयानि सर्वगमनिसासादविख्यामिव ॥ पर्वलक्षणसम्यक् इत्यस्य
 मदीयतः ॥ सद्यो गीहस्यासुवनि लोकानुकार्यसमद्विज्ञान ॥ मय्यमध्यगते मृतेः पकिष्टरुगतेपिवा। पद्मसुसिकलमसुप वमुन्यासगतापिवा। पूर्व इति विवाकार्यपि
 सादगुरुद्विती ॥ ॥ पूजायतेलाकासुदय। यमपुनवात्रलक्षणी ॥ ॥ मनुष्याव ॥ अथातः संपुवकाति अभादुर्गनिवर्गनं। यथायस्य पुकल्वी नयला
 कसुखावर्ह। यमि विमलवर्ह। पूर्व इति विमलवर्ह। तदे। अरुगवासलु कयसिष्टसुखावर्ह। पूर्व निर्मगुर्ग इति मद्योपुनवासिनी। अग्रयामुमिदाहमु या
 यमरुवर्जस्य। नेर्जते निवृत्ता लोका रवन्ति विवासिनः। निधत्ता धनहीनास्तु अयवासनतः जनः। निर्याद गयवावत्स वायवांसनतमिनी। मदिताः स

५५
 र्वलोकाश्च इति सोम्यामनामित। जिगम्याधर्मनिवृत्ता धनधान्यसमाकृताः। स्वकितविवासिना इति निवृत्तमनः। पूर्वशासनपञ्चाध्व दामनिर्घं यथावत् ॥ अ
 प्रपेत्तजनाविद्याः सुखदास्यजातजाः। याम्ययान्कजनवास्या नेर्जतमक्रुकाविगः। वानु। जलेद्रव्यानि तथा मृदुजनादयः। गन्धगन्धनिवृत्ता वायव्यतदुर्गजनः।
 सोम्यरुद्रजनकार्यं जगन्त्यादवताः। दिक्। विषवीतमरुतान्धावः। पूर्वहमन्मन्त्रका। रवतसुखदवत्स यथासंस्कानवासिनी। इत्येवमयनगर्ग कल्वी
 मरुतायुर्ग। नवव्यानिवासानि अग्रयधवतादिषु। नगर्हवीथिका इति पुनगी। विमलवर्ह। राजावावर्ह। देवदेवतादिषु विमलवर्ह। दवग्रमन्त्रः। कर्माः। तम।
 मरुतायुतः। तस्मिन्निष्ठात्स्वाः। सर्व गुरुपासादहविताः। वसन्तवर्हलोककायाः। यमवर्हकिताः। अठवादिषु इत्येव। अभावासीनकाययत। यमरुगन्धदिग
 रुवर्हमथादिषु विवर्हिताः। अभावासीनमथादि अग्रयन्मरुतायामि तयनाजाज्जगतिर्ज। मरुद्विषुवलनेव वाजावयविपीथि। तस्मिन्मन्त्रविषु
 अर्धे वाद्विषाविधीयता ॥ उर्ध्वेवसुवतावास्या दहतामुनितास्यतः। मरुतामरुतानुपमलान्ध लुजान् इत्येवमयतः ॥ नेककथयितुं लुतु नगर्हनेकगी

नोऽवलंबनं। वक्रासौम्यगतेः। कृष्णं हि दुर्गं पुनः। निर्णयत ग्रहादयः। द्विष्टा मित्रजनस्य च। इका न नानि वलाच नवांगमूयथ मुखं। विंग द्वादशरा। गध कानयत्पुन
कल्पना। कृष्णं विजानीयात् सोम्यः सोम्य विधीयते। तत्तादिविग्रहं तस्य विग्रहस्य विवर्तने। अशिते वसुलेने च न कृष्यति विवर्तने। नी। नकीठा वथला। न
वृ नवसंस्थागतं ग्रहं। पूर्व इति एकं कर्तव्यं गृह्यसमाप्तिः। मित्रं मित्रसंयत्ने। पूर्व इति विला विधिः। स्वकं प्रसन्नं प्रिका। न वृ हितिः। कार्यं सदा पूर्वं। दुर्गं इ
मं समीपस्थं तस्य मित्रं प्रिका। न गे। ग्रहं यत्प्रवलापते। कार्यं सर्वं उरावहं। सोम्य धर्माधिक्यमाप्तिः। न गे। स्नानसमाप्तिः। अग्निदहं तस्य हानिं प्रियुषी। न सदा
वर्ति। अग्निमया विजानीयात् पूर्व इति कर्तव्यं। न गे। पूर्व इति गे। धर्मिभ्यो विवर्तने। सर्वकामा नवाप्तिः। पूर्व इति नाकनदीयः। सर्वसुखं। न गे। ता उरा
याधनसत्त्वं। तगर्गं नमनं यथा सोम्यः दत्तवर्कनी। पूजयित्वा पूर्व इति ग्रहान् मानुर्विनायकान्। पासाधक विधानेन वलिदला पूर्व इति। ॥००॥
दुर्गपूजा विधिया ज्ञातुं क्रिया॥ ८२ ॥ मन्त्रपूजा विधिया विदुः। स्ति तः का। लः। अथ स्नानस्य हस्तुता। नैमिषा विविगधे मु लोकपूय हलपेदा॥ संज्ञात्या

[illegible]

वक्तिन । अथवा मयि कर्तव्यं यथार्थं प्रियमिच्छता । जिह्वायां यागयद्वा यात्र दूता वविलक्षिताम् ॥ सा वक्षाननमनसा मयि ॥ यनियानिगी । मनुया महुवत्ति
 द्वि ईश्वरपुसाधिको । ग्रहणं हनत्येता । विविधमपि उक्तिता । ग्रहणं विविधं ॥ अका रुमिमिडा लिधामता ॥ अमजा मूलमका य वि ॥ ४४ ॥ यदगता
 रुका ॥ होमको लपया कया ॥ पूजाको लतयेवच । पूर्वसिद्धिमवाप्नोति ॥ हस्तमप्यवर्जकी ॥ रावकालजियायागी । अगार्थालयतमून । अगवनिपु
 कर्तव्यं यज्जपाग्रवदिलिखने निरुनितरुमव पूर्ववत्कथिगा विविध ॥ ॥ इत्यादिनिमित्तकमप्यविद्वय ॥ ४५ ॥ नमदउवाच ॥ नमदिया मयागीत
 पुनस्तानरुलादयी । तीर्थयागापुसं जान मार्क ॥ ४६ ॥ यउपायय ॥ यकुम्हमहायुक्ते तथा माहृग्वरीयरी । अमगां निवि । प्रष्टं दवनया ॥ रुलादयी । वान
 अरवीमहापुम्ह तथा यद्विमसागरी । उपाये लीमहादव पक्षु मयुनागनी । गंगरा । अयय माथ कयार्थवर्षा रुमी । नन्दादवी गमनव महादवी
 महायली । नैमिषीयु कर्तव्यं तथा स्नानमवर्षवरी । कुरु कर्तव्यमहायुक्ते । सर्वपापसमागनी । यद्वर्षमहादव को मारी दकिमार्थव । वानमवर्षनिर्व

१४६
 १५६

सर्वकामानुपयकृति । यागवाचयययाका यमवाग्रुनागिनी । याशनमक वृकाकु द्यकनपुथर्मद्वि । हार्मसमक मूत्रार्थ कार्यखराकि कसदा ॥ ॥ नावयउवाच ॥ कलम
 ना पुमागने । जयहामरुकीहिता । दिनमूर्कवृकर्तव्यं कथयस्व पुसायत ॥ ॥ ४७ ॥ अवाच ॥ मार्क ॥ ४८ ॥ यमूनि । प्रष्टं यया । न समुदाहर्त । नमदिया ॥ सनस्वत्या कृद्वितकामनप्रदु ॥
 वकुर्धम ममावस्था । मयम्यान्नवमी कथा । दायम्यो को लीमास्यानु । मंजुको ग्रहणदिशु । यतीपागदिनदिशु । योयादिशु यवर्ष । मासाकमुदवर्षके । पुत्रमददिनवृव ॥
 तेषामूलमया । गमू नावर्षदकमातिवा । सकम्यासायवासेन । अहम्यापूजर्ममहर्ष । जयहार्म पुकर्तव्यं पूजायिस्वाहु ममर्ली । कावहानकु य ॥ कला कलुता यनस्वाय
 यत् । कुरुमा पुत्रकयूनि । मदनवविलेययत् । सुगन्धादीनिनेवश वासा सि अजदय्यनी । दत्तादया रुत ॥ पूजां सर्वकामानवापूयात् । इहलाकरवर्षव्या धनयुजायूसीयुत ॥
 दहाकेगिवलाकेतु मादत उलर्मसर्व ॥ यत्रवविधिना दवी । मनुता यनवाविम । लावासाययतविष । सुखं नमवस्व ॥ यथावयं यथाविकृ यथादवामरु ॥ यथावयं यथासी
 पूजनीयम् । अविवाधारा विगता प्रकादवगा ॥ सर्व ॥ कुरु कवितायुगा । यिद्वर्षा रुवायुगि । रुकलून अरुलमा । यकृपके नृगप्रद्व । स्वावायउ वि । यमगा । सकृद्वादनवर्षा
 लि । ननसकर्मिगा ॥ यिद्वर्ष ॥ दत्तायार्न तथा कादि । पुनीरुल मवापूयात् ॥ जयहामरुलतय । अतर्कस्वतर्कती । गम्यायस्वती कर्म । सर्वपापसमागनी । अथाहुमवि । यमनमा

४६२

[illegible]

निवासाः पचायनविकल्पना। मूत्रादनिर्गम्य पूर्वमंध्यायुष्यने वद्याय जयहामविमिश्रं। सर्वममलाया मनुष्याविधानं लिख्यते। ममलाननिनी रज्ज्वा लक्ष्मीः का
रिच्यन सिनी। पुष्टिभक्तिनिवासा धी यम। गज्या धृतिः। अनन्दावसूनन्दाव दया। वाक्प्रीतिः। उकेकनकुवर्गिन दया मूत्राधयनियत। त्रिगन्वादीनि
दयानि सायुधानि यथाविधि। यानि मूत्रा लिङ्ग मूत्रा व्यापिनी रज्ज्वा चत्वारः दण्डं स्वर्गं मूलं चर्कं पाणी स्वर्गं मूलं धनूः। वीणा पद्मं गच्छ मूत्राः ४ वाक्प्रीतिः। अतामनुयदा
निहवन्ति। उं कालि २ वज्रं वनिलाहृदय ०० मूलमनु ४। उं कालि २०० रुद्रं उं कालि वज्रिनिनिवः ४ उं कालि कालेव विमिश्रं उं कालि वज्रं विमिश्रं वची। उं का
लि लाहृदय ०० मूलमनु नर्गं अननन्यायन पञ्चवक्त्राणि सर्वममलममलति पञ्चानुक्रमा ययत॥ ॥ ॥ ला श्रेयं लाका सुदय दयायागवि
धानं॥ ॥ ॥ मनुवाव॥ अतएव महायुष्यं सर्वकामससाधकं। बुद्ध्यासनकादीनां रुक्मयत्यतिपादितं॥ तदहं संप्रवक्ष्यामि उतानीयमवर्तं। सर्वलाकायका
नाय गृह्यावहितादिज। उपवासात्यनं सोमं सोम्यात्यवमयादिनी। अया वितात्यनं नर्कं तस्मान्न कीनवर्हयन्। दवे मुकुटं पूर्वदि मयाक्रमवि लिख्यते। अयमा

कृपितुर्लुके स्यात्प्रागुक्तकादिभिः सर्ववत्तामतिक्रम्य नक्तुक्तमराजनीं वामाजनामहादवा नक्तुक्तमराजनीं रुविशराजनीं स्नानं सप्तमाहावलाद्यर्चं ।
 अग्निनाथं मधुगोत्रं नक्तुक्तमराजनीं समाचरेत् ॥ उर्वविमिसमावाचा दवधवा प्रयुजका कृष्णस्य प्रयत्नेन कृतानक्तुक्तमराजनीं समाचरेत् ॥ मासस्य मासं गोत्रस्य गोत्रं वराहवर्म
 यत् ॥ पीताम्बुकावत् ॥ मम मनाहावा निमिस्रयेत् ॥ अग्निनाथस्य यत् ॥ रुलमह गुणी लरुत् ॥ उर्वयोषधिसेयुष ॥ मनुनामानमीश्वरी ॥ कृष्णस्य चर्तया ॥ वाजपेया
 हर्कलरुत् ॥ माधमहं वनाम कृष्णस्य प्रयुजयेत् ॥ निमिषीत्वा पुण्यकीर्त्तं ॥ मध्याह्नकमायुयात् ॥ रुलं लवमहादवं संपूज्य पाणयकिलान् ॥ वाजसूयस्य यत्
 स रुलमह गुणी लरुत् ॥ वेणुसुखा नामानं कृष्णस्य प्रयुजयेत् ॥ यवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ वेणुसुखिवनामानं रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ पीताम्बु
 यमधस्य रुलमह गुणी लरुत् ॥ अथ यत् ॥ पुण्यं गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥
 ममिहसुस्य रुलमह गुणी लरुत् ॥ अथ यत् ॥ पुण्यं गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥
 पाणनी विलयेत् ॥ अथ यत् ॥ पुण्यं गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ गवांश्च रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥

१५२

स्यात्पुनराख्यातं यद्यन्यथा समुत्तमं । ग्रहणादिरुलं यत् ॥ तीर्थरुदं गृह्यते ॥ गङ्गाद्वारं कुरुर्द्वं नर्मदां वक्तुर्कं । यमुनासं कर्म पूज्यं विदिमधं देवतं पिण्डयुः
 कोनिकी विष्णुः गङ्गाकीर्त्तनं वरुणी । चन्द्रागममहायुष्मातदी ॥ मदावती तथै ॥ कावेरी ॥ ममती सावी दविका वनना पूजा ॥ उता ॥ यद्यन्यथा नदी । ग्रहणादिषु कीर्त्तिताः ।
 अथ यत् ॥ पुण्यं अथ कालेषु कामदाः । अथ नैविष्यं रव्याता यती पातताथे वव । दिनचिह्नं अथ वस्यां ग्रहणां सगमं पूज्यं । समादव समाजं च उकाथं सफ
 अवा ॥ उर्ववि ॥ धूपं चर्चुं चन्दुं सर्वकलावेत् ॥ रुनीया याध्वं वेणुसुखा मस्य कृत्वा सव । चतुर्दश्यां कृष्णाय लेमार्हं दित्तरथनी । कर्तव्यं सर्वकामाती पूज्यं
 यत् ॥ नमो रुमेश ॥ अथ यत् ॥ पुण्यं रुमेशको निवादिषु लुपाननः । यजत रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥
 यत् ॥ दविका यामिहामुने । पुण्यं रुमेशको निवादिषु लुपाननः । यजत रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥
 मिकी पूज्यं अथ यत् ॥ पुण्यं रुमेशको निवादिषु लुपाननः । यजत रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥ रुक्मिणाय तौ वमधरुलं लरुत् ॥

सप्रहसं नृणां तदपि पापं यन्नवः। उषनवाहिकं यत्पूर्ववत्समं ददात ॥ ३ ॥

五

[illegible]

५३

八五

[illegible]

449

१५०
४८

आशुक्रियनारुवान् ॥ यथाप्रासीत्युना नानुन महाकल्पेव सूक्ष्मविषयः तथापि स एव ज्ञाः सर्वाः स्वेष्टवर्त्मन्यवहितः ॥ तस्य राजस्य दवन्दुः यस्मात् गन्तुं शक्ती न कथं
 यममस्तस्य दिवस्यसहितं वतः ॥ पुनस्तत्तज्जगन्नाथं विष्णुं कमललावनी ॥ पञ्चकृतिममस्तस्य ॥ बुद्ध्याऽप्युक्तं वती ॥ ॥ गङ्गा उवाच ॥ ज्ञानममस्तस्य ॥ सर्वदव
 नमस्तु ॥ एकमूर्तिमिह मूर्तिस्तु पीतवासा उगलिय ॥ सर्वव्यापि महाकायः स्कलरावज्जुनरुचः ॥ यनावय यनावमु ॥ कावभा नानमानमः ॥ पञ्चकृतिस्तु चराचरा विहृतिवद्ययः
 पुत्रुः ॥ विष्णुविष्णुपुत्रमयस्तु कलकान्तं हतवः ॥ धर्माधर्ममहाभायः शवाशवममोदवः ॥ महाकायिगुणवासः सर्वलक्षणविहृतिः ॥ सूर्यसं सुवर्णं त्वष्टा वदसे वदकी रुवान्
 ॥ यस्मात्संयुक्तानाथ सर्वगः सर्वरूपः पुत्रुः ॥ अविनाशविनाशः ॥ द्यौः पार्थिवोदियुक्तान् ॥ त्वं रवाः कावभा शवाययययनमस्तु ॥ दृष्टी कंगगदाध्विन महादन्तुलानकः ॥
 महागदासिधायः यस्मात्तुगद्वेव ॥ उर्वमुत्ता तदा राजन् विष्णुः ॥ पावाचययगी ॥ यस्मिन्मनसि वरुत ददामि वृद्धिवाप्तवः ॥ ॥ गङ्गा उवाच ॥ रगेव न किंचित्पराशुकिः ॥ क
 स्यवाक्रियतसदा ॥ कस्मिन् द्यौः किते ॥ यस्मिन् यस्मिन् सायनायना ॥ ॥ रगवानूवाच ॥ एकस्मिन्मदिनगङ्गा बुद्ध्याकि च उद्वेगः ॥ इन्द्रदीनाश तत्संख्या बुद्ध्या

नयुनन्दन ॥ उर्ववर्षगन्तुर्व्यगनिद्रायवाशवा ॥ तस्मिन्नीयाम्यहं गङ्गा पुनरत लुजामि ॥ उर्वकवदिनायका मासा र्वतथायनी ॥ समकालश्च कल्पश्च महाकल्पक
 थेवच ॥ रवतं बुद्धिगङ्गा यासायनमकावभा ॥ यागनिद्रामरुमाया ॥ सर्वव्यापनवद्विहृतिः ॥ स्फुपितायनमगुन तस्मिन्काले तद्व्यापी लक्ष्मीर्गङ्गासुहृत्प्राति ॥ गङ्गानिनव
 अवयः ॥ तस्यमरुतरुतस्य कालस्य सूनसुरुम ॥ तस्मिन्सायुजितायवी ॥ बुद्ध्यामनूययिभा ॥ साय कुवगन्तुर्हत्वा उगलः ॥ विहृतिमान् ॥ तनाज्ञातामिनामानि मनदीयाः
 सवित्तुनाशपातालहितयः ॥ गङ्गा रवकि बुद्धिगङ्गा विहृतिपिमीकतामाया ॥ मोहनीसूनतनुष ॥ अन्ननकालं र्वीय दद्येव युतिरुत्तरा ॥ २२ ॥ ॥ रूपाद्यदववगपका
 लरावयवस्वा ॥ ॥ गङ्गा उवाच ॥ रगवं सुववाकासी नरुफि र्ववतमम ॥ कालाग्निपार्थिवं मानं ॥ अगुमिहामितत्वतः ॥ ॥ रगवानूवाच ॥ नहिपाथिविदीपयू
 मन्वृष्टयिवासवः ॥ रगमहादयथा नृगं पातालतलवासिषू ॥ ययूनः काल बुद्ध्या नानाश्रीगतसंकलाः ॥ विविधरुमविद्यासा कृत मन्वृष्टयतः ॥ स एव काल बुद्ध्या
 तन्वृष्टयगर्भस्मिता ॥ सायना निवरावतः ॥ ययमापददायिका ॥ तस्य यद्दः सदृक् ॥ बुद्ध्यामी र्वयुक्ता ॥ तं विद्वि काल बुद्धिः ॥ सोम्यनृपसदा निर्वी ॥ कालाग्निर्गसर्गलक्ष
 या ज्ञानां यमागतः ॥ अर्द्धनडुडु यस्मिन् पादाः पादन वासवः ॥ सिंहपुत्रा महावीरा महावका महाबला ॥ कालाग्निर्बुद्ध्या या वदन्तु दसमावतः ॥ अन्नकयप्रद

नामन्यविरम्यानि. पिवन् पात्रानि वासवा. असूत्राननरावन. दवीं पूजयत सदा. वत्र राक्षसिणाश्च. आताले निवाचन. गात्राकृष्णिमुपालभ्य. अस्य
 अस्त्रामुप ४। हस्तलसूक्तक ४ पञ्चा. नागवाजासुयसुधा. यमदह्यग्रदह्य. विमलाकाश्च वाकसा ४। यमुर्थसंप्रवक्ष्यामि. देव्याश्च महिषापमा ४। तु
 तीय ४ कालपृष्ठ. नाग ४ कर्कटपृष्ठ. मङ्क कर्कसुतीय. वाकसाश्च निवाचन. महादर्वमहाकार्य. नृतीर्यनुमहागुड. मङ्क व्रतविजानीया ४ पञ्च
 मङ्क विवाचन. अस्य मङ्क तात्राक. असूत्रामुप ४ सुता ४। स्वधुलि कोनाग. सुगीयश्च चर्न ४ य ४। आसुराविहृपाकृ. उग्ररूपाश्च वाकसा ४। गरुड
 समारवागा ४ वृष ४ वेगायन ४। कालनमिर्हि नक्षत्रा. निमुसुश्च गुणसूत्रा ४। अग्रे वयस्य वाच. कथयामि सूत्रा रुम. दाकि धृष्टी महा राक्ष. कलदवमु
 वाक् ४। गस्य पृष्ठ ४ समस्य त्री. नामात्रक वल्लर ४। स्वकालेन मरुता. नाम रूप प्रवर्तिता ४। मिश्रदवदिजातीना. महं दया पहात्रक ४। कदायिकाल पथ
 न. मलय पर्वगगन ४। गगन कन्या रि. अनातु. एव तीजन सस्त्रता. वक्ष्ये वयस्य संपत्रा. नगत्रद्या वसस्त्रिता. सवन् नर्मिता तु. नामात्रक वल्लर ४। वागी

१५५

८२

प्रविष्टवामि सिन्धु सिन्धु द्रव्यहात्रक ४। याव चीपसर्म पाफ. सैलक दारु वल्लिला. ताव रुन गधर्न ले. उद्यान्व वहाका नहा. दल प्रवृद्ध वामि. दवला दविपूजक
 ४। सवपाशरयान वृ ४ कालान्मर्गैरूपन ४। काश्च वाजाधिप मङ्क. नामात्रक चर्न ४। दवी राकि वतानिर्ण. मद्यर्मा सवसा प्रिय ४। दव वाक् ४ मङ्क च. दवरु
 अमहात्रक ४। कालनम्य मायत्रो. वाचन वाकसाधिप ४। पिङ्गाखादमकाटीना. महावलप वाक्रम ४। अस्य ४ उग्र ४ मङ्क. वृक्षकल्या प्रजीविता ४। गनदी पप्रता
 वन. मर्क वाधिप निर्महान्. दूरवापि सजाग ४ किं पून सुसमाप्तिगा ४। एव किं दव वाज ४. वृक्षलाक निवासिन ४। उग्र कधिर्न वत्स. प्रसन्न नसूत्राधिप. मवात्रा
 मङ्क वक्ष्यामि. पाताले यन कीर्तिता ४। पोथु वी कश्च दृष्टुर्ध. म्वन रुद्र गुयात्र गा ४। पिङ्गाखामयनादीव. गधध्यात्र वाकसा ४। वसागले उ वासश्च. देवा यन वलि
 सुधा. काटि अथामया वक्ष. स्वकार्य सत्व वी ४। पून ४ स्वर्न ददिष्यामि. पून रु मयिता प्रमु ४। उवावग मरुताग. पिङ्गमभ्यगर्न गथा. सात्री विक्रम के मङ्क. माल्य
 वामि वाकसा ४। पाताला ४ सफ विख्याता. मुषष्टिगुवन म्वना ४। दलाका नक्षपाताला ४ मग काटि प्रविष्ट वा ४। वृक्षग यविरकास. दयपत्रग वाकसा ४। कल्पकल्प

विनम्रकि तन्नामानाएवकिच॥नहिसंख्याएवकु. मगाजागापूनःपूनः॥उपपातालमन्यकु. सोवर्णकुविवाचता॥यगासोरगवान्दवः॥अर्द्धनात्रीभवः॥भिवः॥वर्ष
 वतः॥कुजाभा. बुक्रावदविदाम्यत्र॥दिगीयव्वकेलासा. यगक्षेत्राशमयनात्रमा॥यगासोरगवान्दवा. वयदाहागकभवः॥गगुरुममयीरुमि. र्वकुवेद्वयविनि
 गा॥यिचिगधगुरितीति. दवास्त्रमनाहना॥सर्ववृक्षसमाकीर्ण. महुर्बवनस्पति॥सगभरुलपेयाद्या. सर्वप्रयसमन्विता॥सन्धिमीगलोदाय. विह्वन्नमनकु
 सिदः॥रुमप्रासादप्राकात्रा. तत्रवाद्यानकानना॥सत्रिसत्रसुजागेभ्य. दीर्घिकेवप. मारिर्ग. स्त्रोटिके॥भिलेसापाने. र्यकाभिलेसुसंविर्ग॥साहस्रानियिताये
 सु. नीलत्रकाम्बुर्ग॥सिर्गे॥कुमदासलसंयुर्न. तत्रकारुखत्राम्बुजा॥गटवकलगागुल्मा. व्याकायासलपक्षिः॥सर्वकारुखत्रा॥मक्र. पातालननरामारि
 त॥तगाङ्गनामदाभरा॥क्रीडन्त्यानकन्दले॥बनोपवनउद्याना. दीर्घिकासत्रमध्यग॥क्रीडन्तिरुलक्रीडति. दालादालनतत्पत्रा॥वक्रप्रमलेनिम्वष्टा
 ॥सर्वदृष्टविवर्किता॥अमयसुखहृष्टा. ६॥खेकस्मत्रपीडनं॥विचत्रकीमहारागे॥सर्वरत्रहृष्टिगा॥भिरिपगविमयध. ललाटगिलकनय

१५५

यगापत्रविमयध. वृन्दडनविगाऊत॥कहसुविन्धसुपग. कुमुलेर्लकिचापत्रा॥सितासितात्रोदोर्ध. मुसुबालमगव्व॥यासनिगाविहायक. पूनताहाट
 कभवः॥उर्वविधिःसदासुहि. निर्लस्मत्रनिपीडिहि॥त्रमनिसूत्रतान्त्राग॥सुहृफा॥भिवराविगा॥ ॥वृत्त्याद्यहाटकभववर्धुर्न॥१५॥ ॥
 ॥मक्रउवाय॥सर्वर्गवृत्तादववदवदार्थपात्रगे॥प्राक्षवृत्तिहासेभ्य. सफप्रवनवाष्टत॥स्यपून्कथयवाष्ट. उरुसंनचसर्वस्॥कथनकनवाष्ट. मगदिका
 भिवतिर्गु॥ ॥रुगवान्वाय॥केलासेभिवत्रासीर्न. दवदवगिलोचनं॥तिष्ठन्मुमयासाई. अखिदवनमस्वर्ग॥गदृष्टागगवान्बुक्रा. वयमक्रवहस्पती
 ॥तथावक्रीडतस्कन्दा. वरिष्ठाभूरनित्यम॥बुक्रस्यैकासर्नहं॥स॥भिरिनायकूनाहग॥वत्रावकत्रममय. दयार्नयनिमम्यय॥विहस्यवक्रमालाक. बुक्रातक्रतथा
 भिरिर्गदरुनताउयाकिष्टि. किखिनासहवात्रिर्ग॥तथाभ्रवागथयया. सखायमनूयिनता॥तथाभयसमाकार. धार्नयावपत्राक्रम॥निष्कार्कभिरिवावध
 बुक्रयानस्यवाधकी॥तदृष्टासहसादवी. भयिताबुक्रवीडया॥गकत्रमपिसुप्राका. बुक्राहमसुर्वकूत्र॥कयागिममुनारक. सुवेदकमलोहर्व॥दयार्नयत्रमा

का

देव उत्यन्ति स्मिन्ति कवः ॥ गथायर्भसमाश्रुत दवदवस्य भलिनः ॥ सुवनसुवनं वृद्धं प्रकाने परमस्मिन् ॥ ॥ वृक्षरुवाय ॥ ऊयदवातिदवाय विगुणा यस्वमेधसा ॥ अथ कऊन
 रूपाय काराय समस्तने ॥ अर्कद्विगलगाय उत्यन्ति स्मिन्ति कारक ॥ वडा रूपगुण विष्ट सुऊसीदं वरावर् ॥ सत्वबालमहाग तमः ॥ संहवसे ॥ शिवली ॥ गुणसामे
 नमस्किंती तदसंप्रमथव ॥ वृद्धवदीतगर्हाय नमामि च यिवा यक्ष ॥ यस्य निर्वर्णं मर्दं वरावर्माननात् ॥ अथ यः सामर्थ्या ॥ निष्कानि पदकुमा ॥ भि
 का कल्पनिवृत्तानि ॥ सुधाश्रीती विवासमा ॥ वक्रुता अमयस्य ऊगनीस्य गुरुपदा ॥ उयः काला मुपादवा मुपावद्विमुयः ॥ क्रिया ॥ यस्य भक्तवज्रामास्य तन्नमामि पि
 तामहं ॥ वृद्धवत्तु हविर्यक वक्रुनुगवहसुती ॥ अर्वमुगा वरा ॥ ४ पर्व वक्रा वरप्रदा हवत् ॥ ॥ वक्रा वाय ॥ यावत्सवर् मस्र मस्राधिघनभुर् ॥ ददामि सफलो
 कारी ॥ त्वं प्रगु वरुयाक्रम ॥ अवमसु हवस्तिन कस्मिं सिष्ठा मिसरुमा मया सूक्त वपागाले तत्कृष्णदिनिवभिग ॥ सवदवा सखा लाक दृष्ट ॥ किं निग्री ॥ अत
 भक्तु नावत थउक वृयमनं वधिष्यति ॥ गथायर्कमया भका उक्तिगा सूत्रसकम ॥ सव आवा कत्र द्वा पागालं वक्रुदानव ॥ सर्वल कक्षस्य नै सर्वकामरुलप

दी सर्वर्कगुणापनी सर्वत्र विरुधिगी ॥ गतस्य गतस्य कालने मिसगाय ॥ आगत्य प्रीतिरावन्तु ॥ वरुनं रुद्रदमनी ॥ हातकं भवदवस्य यदा पूजा निवर्हिता ॥ गदागजप
 तिह्वानी मनसा हार्यगीतवान् ॥ गथा कालनमहगा प्रीगा देवार्भमगा ॥ दयानी विग्रहं वक्रु गनग विडिगामहान् ॥ वक्रा वरावदानेन दयालावसमृद्धव ॥ नऊर्मुभक्त
 मदेव वक्रा श्रीमुपनयन ॥ गथा सवलवान्मत्वा भक्तवत्सु सामपि ॥ प्रऊम्बर्वासया वक्रा यगाहं सूत्रसकम ॥ विरूटे मेलाऊड वर्यसूरवसमाधिग ॥ निष्ठा मसूयग
 वक्रा भक्तवत्तादिहिरुभा ॥ ॥ दयवाय ॥ नमर्पकऊनगाय विष्टुव विष्टुवनमः ॥ नमो दवातिदवाय दवगात्रिहननमः ॥ नमस्त्याग्रमधर्माय विष्टुहनाय वैनमः ॥ नमः
 सर्वसमर्थय सर्वधर्मवगाय ॥ दवदानवयकाक्षी ॥ त्वं वक्रा पालक प्रशा ॥ अस्माकं त्वं गतिर्दव वृक्षणा सिगा वर्य ॥ गतानस्वीरवान्भकी मक्रमाना महाद ॥ अत्र सा
 गवधात्रे स्मिन् देव्या मरुहाडले ॥ वृष्टवक्रा सिमकत्र त्वं पागी हवज्जग ॥ अर्वयाव नमस्माना मरुयेहं समद्यत ॥ गावत्सदनूनाऊड सुवेवसरुसागत ॥ गथा सर्वध
 मानमु मया वसरुवासे ॥ सर्वदेवः ॥ समावक्षा याधिगुन्यनूप्रव ॥ गथा वलसमन्त्रा अस्मावलदपिगा ॥ हगाभ्यक्रा सिभा श्रीशे निपतनिमहाद ॥
 गगा ४ पार्व गथापत्र ॥ प्रविष्ट ॥ देवपागालं कयिन्नष्टावसागली ॥ अवनायानवसेन्य समवक्रा यूर्गमहता दृष्टा देवपति ॥ अर्क मरुमाया प्रवर्हिग ॥ गन

नदेत्यमत्रगा. वसुधसययनुमा॥ यमने जलधर्माशा॥ कक्षमात्रनिर्जिता॥ तथवक्त्रावकुंभेमु. वरुस्यनिर्महामति॥ वयञ्जसहसायाता. यणदवमुला
यन॥ सयदयाभेकु. जकानका रुवन्मदा. विरुनलसूततस्यनयरावानकावर्ष॥ सुवभक्तिरूपत्वात्. सयवक्त्रस्यरूपिण॥ सयमभिकुलावन. कात्रावनयव
सिक्त॥ पुर्वविधितदाह्लात्वा. भिवभक्तिमयंजगत्॥ मयाचसहवक्त्रेणसुतागुमात्रवृत्तदिध॥ ॥ वक्त्रकेभवावृत्तु॥ नमस्तुतगवन्दव. दिग्भसकृतयास
स। तमहंसंप्रवक्ष्यामि. भक्तसर्वसखप्रद॥ ऊयत्सर्वसमस्तस्य. सर्वकावक्षकाव. धामभानवासिदवेनि. निरावासनमास्तुत॥ वदुमूर्द्धि कर्गनित्यं यमवास॥
सदाप्रियं। रुतरुयाहवासोभ्य. युवनभिनमास्तुत॥ त्वहियाभस्मिकायाग. सर्वयोगप्रदायिकागऊयमध्वर्यदव. वधुनाथनमास्तुत॥ गिभलपाणिनीनित्यं
नर्गुणितदभध्वर्य। दिव्यागमहवदिव्या. यागध्वत्रिनमास्तुत॥ त्वहिव्रडामहावीडा. नित्यं योदयराकुमा। गिभूर्द्धिभूमहात्मानं. गिप्रानानमास्तुत॥ सर्वध्वर्यस
र्वगतं. सर्वहंसर्वतामर्व॥ त्वयव्रडामिकादवि. व्रडध्वत्रिनमास्तुत॥ ऊयदविसूत्रभृष्ट. त्वसर्वसूत्रपूजितं। सर्वरावस्मिर्गभक्तं. सर्वयापिनमास्तुत॥ यस्मिन्
र्वयत॥ सर्व. य॥ सर्वसर्वतथ्य॥ सुगामाभिवपदवि. सूत्रध्वत्रिनमास्तुत॥ ऊयविद्यासिकविद्य. विद्यारुद्राखिनी। यथसर्वमयादव. सुखेसर्वसनेनम॥ सु

लसूक्तविद्यागन. यनयाप्यवरायर्ष॥ सर्वविद्याप्रदातावि. विद्यध्वत्रिनमास्तुत॥ गिदभेस्त्वमुतादवि. त्वगिलाकनिवासिनी॥ अनादिमादिमैवदे. वाकागीतनमास्तुत॥ अन
र्गभध्वर्यविध्व. पुर्वनित्यमसापरी। गिभलपाणिस्त्वदवि. गभध्वर्यनमास्तुत॥ श्रीकण्ठश्रीधर्यश्रीर्ष. नीलकण्ठनमास्तुत॥ विद्यामयीनन्यस्य. विद्यागीर्गर्षस्मिर्ग॥ ग
भर्जनायिकात्त्वहि. गभध्वत्रिनमास्तुत॥ त्वहिदुर्गमहावीर्य. दुर्गदुर्गपराकुमे॥ सकल. निखलेदवि. कलागीर्गनमास्तुत॥ यागध्वपोयागगम्या. यागभसायाग
सम्व॥ वससदेविदुर्गध. दुर्गध्वत्रिनमास्तुत॥ त्वयभुङ्क्षुप्रयक्षुत्वं वक्त्रयधुविद्याविद्या। महायोगध्वर्यनित्यं यागध्वत्रिनमास्तुत॥ डामिध्वकाकर्त्रवक्त्र. परया
र्गयुवनगय॥ वधुनूपासहाविद्या. वधुध्वत्रिनमास्तुत॥ त्वदवीउग्रसंश्रुती. त्वमग्रवृत्तध्वत्रिणी॥ तस्यार्द्धत्वंभिवानित्यं सदाभिवनमास्तुत॥ अर्द्धमात्रपरायागु. तस्यार्द्ध
स्यपरापरी। त्वमग्रभलहसाय. उग्रध्वत्रिनमास्तुत॥ त्वहिक्ताभस्मिकादवि. काधरावनसंस्मिता। परास्यवर्गभक्तं. भक्तगीर्गनमास्तुत॥ अकायाकात्रमूर्द्धध्व. मकायावि
द्वयवया। दानवार्जवध्वर्यय. काधध्वत्रिनमास्तुत॥ त्वहिनायायणीदवी. कोभिकीवक्त्रयात्रिणी। निर्वृष्टपत्रमागीर्ग. निर्यामीर्गनमास्तुत॥ विरुंवेतागथाविन्ना. विन्ना
यध्विरुक्तसुथा। सर्वमकुमयेर्दिधो. सूयमेत्वंनमास्तुत॥ त्वऊयविऊयानित्य. मज्जितावापवाजिता। अस्त्रिर्द्धसविर्द्धव. विन्नागीर्गनमास्तुत॥ बालाग्रभगतागस्य. भगध्वक

[illegible]

५६

॥ अक्रान्तं यद्यद्विषयं कालं रूपं रसं ध्वनिं ॥ कला कलङ्कमहितां निष्कलं कनमा मुने ॥ आकृतिर्नैव जानामि गतिमत्यतिमेव वा ॥ मेघवर्धनं महाधाम ॥ त्वं वा वाहिनमा मुने ॥
॥ वज्रपातिसहस्राक्षं कृष्णधनुमनो वने ॥ स्वयं रत्नमहात्मानं महादेवेनमा मुने ॥ रावेर्ध्वयसंनिर्ह्यं रावेर्भक्तियसं पन ॥ उवाच गतमा मुने ॥ त्वमिन्द्रादिनमा मुने ॥ त्वं नि
र्मासमहादेहं मासिदनत्र साप्रियं ॥ स्वरावातावमात्मानं रावेर्ध्वयनमा मुने ॥ यो ह व ४ सं ह व ४ येव ॥ हयं वा रायमेव व ॥ कपालखट्वाङ्गकये त्वं ह्यमरा मुने ॥ त्वमेका स
पक्षदवि व द्धं भवदिवाराजसं ॥ रावेर्ध्वयप्रतिभनेन यासिसासिनमा मुने ॥ कुमसिद्धं कक्षार्द्धं न कुवनानिमहावनं ॥ रुद्रोक्तिश्चतुर्वर्त्तिका साक्षी कश्चनमा मुने ॥ त्वमेका स
स्मितादवि अक्रान्तादिविसर्गति ॥ त्वं स्मिता सर्ववर्द्धिषु पृथग्रूपेनमा मुने ॥ त्वमनाया स्वयं दवि भक्तिश्च रुद्रव्यवस्मिता ॥ विदुषा यातयेव त्वं महादेवेनमा मुने ॥ त्वं वाहि
त्वं दिने दवि जगदावसावाधिव ॥ निमेषश्चमूर्द्धं च त्वं साक्रान्तिनमा मुने ॥ त्वं काली कालवागी च कृतार्त्ता यस्यावृक्ष ॥ त्वं रावशा महाग्रीवी महाकालीनमा मुने ॥ दक
यद्रूपिद्यागी त्वं समशीर्षनिहन्नी ॥ त्वं दवीवी वमागा च रुद्रकालीनमा मुने ॥ त्वमेव दवि अक्रान्ता त्वं ह्यपातालभावा ॥ त्वं साक्षी यापवर्गे यमकिदा त्वं नमा मुने ॥ त्वं हि
सर्वात्मिकादवि सर्वमूर्द्धिषु सर्वस्मिता ॥ मूलसूत्रविद्यागन व्यापिना त्वं नमा मुने ॥ यं यं पञ्चास्य हं दवि स्त्वावने उभयवार्त्ता यार्त्ता त्वया सर्वं कात्यायनिनमा मु

[illegible]

۱۴۹

सम्पदादिना॥ अरु शकृत्कामनेव द्यावदाभुनर्दक्षिणा॥ महामहिषमाकृता पाभदक्षुय्राभयगा॥ यद्यत्र भगिभयन प्रलयाम्यदनिस्वना॥ कालजिह्ववद्व्युक्ता कयार्थिविवनि
र्मला॥ भक्रायर्वस्वीयार्थि नफयामीकनपुर्ण॥ मरुद्विदमाकृता सरुमनयनाकली॥ वजाकृभकयान्दवी भयसनकगान्धवा॥ उकेकाकिदिनूपानु सर्वयधधर्मास्तिगी॥ हिन
स्तिनयहन्त्रनि पागयनिसरुमुभ॥ महामैरदयन्त्राभु दानवानावसुपिनी॥ गतागत्याकुर्यभक वलामहानिधिविव॥ प्रावर्यनिवमदिन्या गददेस्यवसुधिनी॥ रुफास्त्रासमदने
नजिगादानवभय॥ प्रलम्बाभुलतापाधि पर्यविस्मयसागगा॥ विषादहयभक्षार्क दवदवप्रागमा॥ म्रुवन्किता॥ सदाभक्तु भिर्वसर्वमत्रीचय॥ पतिगावाकूदभु॥ नवान्द
नयार्थिगा॥ नदावक्रादयादवा॥ पर्याभक्षाम्पागगा॥ म्रुवन्किदवदवभ कालवर्द्धप्रापर्य॥ म्रुतावाकूतदाम्रु॥ भकिनामयगतस्यवा महत्काधगतोत्पन्न काधद्वि॥ समस्तिग॥
॥ वक्रकालासदीफासु तीर्थगृहमभगगा॥ कालाकलापमभस्त्रा सूर्यायगतसमपुर्ण॥ कालवृद्धस्यभकि॥ भिवसाहार्यग॥ स्तिगी॥ अदनीवङ्गसर्व कालवागिर्हयानना॥ दीष्टा
लापिभलाकीनु प्रलयाम्यदनिस्वना॥ वजाकृभकयान्दवी दक्षुदिपाभमयगा॥ गदाभकिप्रिहृक्तानु गिभलायधधर्मास्तिगी॥ गङ्गायनीदिभसर्व दवदवप्रा॥ स्तिगा॥ उवाचत्वविनाम्वाधा
कयामिकिसर्वभव॥ गतादवनसाउका कृष्णनवापवाजिता॥ यदिमवत्सलादवी नृनृत्वंहिनिपागय॥ उर्वकयामिदवभ यत्त्वयासपुलाधिगी॥ सृष्ट्वभम्रुनागस्या न्महादधिसमाभयी॥

मंसासुसाम्भकि. रिन्नाका चवर्गगता। मदागुदानवीसना. काटिभवर्दिता पुनश्च मदीर्य कृष्णकायासा. राक्ष्यप्रार्थनिकृष्णयः॥ वयुक्तिगः समद्वयं. राक्ष्यवास्माकं प्रयक्तानां गतः निवन
 ताः सच्ची. अनिवात्रिगतं ऊसाः॥ निवदिनं स्वयादुर्य. वृत्त्यं पभुं पागय॥ गदाकलकलावाव. कृत्यार्थं सदायर्थ. दानवी वाकुन. क्रध. पातितासुमहोऊसा॥ गतः पत्रस्य मालापी. कृत्यार्थं
 मिवाकली. यद्यत्रावधायक. स्यन्दनार्थं वस्त्रिणी॥ वज्रं पद्ममिलास. भोः सुवलनैः सुवलितालिता। अकृष्णारिः कर्षासने. कालारिः पूत्रिर्गमरः॥ आलाकालाकपर्यं. वृक्षादीस्य
 लिर्गपूनः॥ प्रणिभयं महाधार्म. अथ धकागवा कट॥ ऊनाऊ वस्त्रिणानाकु. नखयैर्वृक्षमारुता। कर्षिकानि पतस्य. वृक्षमाक्षिकसंश्रयाः॥ भोः यवकी क्रियाने. सनाथारु. धनपमाः
 रुग्णकृष्णः सम्यक्. प्रणिगधविश्रुतिगाः॥ इदं नमः अथैव. दकिनी सकयेयनेः॥ नपर्वनापर्वभक्त. जानयन्ति जपे विद्यः॥ आलाकसुसमसुख. व्याहननं पत्रस्य. सदानिधेकम
 ककु. सान्दीरुताहयवर्ण॥ कपालपुलिर्गप्रहसितामार्कगसुकर्कभं। स्वकवाप्रपतायकु. निनपककुनिधुर्न॥ उवसिपुनकृष्टिर्ग. कृष्णारुसिगानर्न। उकृल्लनननकु. नमकनर
 सावर्न॥ रुग्णद्वन्द्वविमिर्ग. कथयन्त्रप्रवर्तिर्ग। प्रमत्तावर्ककटिल. वलरुष्टि. नकागर्न॥ वरुनमकमककु. सुर्वायधविभारद। श्रीमथै. वृहन्ने. यष्टिवकुः॥ समसकट॥ गन्
 शादीसुसंघट. नक्षत्रकृष्टिविवाकली. स्फूर्तवजायुधनाक्षि. आर्षपलि. वधकली॥ क्वचित्पगन्नाभगजा. दायिताः स्वप्रपतिर्गः॥ क्वचित्पुनश्च गजवि. तयवज्रवधः॥ क्वचित्पुन॥ दधुय

ऊगदाभूल. भकिर्यद्वाङ्गरुदिर्ग। गमाधिपनवलिना. क्वचित्पयमुसदिर्ग॥ क्वचित्पयानि नभाह. कर्कमाहगमरुकी। क्वचित्पगन्मत्तुर्न. दंभिताधवराखरी॥ क्वचित्पमिगमा
 गङ्ग. मेगावगदिजाहर्न। क्वचिनादि यम. भोः मगसुटिनिपागिर्ग॥ वृषभ. उः क्वचित्पार्ग. क्वचित्पिस्विसमाहर्ग। क्वचिद्वज्रनवेरिर्त्रे. मन्त्रज्र. उ. व. ज्ञा॥ क्वचिद्वयप्रहायैम
 विद्वलमवनीगर्ग। क्वचिद्विवाशिर्ग. क्वचिद्वलकृमदरुर्ग॥ क्वचिद्वरुनवृत्तक. मनुमालाविरुधिर्ग। वृत्तकृमवर्ण. भकिरिर्गलितायध॥ सम्यक्मृदुपगाती. क
 लावीर्धस्यवर्जसा। पिनाकाकात्रमाकृष्ण. कुलगास्वललाटर्ग॥ कृमकृमययष्टि. युमुष्टि. रुनमृदुर्ग। वसदनेः॥ कृमयै. मयसन्दमगामर्ग॥ मलाकेः॥ मस्यैः
 मलेः॥ पट्टि. भोः मयलेयनेः॥ वसनयेः॥ कपाले. विकपालेः॥ सुखटकेः॥ वावरोविविधकारेः॥ पाभाकृममगानर्ग। नागार्थेः॥ कृमकुले. कार्मके. कृपवर्तिः॥ मिला
 लाष्टेः॥ कपाले. वज्रभकिर्गदेगलेः॥ खद्वाङ्गपत्रगु. पट्टेः॥ कृकयेयक. भोः वसेः॥ मसुसंघागर्ग. मिस्वि. उ. समकिर्ग। आगपगातिदियर्न. सायधस्यन्दनानिवा॥ कृया
 ननयद. भोः. प्रकीर्णसुखगदय। धार्मप्रवर्तिर्गयुद्ध. सनाधैरयका. वेर्ग॥ वधुसि. अत्रजुनिगा. यधुद्यागेः॥ कुमाकुमा. कनपाला. पगन्ना. ध. कृयवत्रवित्रभयः॥ भक
 यापेययापाक्षिसदामधुलिगानिधु। साकमकात्रमखरी. वालावलिपत्रीखवर्ण॥ कृमभात्रिगदहाकु. सावधुर्ग. रायैर्गुक्ति। दधुस्कापिनलकुनि. प्रय. धनिगतासवः॥ कृनाई

वीं वृत्तं किं पुनश्चादिरिष्टा कपालमागनेयं कौ खद्वाम कत्राखनी तादृश्यावपमानम् गतः श्री गालसंगकी यगुविद्युन्मगीनाम परीं त्रैलोक्यी सप्तता पिङ्गवर्देव गादवी ग
 थयात्पलमागने ॥ गङ्गापनी महाकुर्वा नादृश्यानुभागतः यगु सास्त्राटिका रुमिः ८ प्रतर्लनामरुतर्ल ॥ परीं कानि मगी ती गः प्रविष्टस्य स्याधिपः ॥ गजापि मकुदवभा
 गः ८ सप्तमन्त्रिगी ॥ रुमिन्यामाह संहिता खद्वामा मकु मयगी वीर्य भो र्थी किं गः ८ दवी गगत्या गवसी हिं गी ॥ परीं रसवती यग गजा कृष्ण समन्त्रिगी ॥ उ कृष्णमागने
 र्थका गजासापुनः ८ स्मिता ॥ कूयालापामहाकुर्वा गङ्गापित्वाववीदिदी निष्ठतिष्ठमहासूत स्वयि कृष्ण ८ पिना कथं कृ ॥ कृष्णवाग कृष्णपाप यगनाहं कृती जगत् कालेना नलम
 अस्मि सप्तमदं वकुर्गं कृ गत् ॥ अतः कृत्वाववा र्थं पुनर्थाहं समयगः ८ आविर्गं रुवमस्तु मया सन कत्र ८ मने ॥ आद्यातयन धाधध वधय न्यमनी मिवा प्रवक्ति नमहा
 मायी साया कृत्वा सहस्रम ८ ॥ वदुवद्व वनयित्वा नु वथं नु वगसमा कृती गिरिर्न कवटं दनि नृसपुत्रो मय पगिरि ८ ॥ बहुधा गमने र्थि पातयन माह मागना ८ यथा उ
 मय मय न वाहिनी वधित्री कृया ॥ पाटवज्र वमखन विद्युकाटि निरु कृती निरुत्तमस्य माया कृ मकु कृदं प्रवक्ति ॥ वाद्ये प्रगति वीर्यं चिन्त्ययित्वा मया मनी कृत्वा सर्व
 ववहिर्गं दानवैर्दुःसगर्धिर्गं ॥ रुगवीर्यं रुगसौ र्यं हिंसयित्वा मरु मयगी आकृष्टा नु सत्रकोष्ठ ८ मयम क्रास्मि गसर्व ॥ गस्यवर्म वमधु कृ गहीत्वा नु विनिर्गता समयाय गतः

१६४
 ६३

कृत्वा प्रगतिना समासवा ॥ गामासि क्कामु विह्वय रीता ८ सर्वदिवो कसा ८ उव ८ किं कर्म रुवद धान नृपा मगी वयः ८ गता वृक्षादया दवा ८ भिवना का ८ पुन न्याम न्यवम नमासा
 या स्वस्वामिनि पुना गता ८ ॥ इव रुव वसक्तिर्प वरुव ८ सत्रपद्वया ८ ॥ वृक्षा प्रावावम क्राया सुली मयद जम्बिक ॥ अर्धं भिव वयं मकु प्रार्थयित्वा पुनः ८ स्मिता ८ मकु नापि गथा ग
 क सप्तमन्त्र विरुधिर्ग ॥ वीक्षवा र्थं समात्र च साधविगसको भिकी ग्राममूर्च्छन ता नाथ ८ कृत्वा नृजगदपुत्र यन ॥ नृत्पन पत्रमादवा अस्माकं सहावासव मया गीर्ग समात्र र्ध
 सुर्व वृक्षादि रिरुथा ॥ विकासित कर्षिकात्र कमलात्पलने र्ज ॥ मकु निपुष्ट गम मक्षि पन्नग विविगनर् ॥ गिद भविला सिनी वदन प कृती गी गत र् ॥ कृवमिरु गत्र मासि व ८
 मभिर्व भिवसा ॥ कृवर्क सप्रम गऊ नहिर्ग अस्त्रवल रुर्ग गिद भाधि पता बहु मयन मासु सदा गि विद्रुह पत्र वन वरु गगन मथ पमुपन ॥ दवाधिद वव वय र्द पुन
 वाधि पुनः सख सख र्द ॥ रुगाधि रुग गुरु नन वच रु र्त्र विम भिनयन ॥ वदेर्मकु ८ पत्रि पठित विविधे ८ स्मिता मकु पत्र र्म ॥ वीक्षवध मयद ८ ८ म स्वे र्द विध वा र्थे र्द र्द रि
 र्थो र्दिवो र्जीये गी गत र् ॥ पदम गगल पुमाद्य र्ग ॥ ललिने ८ कन खे र्द ल्यवर्ग ॥ उय रुयद र्द वधु भिव ॥ ॥ रुगवान्वा च ॥ अतस्मिन्न नृने मकु चन्द्रकाटि समपरा ८
 सदा भिव सप्तम ८ ८ म कृत्वा मना रुग ८ ॥ वादसी कृद्वी हाथ वीक्ष रुक्ता ८ समा गता ८ मकु नासहिने ८ मकु नाना राव समन्त्रिगी ॥ सत्रा जाये विविधे मय वरु लारि ८ सख

[illegible]

नियोजयन् आकाशमनमद्वयं यथासूर्यस्य अर्धवत् ॥ पृथुवीकविनाशयः क्रमसंक्रान्तयवा ॥ जयसासर्वकार्याणां प्रवर्तयनिवर्तय ॥ नवादिनममन्त्रा वस्तुमात्रवर्त
स्तिता ॥ तस्यैकाभक्तु नरुका वृद्धाभार्यरुविषयथा वृष्टिमात्रग आकाशान्तरका नसम्प्रदास्यथा ॥ गदापापस्य चान्यत्रा गनसासुत्रिगाविरा ॥ वृद्धाभियस्त्वन्दन मयावैव
स्वर्गनव ॥ वृद्धासर्वद्वैम्बु वृद्धादद्याभ्यपूजिता ॥ तथामकादिरिदं यै वतन्मातृस्त्वैवर्ग ॥ प्रवर्तुमक्षिकुल लह कृष्टिगस्ययाग्रातर्ग कालमगिरीयर्ग विद्वन्वभमह
त्यर्ग ॥ कलस्यवभुवल्की उमत्रमृष्टवद्वाभिर्ग नमामिद्वयस्त्वैर्ग गिनयर्गमहादेवर्ग ॥ १ ॥ सितप्रवचपङ्कज उमत्रवैन्दनादाकल सदाविसुलविस्मृग विप्लवाऊह
सस्तिर्ग ॥ स्तिर्ग पुष्टिवैराऊग मयिदलापससविर्ग नमामिसहसापिगा महसमृद्धवामागर्ग ॥ २ ॥ कलकुमिसिगाकली कुहिनर्गखकन्दप्र स्रवर्गकिमधराधिर्ग सित
दवासनसस्तिर्ग ॥ ऊटाविकटकदधनियकुलखाकया नमामिगिगिखायर्ग पुष्टैर्गमनाथदहाऊर्ग ॥ ३ ॥ मयत्रवत्रममिनी दनदभुद्धवर्गकुलर्ग मधत्कनिगद्यष्टिका
निमित्तमकिहस्तद्यर्ग ॥ प्रतानिकवत्रमिर्मगमगयमानी मुकानिमासिगुहर्ग रवर्ग प्रियममकुनिर्गमनी ॥ ४ ॥ प्रसृगकसमागसीपययसात्र पूष्टुपमर्ग मदामूखलभानि
र्ग चन्यमर्गखवर्गवर्ग ॥ गत्रमवथसस्तिर्गविप्लपृथुवीककक्षर्ग नमाम्यक्तिगसुहर्ग विप्लसिद्धिर्गवैकुण्ठी ॥ ५ ॥ परित्रवत्रमूकलकु विवराहपूपाकली कपाधकवराख

चन्दनचन्दनाष्टमचक्रपार्थवित्वाप्तः आकनिन्द कर्मिभपाष्टाः। जेलपार्थिवरुमाः। स्तावचक्रमुरपदाष्टागद्विदेष्टिकावत्सः। तद्विद्विष्टः प्रतिस्तिताष्टागाशाकानाष्टाकायाः सर्वका
मरुलपुष्टिष्टासत्रमेष्टकाष्टाकं गुरुवास्तुविराकिर्गः॥ वललीमष्टपवत्सः यावज्जास्त्वापनेभुरा। गन्धनेवद्यधूपनः वलिमात्यविरुषाष्टा। अधिवासनपूर्वम् स्त्वापनी
यास्तुतद्विष्टः। वदधनिमहाष्टाष्टः। सुसङ्गीताष्टा। आरिर्गः॥ कर्कशस्त्वापनेनष्टाः। वद्वदिगनादिर्गः। गणोभुजागवत्कणः कर्कशमुरसङ्गलेष्टा। आख्यानेमीगवाभभु
वद्वीजाकष्टाष्टः। दभवात्रपूर्वम् कथवायायथाक्रमः॥ उर्वपुष्टवसिष्टाष्टः वलिस्त्वापदापयता। गथासाष्टगर्धपुष्टः दर्वत्रवद्विष्टः॥ सुसिष्टाष्टकचका
विष्टाष्टपूजनीयाष्टस्वभकिना। मगज्जावयत्कणः दवाष्टपूजार्थसिद्धयः॥ सर्वलक्ष्मिपूर्वम् सवधिकमष्टाचिर्गः। यापीष्टपगजार्गवाः वोटिकानवभारिर्गः॥ वरवाष्ट
र्थापर्मपनीः ध्वज्जुष्टविरुषिर्गः। दधदर्वददीपाष्टाः दय्यद्वयान्त्रपगः॥ दटिकापकुपष्टादिः दिनसर्वार्थसिद्धयः। कर्कवात्रकर्मकवाः यथाकालपत्रिष्टः॥ अने
नविष्टिवायम् सागवास्त्वापयत्रवष्टाष्टपूजनीयम् मनेयानिपत्रिर्गः॥ यगस्यदासकर्मिहा दाष्टाष्टादिकाष्टा। गपियानिदिर्ववत्सः किंपूनस्यवाभवाष्टा ॥
॥ वृष्टाष्टमाष्टप्रतिष्टामहागर्धः॥ १०२॥ ॥ अगस्त्यउवाच॥ ब्राह्मणकृतिगार्धः॥ दवायदिवास्ति यष्टा पूजयन्मागवाष्टकाः ससर्वलक्ष्मिर्गः॥ सुभयीप्रतिमि

काममनसिष्टाष्टा०

कृत्वा विष्टवायम् पूजयता। आत्मवित्वाप्तः सलक्ष्मिर्गः। उकावायदिवायार्धः दर्ववावत्सकीकर्वः। गजाननयूर्गपूजन् सर्वकामरुलपदः॥ वाक्कीष्टवद्वीद्वीको
मात्रीमकधर्मर्गः। पूष्टमानाष्टवाप्राप्तिः वृष्टिर्गः। लमूर्गः॥ वृष्टाष्टमहादवीः। त्रिनेत्रभूलभविष्टाः। पूष्टमानालक्ष्मिः। यष्टलमनमूर्गः। यष्टपूष्टगार्ग्यानिः सर्वलो
कस्यविष्टगः॥ तष्टपूजयसदासाम्। उष्टविष्टनममूर्गः॥ उष्टापि पूष्टगार्ग्यानिः विष्टविष्टिस्तावनष्टा। तष्टपूजयसदादवीः। सुभभुनिवर्हिष्टाः॥ दवावगात्रभभुष्टाष्टिः। वद्वि
ष्टुवाविष्टः। वाययार्धभिनयष्टसः वृष्टिर्गः। लमूर्गः॥ यष्टदवागुरुनिष्टः। विष्टादानेप्रवर्धयता। सरवत्सर्वलक्ष्मिर्गः। पूष्टपूजापदवृष्टगः॥ पृथिवीमत्रवद्विष्टः
हृष्टवद्विष्टगः॥ भभुष्टवाथप्रपावद्विष्टः। प्रयष्टाष्टादिमागमः॥ कात्रयन्माष्टपूजगः। सर्वकामानवाप्रयोगः॥ विष्टादानेप्रवर्धयामि यननुष्टातिमागवाष्टा। लिखानेदीयतयन
विष्टिगार्धः। सुभगः। सिद्धाकमाष्टभभुष्टाष्टिः। वदात्सर्वदिसाधकान्॥ तदभानीतिहासानिः दवाधर्मविष्टद्वयः। गभवृष्टवालगतुष्टः। रगतगुष्टिरेवर्वः॥ भभुष्टाष्टिप
नादानाः। मागवष्टरुलदानुष्टाः। आतिर्वद्विष्टभभुष्टाष्टिः। कलाकावभुरागमान्॥ दानादात्राग्यमाप्राप्तिः। गभधर्वलक्ष्मिर्गः। विष्टाष्टावर्गलक्ष्मिः। धर्माधर्मकुविष्टगः॥ ग
स्माद्विष्टासदादयाः दष्टाष्टरुलार्थिष्टा। महीदानष्टगभदानः। ह्रमवकुमिलार्गः॥ भन्यदीपात्रदानः। महादानानिदानसः। वृष्टगदीयतदानः। दीयमानेनवाधि

पाविश्याद्विद्विमाप्राप्ति दीयमानानिनिस्समः॥ उकावावह रु दानं दहं रवगिरुमिपा नहिगद्विद्यनरूप दहपागादननर्च॥ विद्यादानं दद दत्त उकाधदम धारवनामतभाका
 टिभगच्छ दिहणविद्यापात्रग॥ याह्नागस्तत्रदायादे ऊलवक्षि सत्रीसुपे॥ सर्वदानानिजीयन विद्याकायिनजीयन॥ विद्यादानेनदानानि नहिगुल्यानिवृद्धिमानाविद्या
 उवपर्वमन्य यरुस्यमनामय॥ मृत्पन्नस्यगुरुकि रक्तागुग्मपासुग । सगुविद्यागमानुतकि विद्याविद्यागितानुप॥ विद्याविवेकवाधन भुराभुरविद्याविद्योविद्य
 न सर्वकामानि तस्माद्विद्यापयामना॥ विद्यादानान्यर्चदानं नहर्तनरुविद्यानि । यनदह नप्रोप्राप्ति भिर्वपयमकात्रर्च॥ विद्याविद्यात्रतत्वह्ना याह्नासन्मानमभिनः॥
 ऊर्ध्वपिहिरागानि गच्छन्निपयमार्गि॥ अन्त्याजिपिगुणी प्राप्य कोउन्नग्रहवाकसे॥ साविशाकनमीयन यस्मा॥ सूर्यानसूर्यि॥ यवेन कृष्ण र्चरुनि सूर्यपदागु
 र्गर्मा मरुकापदमागस्य विषम्यविषमागतिशा॥ उर्वविधिविषवत्स विद्यामनुपरावग॥ जीर्यगुरुकिर्तप्रेरि सस्माद्विद्यापयापया॥ नहिविद्याकूलजातिनोपेपी
 रूषपागर्मा । उवागुसर्वलाकारा पठिगाउपकात्रिका॥ रूगेर्गहीमाविध्यसा धस्मावामरुपत्रगे॥ विद्याउत्कापयदत्त अन्नजस्यापिहस्तिका॥ सर्वेद्यामपिद्विद्वानी
 विद्याद्विद्विद्विमानगी । वयावृद्धीहिभृदुर्ध्व विभानीधनधन्यग॥ कृत्रियाक्षनुवीर्यध विप्राक्षीभमुपात्रग॥ विद्वर्ध्वध्वय गत्याविद्याय धारुर्च॥ पूरुनीय

१६९

निसर्वेषां विद्यावृद्धागत्रीयसी॥ गुग्मुग्मुषयाविद्या पृक्कलनधनेनवा विद्यायालरगविद्या चतुर्थनापपयन॥ याह्नागुमहीदत्ता मन्त्रुल्यक्रकाक्षर्च । सपयनायग॥
 कृत्तगस्योपदिभक्तविग॥ उर्वविधिविधमहाराग विद्यायात्रपवर्धित॥ संकषात्रयविस्मया रुस्यदानरुर्लभ॥ श्रीगाजीपयसः सभपयससक्ति । विविगकमिक
 पाध्वर्मसंपरीकृत॥ वकनअथकृष्ण मृदनावक्षितनवा दूरसुसुवद्वन उर्वविधकृतेनवा॥ यमुवाधमसारुर्मा संहितामपलेखयता ददाति या
 रियुक्ताय सयातिपयमार्गि॥ पूर्वविधपयदाभ सवविधविवर्द्धित॥ गमयनभुरनेव कुर्यामधुलकं वध॥ यदुहसुप्रमा धान भुरवयगुग्ममर्क ।
 तस्यमालिखेयदं निगत्रक वजादिहि॥ सर्वगुक्कमये॥ पृथ्वी रक्षयस्सर्वतादिमी वितानंदापयनसृष्टि भुरविगययिगिर्ग॥ पाध्वर्ग॥ सिगमेभ्वस
 म्यक । भार्गपुक्कल्ययगा कन्दकेवर्धवन्देभ्य दप्येधोभ्यमयेस्तथा॥ सृष्टिकिद्विनिमयेभ्य सर्वगउपकल्य यता तस्यमालिखेयैर्नु नागदन्तसर्मभुर
 ॥ अ५४ क॥ पुनिवर्द्धनु पाध्वर्गा रुत्रिदकिरि॥ लक्ष्मिर्गदरवभ्यन वर्द्धसुगुहवृद्धिमान॥ तस्माद्विद्यसाद्विद्यो पूरुर्कलिखेभुर । आलिख्यमपिगयेव
 पूरुयदिधिनागग॥ निरुदकेस्तथापृथ्वी॥ किमिकीटविवर्द्धिते॥ चन्दनेनसदप्येधो रसनाजवधूनयेग॥ धपक्षगुग्मुर्लदय गुग्मागुग्मिभिर्ग ।

[illegible]

॥ प्रधनेनैव विदितं नैव मस्य देवस्य अङ्गं । सामान्यं भिवतीत्यर्थः । मागत्रागत्राद्यव्यापनस्मिन् पूजां तथा कृत्वा देवदेवस्य सुलिने ॥ समर्पयत्यक्षय्यं । मागत्राः प्रीयतामि
ति ॥ सदा धनं न युक्ताय । विद्यादानं न तावत् । विद्यासंग्रहयुक्ताय । सर्वभूतमुक्तसम ॥ तने वरुणाय मुक्तस्यर्गं विनिवेदयत् ॥ उगदिताय वेङ्गान् । संध्यायां वा वयं
रुथा ॥ तनयाय न दत्ता । मूर्ध्नि समरिषि वयम् । भिवं वदेत्तु मयं । मूर्ध्नि उगत्तु ॥ प्रवृत्तं महाभक्तिः । दर्शनं न गवस्य । ज्ञायते नागस्य दहः सर्वावाधाः समन्विता ॥
अनेन विधिना यत् । विद्यादानं प्रयच्छति ॥ स एव सर्वलोकानां । दर्शनं दद्यात्तु न भवेत् ॥ स एव विदुः कृतस्तु । वक्त्रविष्णुन मस्तु ॥ सफूर्त्तान्प्राप्तं न वै । न विनः सफूर्त्तवत् ॥
उक्तं पापकलिनां । द्विष्टं लोकमहायगं ॥ यावत्तु त्वत्संस्थानं । मद्यं वा विविधायगं ॥ यावत्तु विष्णुलोकं । जीवन् विविधैः सर्वैः ॥ तदा किं तं समायागा । दद्यात्तु किं न गीतं
तु ॥ समस्तं गन्धसम्पन्नं । विद्यानं सजायते कलं । विद्यादानं प्रणवेन । योगभास्मिन् ददद्यदि ॥ आत्मविद्यानं रूपं । यद्युप्रयच्छति मानवः । अग्रे आत्मा लताप्राणि । आद्यं तु ल्येन
संभयः ॥ भुवि वा नैव विधिना । विद्यादानं रूलं लयत् ॥ तर्कान् रूपादकं । विधवा वा तद्दिभन् ॥ विद्यार्चनेन सदा दयं । वक्तुमर्थं गणान् । कृत्वा उदकं दीपं । य
स्माकं न विना न हि ॥ लेखनीयं न गीतं । मसीपुत्रं तु लेखनीं । दद्यात्तु लयत्तु वत्स । विद्यादानं मन्त्रं ॥ पुरुषां गवस्य दद्यात् । तस्य मां सः ॥ आत्मानं ॥ विद्यादानं म

177

ईकामप्रदालोकसर्व्वामपिवासव॥हिमवत्यचलनन्दादवीप्रत्यक्षसिद्धिदा॥सावर्त्मसगणज्ज्ञानाद्यागानियमकर्मक्षम॥सिद्धान्तयनविधिनाभिवनकथिगापुत्रा
।दद्यायाममभविन्द॥अवीर्णपत्रिपुष्करा॥तथागकथयिष्यामि॥अथगत्वेनवासव॥ ॥अगस्त्यउवाच॥प्रवंपृच्छ॥प्रावृक्षादयवाधनविद्यप।महारा
ग्वन्नुदयाया।नन्दायायतुर्लपन॥गीर्वाणायातुर्लपुष्प॥यथादद्यापपृच्छिर्त॥नरुहसंप्रवक्ष्यामि॥यथावदनुपूर्व्वस॥सूर्यलोर्कलरुद्राजन्।वृक्षक्षकधि
र्तन॥ ॥००॥यादयदव्यामहात्म्य॥१०४॥ ॥केलाभनिखनत्रये।नानाधनुविचित्रित॥अनेकनिखनार्कात्थु।गणगन्धर्व्वसविन॥सहस्रकिशोरापरा
तफकांचनरुषित॥दवगामुषिरि॥येव।सदासिद्धनिधविन॥विमानकाटिसंक्रन्त॥विमानध्वज।भारिग॥नृत्तनितनेवकयित्।कयिद्यादनिहृदरि
॥गयनिगणगन्धर्व्व।नृत्तनदवयोनयः।सगुम्दीनयन्त्रन्य॥अन्यविजयमङ्गले॥मुवनिर्गवान्दव॥सुषयध्वमहागपा॥चन्द्रादित्यग्रहायेव।गथा
गात्रागणअपि॥ययान्यगिदभा॥सिद्धायागसिद्धामहामखे॥भकाद्यालाकपालांथ॥वृक्षाविष्णुमन्त्रक्षम॥सर्व्वनमनिगनेव॥दियेभ्वर्य्य॥समन्विता॥

११२

[illegible]

विद्यानक्षत्रावापि न न्यायवैपरीत्यं कुर्यात् ॥ मन्त्रागमसर्वपापघ्ना यः स सर्वपापविनाशनश्च न्यायकान्तश्च ॥ प्रायः नगपुत्राणि न्यायशास्त्रं कुरुते न न्यायवैपरीत्यं कुर्यात् ॥ अतिवर्णयत्यस्मिन्नाशां अश्वमेध
 रत्नं गच्छी नराश्वकुपयपदं ॥ यमतामपययविः कुरुवानप्यगवाशा ॥ नगर्षा विद्यते मर्त्यः पुनरागमनं प्रियं ॥ तस्मात्किं वदुर्नाकेन न न्यायायत्तु लं प्रियं ॥
 सर्वगीर्वाणस्य सूर्यः सर्वयक्षस्य तुलः ॥ सर्वदानस्य स्यात्कः ॥ तपश्चाद्राज्यं ददाति ॥ काटिकाटिगुणं कुरुते यत्सूर्यः सकलैरवतः ॥ न न्यायस्य दमनादवि
 रवगच्छविद्यो न भवति ॥ ॥ दययाय ॥ अश्वमेधं महायक्षः सुपश्चाद्राज्यं ददाति ॥ देवः स न्यर्जनं त्रायः यत्तमेतत्कथं गमा ॥ ॥ पत्रमेधं त्रयवाय ॥ न
 हर्षं न वलागमसु होवा सुप्रवन्दिगः ॥ अरुत्वाय दीनत्वं यना रुमन्वगा कुर्वन् ॥ तपो यक्षस्य दवा नां स नर्पदविधिर्मगता न यवकादयो रदः ॥ तस्मिन् न्यायसि
 द्धा ॥ यामावनादिमन्त्रान् निवमकिमयः पत्रः ॥ तस्य पत्रमाभक्तिः सर्वकिल्बिषनाशनी ॥ तत्पुत्रावने प्राप्नोति ॥ तथा यक्षादिकं रत्नं ॥ मनुष्यं दवमकीर्णं
 न विद्याया वजाजनं ॥ कलिका हास्यवाकानि ग्रहगतिविषयपला ॥ नृवं कलिप्रगच्छात्र यस्मिन् हसमानरा ॥ ॥ कुरुते न न्यायसिद्धिं गमादिकं ॥ अश्वमेधं ददाति

अथ १

११३

किरणः यनर्त्तविस्मयंगता ॥ अङ्गुष्ठा नमागमः यारुयमहिना रत्नं ॥ नगसुहस्रपाशा ॥ नरुन्प्राप्तिसुन्दरि ॥ दयः पुत्रादिचर्माक्षः प्रवराश्चर्मदमकशातस्मिन् पुत्र
 नदवी मानसा कतिवदसा ॥ ॥ दययाय ॥ लोकानां कुमनां हानं मन्त्रागमपुत्रिपरा ॥ पूर्वपक्षासु हन्ताथ सत्यकृपाज्ञानिवाधये ॥ ॥ पत्रमेधं त्रयवाय ॥ मासे रात्रिप
 दयविः ॥ कुपेक्षु वृजसदा ॥ तस्य क्वाभवासा ॥ अन्यथा न कदाय न ॥ तेषां अश्वमेधनागसु पीर्णं कुर्यात्सुलावने ॥ नगकुरुते सुवा ॥ सिद्धा ॥ किं पुनर्मानवा दयः ॥ विषयाग
 रुता किं विद्विमवागपपीति ॥ विमर्शं न न्यायविः यानि दया ॥ पुसादग ॥ पापकर्म न गायतु ॥ गमश्चाख्यानिवाययत ॥ भवामेधनागसु निर्व्वकृतिगङ्गा ॥ क
 पिलं पिङ्गलं चैव धूमकं तुर्महावल ॥ सोमकश्चन्द्रनागश्च वक्रनिवदधिगा ॥ निर्व्वकृतिगङ्गा च पञ्चकाटि सुमन्विता ॥ ॥ उमा वाय ॥ किं पुत्रस्य तु विस्तारः ॥ का
 द्वि ॥ काय त्रसगा ॥ काया विन्यासहर्माक्षः कनवानिर्मितानु ॥ किं प्रमा ॥ अश्वमेधनागसु पीर्णं कुर्यात्सुलावने ॥ उमा वाय ॥ किं पुत्रस्य तु विस्तारः ॥ का
 कन्या न न्याया ॥ पुत्रास्तिगा ॥ कान्तस्य कथं प्राप्तिः सा सा सुप्रवत्त ॥ कनवद्वगपने व मन्त्रागुप्ते निगा ॥ म्रिय ॥ कस्मिन् पुत्रिगा दवी ॥ किं पुत्रस्य तु विस्तारः ॥ कस्मिन् पुत्रि
 द्धा सिद्धिः नियमकनवापरा ॥ लिंगनीलकण्ठं च यस्मिन् सिद्धानि साधका ॥ समयाश्च कटिपिका मनुजाश्च कोटम ॥ का दमं यजुर्न दया ॥ रूपकं चैव कीदृशी ॥ उमा

साम्भारिता ॥ विट्पद्मालम्भादुक्ता ॥ स्वर्नप्रभातपूजा ॥ नाथहीनामहादेवी ॥ नोद्रायमपूजाविद्या ॥ वर्जमर्त्यवदनिता ॥ पतिमात्रित्यसंस्क्रिता ॥ पतिही
नानपाताले ॥ अम्बिककल्पजायिता ॥ अपूर्णयाजनातीते ॥ नन्दायद्या ॥ पूजाप्रिये ॥ काटिकाटिरिक्तीक्ष्ण ॥ समन्तात्पूजितापूजा ॥ विद्यामयत्रयत्रय ॥ सर्वत्रि
पुगन्धानुलपना ॥ विष्णुमात्रध्यानित्य ॥ विष्णुत्रयरुचिता ॥ विष्णुवर्धुधरा ॥ सर्व ॥ विविगगतिगमिनी ॥ नानावोद्यतगानिर्ण ॥ नानागन्धर्वतयत्रा ॥ नाना
कीजप्रयुक्ता ॥ नानावाद्यत्रय ॥ सदा ॥ नानाभक्त्यर्थसंपन्ना ॥ नानालयवताम्रिय ॥ अक्रान्तयोवना ॥ सर्व ॥ कृतामृत्युविवर्जिता ॥ नन्दापूजवयंकन्या
मन्त्रसाधमवर्जिता ॥ ॥ उमावाय ॥ पूपागिमयसंपन्ना ॥ नानागुहसमन्विता ॥ किमर्थदृष्टिताजाना ॥ कान्तसौख्यविवर्जिता ॥ ॥ वृषीध्वजउवाय
॥ दमयन्तीयथाभागा ॥ नूपागिमयपावग ॥ दृष्टितासुनसंजाना ॥ कान्तसौख्यविवर्जिता ॥ अद्वैतावधकीजाना ॥ कपिलेस्पनुशासिता ॥ नूपस्यनुपरावन्
दासीजानानिलाहमा ॥ तस्मादूर्पनयकृति ॥ लकलकसुपाधना ॥ अतिरूपहसल्या ॥ पूजायासितापिया ॥ अथवासौख्यहीनमु ॥ जायगनुमहोतपा ॥ नन्दा
संख्या १ पा

पूजवन्दयि कन्यकानानुयष्टिनी ॥ गदाकृतमयारुद्रयन्त्रपृष्टययाप्रिये ॥ पूजास्तानानिवन्धामि ॥ यस्मिन्सान्निध्यगाव्रजता ॥ लिङ्गस्त्रीपूजयेद्देवी ॥ सुष्ठिलस्त्रीगणेशेव
य ॥ पूजकस्त्रीमहादेवि ॥ पादकप्रतिमासूय ॥ विष्णुत्रयमिश्रखण्ड ॥ कुलस्त्रीवापिपूजयेत् ॥ अग्निस्त्रीपूजयेत्प्राज्ञा ॥ रुद्रयेवासु ॥ अरुने ॥ अरिस्तान्महादेवि ॥ पू
जितावनेदारुवत ॥ ममपादध्वजं येषु ॥ हार्तद्विगपाधने ॥ तपिर्वयं दृष्टयद्वि ॥ वधर्मपरायण ॥ गल्लिंगसाधयन्मन्त्रो ॥ मुक्तादीयस्त्रिनिष्ठित ॥ कवादी
र्यस्तुतलिङ्गं ॥ यज्ञोपवीतसाधके ॥ अल्पसोरागधदं प्राक ॥ वदमन्त्रे ॥ प्रतिष्ठित ॥ साधिकावर्धुयलिङ्गं ॥ उक्तारगणेशेवय ॥ ह्यगर्थसाधकयुग ॥ सिद्धिदयापसिद्धि
दी ॥ ॥ ययवाय ॥ साधिकावर्धुयलिङ्गं ॥ मन्त्रहीनप्रतिष्ठित ॥ निवर्तिकाधिकावध ॥ अस्वयंस्वयन्तुर्व ॥ कर्षनिरकि ॥ गाल्प ॥ लाकानावासनार्थक ॥
द्विष्टुयमिदं ह्यन ॥ यागिनामपरायणवर्ज ॥ मर्त्येर्जुचयेर्त्रय ॥ कथंविहूपयसुरा ॥ ॥ वृषीध्वजउवाय ॥ साधुसाधुमहादेवि ॥ अहस्यमिदमूर्ध्नी ॥ यत्न
यायादिर्गुरु ॥ गुरुदेवमयान्यथा ॥ द्विष्टुयसूत्रे ॥ अपि ॥ किंपूजमर्त्यजुनुरि ॥ आधिस्यसाधककृ ॥ रुद्रयानन्दकावर्क ॥ वृद्धियाधायोसूय ॥ दयागि
लिङ्गदर्शन ॥ सयामानतगालिङ्गं ॥ निरुमानन्दयार्क ॥ स्वस्वप्राप्तपञ्चगनित्य ॥ विमनस्त्रीवर्जगर्जा ॥ रंजयपञ्चगनित्य ॥ कीजर्नमोहमहुल ॥ उमामरुध्वयवापि

यामयात्किफ. म्यात्राप्सव. मारिती. गच्छतन्यालाककु. तयदवीस. नात्रिहा. तमतकल्पकाटीनि. अस्त्रागनसविता. गदागुआग. तय. पयिआमक. राट.
 रवत. नन्दा. रुक. शिवरुका. नन्दाया. नेक. तय. ३॥ कारिक. पूरुयि. नानु. दवी. याति. ग. रु. रु. ३॥ अन. पार्न. ददन. वि. पु. क. न्या. या. म्नी. य. व. त. था. ॥ १॥ म्या. नि. ये. व. व. म्ना. नि.
 ग. थ. द. या. नि. द. कि. ३॥ म्या. ग. स. र्व. पा. पे. मु. रु. मा. क. र. रु. ने. त. पि. ॥ ६॥ रु. ने. व. र. व. या. गी. प. र. प. द. म. य. र्ग. म. र्ग. स. वि. धि. व. स्ता. न्या. द. वी. पू. रु. य. कू. क. मे. ३॥ ने. व. र्ग. प. य. प. रु. ॥
 द. या. क. न्या. म्या. व. क. ३॥ रा. रु. य. द. रु. य. द. स. व. रु. ३॥ की. ट. क. ला. रु. व. ३॥ प्रा. प्र. या. स. र्व. का. मा. नि. स. र्व. पा. पे. ३॥ पु. म. य. ग. पो. थ. द. वी. स. मा. थ. य. पू. रु. य. कू. व. रु. ३॥ म. रु. ३॥ नि. व. र्ग.
 म्ना. लि. त. र. व. रु. क. न्या. रा. रु. य. द. रु. य. त. ॥ पी. ने. व. रु. सु. थ. द. या. म. या. द. या. ति. ला. रु. वा. ३॥ अन. न. वि. धि. व. स्ता. का. द. वी. प्र. मी. द. ति. द. द. न. का. मि. का. न. रा. ग. न. न. क. य. स. प्र. र्व. न. य. त.
 ॥ सा. ध. न. पू. रु. य. द. वी. कू. रु. रु. वि. धि. व. त. मु. रु. ३॥ कू. रु. म. न. य. स. र्ग. ग. थ. स. म. प. ले. प. य. त. ॥ स्त्रा. पि. र्ग. वि. धि. पू. रु. य. कू. ग. त. ३॥ क. न्या. गु. रा. रु. य. त. दि. गी. म्या. य. धि. नी. रु. का. न. वि. धि. म.
 य. न. पा. य. से. ३॥ द. कि. म्ना. ति. ला. स. म. रु. य. थ. म. क्का. पु. दा. प. य. त. वि. रु. रु. पा. प. क. लि. ल. ३॥ स. र्व. र्ग. ग. थ. ना. नि. ग. ३॥ वि. म. रु. व. रु. प. य. थ. रु. व. न. न. व. स. रु. म. ३॥ द. रु. क. न. नि. दि. नी. ला. कू. स. र्व.
 द. व. न. म. रु. त. ३॥ वृ. रु. त. ना. र्ग. स. द. रु. अन. न. वि. धि. ना. न. प. ३॥ रु. रु. न्या. पू. रु. य. द. वी. स. रु. का. व. म. रु. ३॥ म. रु. ३॥ ग. थ. ने. व. रु. रु. का. धि. म. रु. वा. स. थ. ना. स. रु. रा. रु. य. रु. न्या. का. दि.

प्रा. न. द. कि. म्ना. ति. ला. स. म. सी. ॥ अन. न. रु. व. न. रा. गी. द. वी. ला. कू. रु. ग. रु. ति. सी. प्रा. फ. र्व. ग. मा. स. रु. द. वी. सी. कू. रु. म. ल. कू. ३॥ नि. व. र्ग. ल. रु. का. द. या. ग. थ. क. न्या. म्या. रा. रु. य. त. मि. य. म्या. व. क. व.
 रु. म्या. द. कि. म्या. य. थ. वि. धि. ॥ अन. न. स. र्व. का. मा. नि. प्रा. प्र. द. वि. वा. व. म्ना. गु. द. वी. ला. कू. रु. रु. द. स. प. रु. रा. म. नि. व. रु. ३॥ वे. म्ना. र्व. पू. रु. य. द. वी. क. र्कि. का. व. म. रु. ३॥ म. रु. ३॥ नि. व. र्ग. म. क. व. ३॥
 रु. रु. क. न्या. रा. रु. य. द. रु. य. त. ॥ म. रु. नि. रु. म. य. म्ना. धि. द. या. नि. दि. रु. स. रु. मे. ३॥ कू. रु. वी. रु. वि. धि. व. य. ग. थ. ग. म्या. र्व. कि. न. र्व. ३॥ रु. रु. म्या. रु. म्या. क. वी. पू. रु. य. व. क्का. म. क. कू. व. रु. के. ३॥ ग. थ. द. र्ग.
 य. ने. व. र्ग. य. न. पू. रु. म्या. क. न्या. का. ३॥ रा. रु. नी. या. स. थ. द. रु. द. रु. म. न. दि. व. रु. ३॥ ग. थ. द. या. रु. ल. कू. रु. ३॥ स. र्व. र्ग. वा. सि. ता. ३॥ म. रु. ३॥ अन. न. वा. म्या. न. रा. म. न. द. वी. कि. र्व. पु. य. रु. ति. ॥ आ. धा.
 रु. पू. रु. य. द. वी. प. र्व. नी. ला. स. ला. कू. रु. ३॥ ने. व. र्ग. म. रु. वा. रु. कू. स. द. धि. रु. क. पा. य. सी. ॥ क. न्या. दि. गी. मि. या. रा. आ. द. रु. य. रु. य. थ. व. ना. न. ना. ना. रु. मा. म्या. ग. म्या. ग. मि. ल. रु. म्या. मी. कि. के. ३॥
 पू. रु. य. रा. ग. व. ती. रु. कू. स. र्व. का. म. प्र. सि. रु. य. न. न्या. स. न. न्या. क. ल. का. उ. मा. रु. म. रु. मा. व. ती. ॥ म्या. र्व. स. र्व. र्ग. म्या. र्व. ना. ना. य. मी. स. व. रा. व. का. अ. म्या. का. व. ति. ना. मा. नि. म्या. व. रु. य. द. व. न. रु. मा. न.
 ॥ य. व. की. रु. य. नि. ग. थ. ग. न. वा. म. क. ल. म्या. ३॥ रु. व. कि. न. प. म्या. रु. ला. ३॥ पृ. थि. र्ग. ध. न. सी. प. दा. ३॥ म्या. नि. प. थ. सी. म. रु. रु. पी. ज. अनि. रु. म. ३॥ स. र्व. रु. व. ति. रु. मी. नि. य. र्व. कि. ति. य. रु. रु. मी.
 ॥ वृ. ना. नी. प्र. व. र्व. व. स्ता. स. मा. ना. रु. रु. पा. प. ग. ३॥ मी. सी. वा. पि. पु. कू. रु. यी. म्या. व. म्या. दि. कू. म. रु. ॥ ना. पू. रु. य. ३॥ प्रा. प्र. य. ग. व. स. न. र्व. न. प. व. र्व. सु. थ. प्रा. प्र. य. ग. व. ती. रा. वा. य. स. म्या. रु. य. न. नि. नी. ॥

॥ अतः ४ परं प्रवक्ष्यामि नूपसो राग्यकारकी नक्रगविचिनावत्स यथागुद्यतिमङ्गरी ॥ मार्गदात्रयसूत्रेण पादोक्तमित्यर्थः ४ मुकुटापूजयत्तसोपवासकु नक्रगान्कतुपावर्ष ॥ यथाप्यसुवि
आसिद्धं विल्वपर्युपपूजयेत् ॥ नक्रगान्कतुमुपूजित्वा कक्षान्कक्षपावर्ष ॥ यथाप्यसुखान्ताद्यनु उवाच त्वापपूजयेत् ॥ दक्षिणकृतुर्नैवर्ष काटि ४ कर्तिके र्यजत् ॥ दमने ४ सिग
पृथ्व्यं लज्जकादवीराजने ॥ रात्रपदधोवर्षा ॥ पूजयेत्कूर्म ४ सिंह ॥ कीमार्जदधिविप्राध ॥ नक्रगान्कतुपावर्ष ॥ पीष्ठाकृत्तिगतादद्या सरुकावमुज्येजत् ॥ घृतमासाज्जरा
श्च कु अन्नाभगत्राजयेत् ॥ कर्षिकावमुज्ये ४ पीते ॥ रज्जुर्नैव तपायित ॥ पृष्ठदामधनिष्ठासु रुमपृथ्व्यं ४ पूजयेत् ॥ कर्षुपेजावनेवर्ष दार्ढ्यमौ सुपूजयेत् ॥ मद्रूपं ४
सुगन्धं ४ दयं गार्धुपायसी ॥ कत्रोकत्रापूजित्वा उवाच तगत्रादिति ॥ गुर्जकीवकुनेवर्ष अंगुलीवपुनर्वसौ ॥ कूर्मनपूजयेत् ॥ दयं गार्धुपायसी ॥ नखान्गुज
अपेस्य पन्नागादिति ४ पूजयेत् ॥ राश्च नुमर्जितेदयं ग्रीवाधेष्ठासुपूजयेत् ॥ सितमाल्यादित्येवाया दयं गार्धुपायसी ॥ वक्रापृथ्व्यं दलेक ॥ पूजयेत् ॥ जयद्वि
॥ पृथ्व्यं ४ यथा ४ मर्कटान्कतुपावर्ष ॥ दमनान्स्वानिनादद्या ४ अत्रकी कूर्मनेर्यजत् ॥ रुमं कुमतरिषश्चा नागकम्भवन्दने ॥ खड्गं वक्रं वा राधं नासिकासु
मर्षायजत् ॥ यथाप्यसुखान्ताद्यनु उवाच त्वापपूजयेत् ॥ दक्षिणकृतुर्नैवर्ष काटि ४ कर्तिके र्यजत् ॥ दमने ४ सिग
पृथ्व्यं लज्जकादवीराजने ॥ रात्रपदधोवर्षा ॥ पूजयेत्कूर्म ४ सिंह ॥ कीमार्जदधिविप्राध ॥ नक्रगान्कतुपावर्ष ॥ पीष्ठाकृत्तिगतादद्या सरुकावमुज्येजत् ॥ घृतमासाज्जरा
श्च कु अन्नाभगत्राजयेत् ॥ कर्षिकावमुज्ये ४ पीते ॥ रज्जुर्नैव तपायित ॥ पृष्ठदामधनिष्ठासु रुमपृथ्व्यं ४ पूजयेत् ॥ कर्षुपेजावनेवर्ष दार्ढ्यमौ सुपूजयेत् ॥ मद्रूपं ४
सुगन्धं ४ दयं गार्धुपायसी ॥ कत्रोकत्रापूजित्वा उवाच तगत्रादिति ॥ गुर्जकीवकुनेवर्ष अंगुलीवपुनर्वसौ ॥ कूर्मनपूजयेत् ॥ दयं गार्धुपायसी ॥ नखान्गुज
अपेस्य पन्नागादिति ४ पूजयेत् ॥ राश्च नुमर्जितेदयं ग्रीवाधेष्ठासुपूजयेत् ॥ सितमाल्यादित्येवाया दयं गार्धुपायसी ॥ वक्रापृथ्व्यं दलेक ॥ पूजयेत् ॥ जयद्वि

अथ कादिमुने यजुर्ग। की मर्नी राजर्न दय। सादकं मन प्रपूजयेत् ॥ आद्यादि दूतमेदं वा ४ सृष्टिना नियता जर्न। न कणमा वाधे वा। नृपे पूजा विरि ४ सदा ॥ अमु
 वाप्यथ वा विष्णुं च गुरुमान दक्षिण ॥ दय विमु यर्ग विप्र सपथि कर्जि न्द्रिय ॥ दया ४ ॥ अमु अर्थ क मल निवहान विष्णु नद ॥ संपूर्ण चन्द्र वद न। पद्म पत्राय न कक्षा ॥ अ
 रना दमना मुग्धा। कर्षु यापि स्वर्मा सलो ॥ अद्या दय न ४ क ॥ अमु अर्थ का कल नादिनी ॥ ता शी शी पद्म पादा रण स्व हस्तान नना मिता ॥ ना रिपु दक्षिण वर्ग। प्रहा दधु निरा
 नृय ॥ स ॥ अमा मृदु मध्या च। सन्निष्ठा दुलि ॥ अना। प्रसादा मरु गारु र्म नृय पि मरु तु ४ ॥ पीन वका ४ पथरा ४ ॥ अमु चन्द्र निरा नना ४ ॥ सिन दका गज गमी ॥ म
 हा वल पत्रा कु म ४ ॥ प्रिय सवृ स्या क म्य पद्म पत्राय न कक्षा ४ ॥ सर्व अमु अर्थ व का च। मु धी वमन रा व क ४ ॥ काम तु ल्या म हा विप्र वृ न नाने न जा यत ॥ अ विष्णो ग
 अ ४ ॥ अना। सूखाना य मु रा ग म ४ ॥ न क गार्य म हा प ४ ॥ प ४ ॥ अमु वृ त म न र्म ॥ अ पा अ पि न रु द क्तु प्रिये ४ ॥ कार्य यदू यत ॥ अ पि दा वा र्थ क र्ता वि नृ या जि न नि स
 रु मः ॥ ॥ अ ४ ॥ अथ दय वता न कृ त वृ त ॥ १०० ॥ ॥ अ ग स्य उ वा च ॥ अ वा रु ता य च नृ ये च रं रा द प द न था ॥ मा धे तु गिल ध नं स्या त्सा द्या बाल
 रु त हि र्ण ॥ ॥ विष्णो ध व उ वा च ॥ का नि दाना नि दया या दया नि स नि स रु म ॥ का नि पा शा नि द म्भा वा काल दय विधि ४ ॥ गा य र्ण ॥ अमु मि क्ता मि कथ य स्य

प्रसादतः॥ ॥ अगस्त्य उवाच ॥ आ यतोऽनि प्राफानि ॥ मलान्यपि नृपा रुमा ॥ तानि दद्यानि दद्याया ॥ कन्यकाया विना सदा ॥ तदुक्तं च विप्रस्य ॥ अपत्रे च निरुपमं वा विमलं ॥
 प्रायश्चयस्य ॥ दवी कामानुप्रयच्छति ॥ यमं न चागच्छा ॥ मम नर्मदपुच्छं ॥ यथा मस्यां कुरु कुरु ॥ पुया गुरु कुरु ॥ कदाचिती मना दवे ॥ दक्षकं पूजया कुरु ॥ ग
 मयं च मलापुच्छं ॥ तथा अमत्र कुरु ॥ कालं कुरु ॥ अविधिं यथा स गुरु स्या ॥ दद्यात् रुमा ॥ गम्य ॥ गिल वस्तु ददादिकं ॥ विधिना उपासन ॥ उकार्त्तन कुरु ॥
 ॥ मुचि नारायण न ॥ का निसस्य वतादिना ॥ अपिसर्षपसायापि ॥ दानार्त्तना यददत्त ॥ यः पुनर्विधिना दवि ॥ दवी मद्यि स्याद्विधि ॥ विप्रस्य विप्रकन्यास ॥ तिलादि संप्रय
 च्छति ॥ तदा स तु द्या गे दवी ॥ अविप्रस्य विप्रया ॥ अतः पत्रं प्रयच्छामि ॥ न दद्याया ॥ पत्रं वृत्तं ॥ यन सी पत्रं वत्स ॥ अविप्रस्य मलात्मनी ॥ कामार्त्त पादकं कार्य ॥ यथा मला
 नुराविनः ॥ अमृद्वी कर्तविल्व ॥ पत्रं ॥ पृथिवी मलुगः ॥ दवी संप्रयच्छति ॥ सुष्ठिले प्रणिमाथ द्यावा ॥ तदुक्ता य विप्रस्य ॥ कन्यकास्य निवेदयेत् ॥ मय न सर्वपापसा ॥ स्वर्ग
 लोकं सगच्छति ॥ तनूये मलापुच्छं ॥ विद्याधर पतिरु वता ॥ कालेन वत्स साया ॥ पृथिवी नृपस रुमः ॥ त्वन न ग स दहा ॥ वृक्षा ददयता विना ॥ पुजापतिर्वसिष्ठ न ॥ कम्पस्य
 यदकयोः ॥ तथा सपिना कुरु ॥ कुरु यदपदवृत्तं ॥ मरुदेभ्यर्त्तका कया ॥ दवी पुच्छक का वत्स ॥ ॥ वृक्षा ददय वता ॥ १०१ ॥ ॥ अगस्त्य उवाच ॥ अथ चर्त्तप

नृपात्तं च उवाच ॥

वक्ष्यामि तव दानमनूकम् ॥ यन तु द्या प्रयादवी ॥ मुकुसुम रुमात्मनः ॥ नीलाम्बा यदि वा भवता ॥ पाटली कपिली मिवा ॥ मद्गन्धी वत्सवाला ॥ सुखदा र्त्तनी मया ॥ आ द्या विप्रि वदवीं ॥ पूजय
 त्मज्जप कुरु ॥ १०२ ॥ ॥ पत्रं पञ्चनिर्यासी ॥ नृपुत्रा गु वृन्दनी ॥ दद्यात् रुम नृपुत्रं ॥ न वक्ष्यमप कल्पयेत् ॥ या य स च ग स य कुरु ॥ कृमा पतत अहर्त्त ॥ विजाय नि वरकाय ॥ विनिवेदय
 वत्सगी ॥ सदा स वस्तु कामार्त्त ॥ मरुस्य धमया प्रयाता ॥ या वरुडा मसी ख्याता ॥ गाव दद्यात् पूजय स ग ॥ वृक्ष विगतः ॥ पापी ॥ जायत नृप स रुम ॥ मन्त्राया विधिं कुरु ॥ प्राफलो कस
 नूकमसा ॥ अहं कथयिष्यामि ॥ मृदु गा कुरु यथा विधि ॥ मुर्गा रुम मयी दवीं ॥ का वये उरु ग ॥ र्वृत्ती ॥ गा वस्तु प्रा वृत्ती कुरु ॥ पूजय दन दपरी ॥ विविग विग पृथी मु ॥ गम्य धूप
 निवेदने ॥ गम्य कामा पये दवीं ॥ गमि त वमान यत् ॥ दवी स्वय व प्रादया ॥ रु वरक व दी यगी ॥ पुनर्त्त विप्र ग जाय ॥ दापय वि वता विन ॥ अकुर्य रुल कामेन ॥ प्रायश्चित्त वि
 मुद्रये ॥ मन्त्रा वीर्त्तु मा सीत ॥ समाधाय सुतापम ॥ सफ पृथ्वी पान्दवी ॥ नपिकिलि व स स्तिगान् ॥ उरु न यत वत्स द व लोक म नूकम् ॥ ॥ वृक्षा ददय वता वत्स ॥ ग
 वृत्ती ॥ १०३ ॥ ॥ मन्त्रा वत्स ॥ मन्त्रा वत्स रुम दद्यात् ॥ कुरु वृत्ती मला रुली ॥ यथा माथ मनि ॥ मृष्ट च न्या ॥ सफाथ खलु ॥ विविगा वि व वत्ता वि ॥ यथा दद्यादि जा रुम ॥
 वत्स र्वय वत्स ॥ मन्त्रा नूकं यथा गान् दद्यात् ॥ आद्या र्वन्दनी दयी ॥ सकर्त्त मला रुली ॥ नवनी र्त्त नृमासि ॥ कुरु प्रीष्ट पदमर्त्त ॥ मुग्ध मर्त्त वत्स ॥ नृपात्तं च उवाच ॥

१८५

[illegible]

वनासुत्तमं गङ्गा नानां गच्छेव हि कात्यायनमुनेत्याहुः नद्यावत् सुखं लभेत् ॥ रावेन्त्यरावा रावानाः ससिद्धिः सिद्धिर्भवति ॥ अष्टत्त्वमिति संकल्पाः प्रजापत्यं प्रजाप
तिः ॥ अगनाथं नस्यास्य ॥ उगतं सुखं दुःखं ॥ उन्नातिरिक्तं गगनात् नक्षत्रं प्रजापतिः ॥ प्रजापतिं रोषी सतर्गं दुःखं यैर्भूदसा धवताः कालजा
स्तेवपुत्रं ॥ कालजास्तस्य चामया ॥ उगत्कावर्गं सर्वं कालसंज्ञं कावर्गं ॥ गच्छेत्तं विवदताः सुवायं पृथग् ॥ सर्वं यावत्तत्संज्ञं ॥ देवपुत्रं
पुत्रं भूयात् ॥ वादानुसंगि वादानुहि वेदानुसंगि वादानुहि ॥ पञ्चार्कं नैव गच्छन्ति तिलपीतकवर्गताः ॥ अर्द्धं - नैवार्कं यद्गच्छन्ति मन्त्रविन्दताः ॥ नावि
दुःखं तमस्काः ॥ ह्ययं ह्ययं प्रवर्तते ॥ कर्मदायं नानासु ॥ प्रकृत्यसूक्तं यवनाः ॥ पुत्र्यायं नानासूक्तं ॥ त्रसायां सर्ववर्तनाः ॥ कालानिष्ठादिनां सुखं ॥ सवर्ग
उक्तं कथं रवताः ॥ नहि आत्मानं दुःखं राशे ॥ धृक्पूर्व ॥ समायत्तं ॥ अकटेत्रिवर्गं ॥ संगागत्वा निमग्नं ॥ तथा प्रधनं पूसानां मन्यायां कविधीयते ॥
सायमकिञ्चिदेषां क्लावयिकायां महात्मनः ॥ दृष्ट्वा सर्वविद्यां सृष्ट्वा वैद्या विद्यां यथाभवति रावानां संपत्तिं जनधनं ॥ तथा भवविपद्यां धीन्विधि
नसमूहं यत् ॥ अथ गगनं रावता वचनं गगनिभस्य पुनरपि वासकः ॥ ॥ काभीपतिर्वायः ॥ रागवत्तसां यत्तस्य कृत्तिमिरस्य पुत्रस्य विपक्षिनिमिर

१५९

[illegible]

पयाम्मगजजयादयन्माहृदग ४ वधिमद्विभगिगुह्यगुल्लघ्नागाहमिष्टमपयुक्तं त्ववर्मवत्तमदकठिनं विषयधिकलसुखवत्तमपद्विन्नगमनादपत्रिसंस्थयविकल्पा
द्वयसंयोगकत्रयवाह्यत्वात् तत्त्ववत्त्वयोगविकावमत्रा ४ वधिमद्विभगिगुह्यगुल्लघ्नागाहमिष्टमपयुक्तं त्ववर्मवत्तमदकठिनं विषयधिकलसुखवत्तमपद्विन्नगमनादपत्रिसंस्थयविकल्पा
॥ ११४ ॥ ॥ अथ यदुवाच ॥ तद्यथास्त्रादिगाम्भलघ ४ भूकधन्यानां पञ्च दंष्ट्रसूतमा ४ म ४ समीधान्यानां अक्रुत्रिकमज्ञानां संध
र्वलवक्षणां जीवनीयानां कानां जाह्नव्यं मगमसानां लाव ४ पक्षिणं ब्रह्मणामस्यानां गार्धसर्पिः सर्पिषां रमणीयानां कीर्तिनां गिलगैर्लक्ष्मवलेक्षणां वराहवसानपम
गवसानां ॥ याऊर्हसवसाजलवत्रविहंगवसानां ॥ कूकूटवसाविक्रवभकुनिवसानां ॥ अजामद ४ मथामदसां भृङ्गवेर्न कन्यानां मृच्छीकालानां भर्कत्रकुविकात्राहमिति
॥ पुच्छयेवहिमालासातावविकात्राहमिष्टमपयुक्तं त्ववर्मवत्तमदकठिनं विषयधिकलसुखवत्तमपद्विन्नगमनादपत्रिसंस्थयविकल्पा
वर्षानादयमदकानां उषर्वलवक्षणां सर्वपञ्चकानां रमणीयानां मगमसानां काह ४ कपातपक्षिणं रकाविलभयानां विलिचिभामस्यानां आविकसर्पिः सर्पिषां अवि
कीर्तिनां कीर्तिनां कूकूटवसाविक्रवभकुनिवसानां ॥ मदिषवत्तमपद्विन्नगमनादपत्रिसंस्थयविकल्पा
काकमद्गुवभजलवत्रविहंगवसानां कावधुवभविक्त्रवभकुनिवसानां ॥

177

[illegible]

पिरुऊननीं मदनगलीं मदनस्कापनान्नवासनापाशानिनीं स्वदुर्लभविषयकानीं यदुवमुल्लसद्विषयकानीं स्त्रीकीर्तनीं कूविषयकानीं प्रत्यक्षपूषाभिषाविषाव
 नानीं विउम्रकूमिद्वानीं मिनीयगाकाविषयानीं वासाबागहवाधीं जामलकीं ययस्कापनानीं रुत्रिगकीं पथानीं उवहुमूलं वृषाबागहवाधीं पिप्यलीमूलं दीपनीयपावनीया
 रु. पुममानानीं त्रिगुणमूलं दीपनीय. गुदाभा. कभूलहवाधीं. पूष्यमूलं हिक्काभां सकामपाथमूलहवाधीं. मूलासां ग्राहिकदीपनीयपावनीयानीं. उदीयानिर्वाहीदीपनीय. क
 र्चितासावहवाधीं. कदुसां ग्राहिकदीपनीयानीं. अनन्तासां ग्राहिकवक्रपिरुपुममनानीं. अमृतासां ग्राहिकवागहवदीपनीय. भूषा. भागिरविचिन्दममनानीं. विल्वं सग्राहिकदी
 पनीयवागहवक्रममनानीं. अमिषिवादीपनीयसां. ग्राहिकसर्वदावहवाधीं. उस्तलजाकि. झूलवसां ग्राहिकवक्रपिरुपुममनानीं. द्वालरापिरु. भूषा. भा. वधनीं. गभप्रियम
 भा. जितपिक्कादिवागपुममनानीं. कूटकुल्यक. भूषापिरुवक्रसां ग्राहिककाप. भा. वधनीं. का. भयगनवक्रसां ग्राहिकपुममनानीं. पृष्णिपनीसां ग्राहिकदीपनीयवागहवा
 धीं. वृषाभा. विदात्रीगभ. वृषासर्वदावहवाधीं. वलासां ग्राहिकवलयवागहवाधीं. (ग. कू. व. ग. म. ग. क. कानिलहवाधीं. हि. गु. नि. र्वा. सु. क. दनीयदीपनीयानूलासिकवागहवक्रपुम
 मनानीं. अमृवंगसादीपनीयानूलासिकवागहवाधीं. पावकपुममनीयपा. भा. वधनीं. तक्राणासां गृहीयदावा. (ग. म. ग. व. प. स्व. पु. म. म. नानीं. कृया. भा. सा. र्वा. सा. गृहीयदाव

भा. व. भा. म. नानीं. की. व. ग. ता. र्वा. सा. व. सा. य. नानीं. सम. च. ग. म. कु. प्रा. सा. र्वा. सा. वृषा. दा. व. रु. ह. वा. धीं. अतिमा. न. न. मान. प्र. दा. व. रु. ह. नीं. य. भा. म. म. कृ. य. व. ला. वा. शि. म. म. कृ. ध. नीं. य. भा. सा. म. य.
 द्वा. च. व. रु. व. ४. ध. वा. नीं. काल. गा. ऊ. न. मा. भा. म. क. वा. धीं. ॥ व. ग. स. भा. व. ध. म. ना. वा. म. क. वा. धीं. रु. फ. वा. ला. व. गु. ध. नीं. गु. वृ. ला. ऊ. न. इ. र्वा. पा. का. नीं. उ. का. स. न. म. य. न. ला. ऊ. नीं. स. र्वा. प. त्रि. ध. म. क.
 वा. धीं. भु. कृ. व. ग. नि. ग. रु. ४. वा. ध. म. क. वा. धीं. दो. र्म. न. स. म. वृ. ध. धीं. वि. वा. दा. वा. ग. व. रु. न. नीं. स्त्रा. र्ज. ग. म. ह. वा. धीं. रु. र्वा. ध. नीं. (भा. क. ४. भा. व. ध. नीं. नि. वृ. रु. ४. पू. धि. क. व. ध. नीं. पू. धि. ४. स्वर.
 भा. व. ध. नीं. स. त्रि. पा. ना. इ. धि. कि. स्त्रा. नीं. द्वा. वा. वा. म. नीं. कू. र्वा. दी. र्वा. वा. म. धीं. भा. ऊ. य. क्का. वा. ग. स. म. रु. नीं. सु. का. व. ४. सु. र्वा. ना. मि. नि. ॥ सर्व. र्वा. सा. ध. ने. रु. रु. वा. वा. म. धीं. स. म. दा. रु. नीं.
 त. र्वा. प. ले. प. ना. व. स. प्र. ध. म. र्वा. स. म. य. स. त्. ॥ व. दा. धा. नीं. य. भा. म. ग. नि. व. रि. ध. म. नि. स. रु. म. ४. उ. पा. धा. नीं. य. भा. म. र्वा. दा. य. र्वा. दा. व. ४. स. त. ४. क. पि. ला. रु. म. कृ. कि. म. व. म. ध. कृ. ल.
 दा. धि. प. ४. म. य. ला. नि. य. वा. वृ. ४. पू. ल. स. ४. पू. ल. रु. रु. वि. ४. य. ऊ. न. ४. सा. म. क. वृ. नू. का. मि. का. ऊ. न. का. व. पृ. ४. रु. व. ४. स. मा. लि. दी. पि. म. र्वा. ला. नू. व. र्वा. ४. प्र. रा. क. वि. ४. स. र्वा. ध. म. हि. मा.
 पि. धा. वृ. क्का. द. क. ४. पु. जा. प. नि. ४. अ. धि. नो. वृ. रु. ला. अ. रि. व. र्वा. व. द. वि. दी. व. वा. ४. आ. य. र्वा. दी. र्वा. कृ. म. ला. अ. म. व. र्वा. ग. ता. म. ने. ॥ मि. ना. ध. म. प. का. वा. य. अ. प. रा. वा. य. म. ग. व. हि. ता. हि.
 त. र्वा. व. रु. य. द. द. द. प्र. रा. ध. नीं. ॥ स्व. हि. र्वा. प. त्र. प्री. ति. नीं. मि. व. न. प. व. मा. म. ना. र्वा. द्वा. कि. र्वा. म. ता. व. स. आ. य. र्वा. व. ४. प्र. का. मि. क. ४. ॥ ॥ वृ. र्वा. म. र्वा. व. वा. व. ता. व. आ. य. र्वा. द. नि. र्वा. म. ४.

हि. वक्रिनायकमकर्म॥ मुकुटसुखसिद्धिः। योगिनिष्ठप्रतिपादिगा। अथयेन्द्रिमेले। समुद्रमगधपन॥ उपपूर्यवमहीर्य। विधिवत्प्रतिपादिगी। जर्वहृत्तागतसु
 स्प. भं कदादिमहाप्रती॥ दक्षानिदियोगासाहि. समुद्रादिवगानिव। अरिथिक४ भिवनास्य. सर्वमनायकाखान्॥ रविगासर्वकार्यव. स्वयंदवयनायक४ विनाय
 कतिदवानी. लोकव्यामिदुदिव्याति॥ ॥ वृत्ताशविनायकारिथकववदानं॥ ११२॥ वसिष्ठउवाच॥ मुमुक्षुविनायकविष्णो. अरिथिकगजाननं। किंकर्षन्
 दवगठु४ किम्यामकनकमयो॥ ॥ मन्त्रवाच॥ पूनस्तुतदादव. गजवकुमहावली। विद्वस्यचागनाथीय. प्रायथोउपयापनं॥ यजसोदनुभाईल४ सर्वद
 वरयावह४ अयताकुयमानन. पाऊनामविस्तव४। दभमनयपादार्क. पदातिनवसफवा. गथार्गसहसादृष्टा. गजवकुददानवान्॥ मायामयानिभूधम. मयूता
 निवेपेकि. आसन४ समवीर्यादि. सर्वभक्तुविद्यानिव॥ कृत्याङ्गासुथायावान्. संग्राममरावमहत्। दानयेन्निर्किगा४ सर्व. विष्णुर्गेजवाहिनी॥ दवा४ पम्भक्ति
 प्रका. यदिरा. अविनायक४ गदानजानीम४ कस्मा. द्र. कामस्यसंगत॥ दवन्मूलिनागस्मा. वक्रिधायक्रिधायगा। यकानिदियवासाहि. गथार्गनेवभगित४। वि
 दृक्षसन्४ सत्रञ्च। गठुपुनमयत४। गथविनायक४ कुक्षीगहीत्याभं कवायुध॥ विद्वस्यविचिदक४. विद्वान्पापान्निवाययत्। विद्वान्पापान्निवाययत्। सर्वज्ञान

पिशातयेत्॥ जर्वहृत्तामहावीर्य. गपक्षिद्रसमहृवी. वृन्दुस्यविपुलंशर्ष. प्रदयोअरयस्रान्॥ ॥ वृत्ताशदवावगात्रविधुवध४॥ १२०॥ ॥ वसिष्ठउवाच॥ क
 स्यकिर्द्वैरवदुम्भ. गपस्ययत्रिगाविगा। यस्मिन्विधु४ समस्यत्र४ सर्वदवरयावह४॥ ॥ मन्त्रवाच॥ ब्राह्मण४ सुष्टिकामस्य. गमादोयत्रतस्य४। गपसामनविद्वस्य
 महासाह४ प्रजायत॥ गस्यमाहस्यमृधस्य. नष्ट४ सत्यसादि४। अवहृमिवविष्णुर्ना. कृत्याहमितिदवगा॥ कर्त्तुर्कर्त्तवराकाव. नान्यानास्तीहयावरीत॥ गतरुसन्
 सन्भय. यस्यवकुदवावृर्ष॥ गस्यकालासमस्यत्रा. गस्मिन्धात्रमहावल४॥ वक्रपाणिपिभलीय. गङ्गमानपिगामर्ष। रायङ्गमू४ स्रमाध. दानवाधैसखावरु
 ४॥ गगाईद्रुसहर्षु. वर्यामिद्रुसहर्षु४। ननिर्किगायदासावे. वक्रधमसत्यरूपिध॥ गदानायाय. लोउम. सुपदवउमापति४। खद्याविनामहत्कृष्टि. सुजमानामहा
 वली॥ दवापिभूलिनीराड्। महामोडीकपालिनी। पिग्मकीराविनीऊर्क। कृजकुविहगाननं॥ स्वागतगिगदादृष्टा. रकंदवउनाईनं॥ भिवस्यमगिमाविभ. गम
 र्वगीतसूत्र४॥ ॥ विष्णुवाच॥ कुंकात्रसूरिसंस्कारु. माणययविरुषिर्ग। कलागीर्गवदवर्षवर्षध. गपयकसंस्तुतवन्द्य॥ कदडाऊगपतिपमदडा
 वलतिकमद्रुंकावमयमकायमकार्थगर्तजवेदितपत्रमं। पुववमनससामयहं पत्रिप०॥ रुद्रिद्वयंहामक. वन्मर्दयजमानमयं यहाधिपतित्रयामि। भिसे

ममकाधत्तमस्यन. पमाईयायकमवानविनामरावरुस्य. किनुमेलाकुमस्तिग॥ रावनीया४सुगामवा. या४ममकपविभ्रवा४गान्कवापीधनवत्स. विभ्रमस्यक्रियगयग
 ॥ननरुफानवाधक. वृक्षजावृक्षदीगथा. यावदवीमहागाम. गवरुधवपृष्ठग॥ लक्ष्मीसुहायेनागय. ममगज४समरुव४उस्यविभ्रनामय. विभ्रमसविभ्रमस्यति॥ ग
 दालजववाविभ्र. रुय४पृष्ठमिभकरी. कियकपर्वगदव. मलाकालसूत्राकम॥ स्कागर्थकिंयसादया. गगुधपाएविभ्रमि॥ ॥दवउवाय॥ मालयपर्वगविभ्र. लया.
 लक्ष्मीसुतननु. देयांमेयीमनेरुत्वा. नामावेसर्वमझली॥ स्कागर्थमकवागु. मदीयसूत्रसुम. गदाजगल्यदवीसा. सर्वकावदकावभा॥ हसमानस्यगवत्स. विभ्रमस्यति
 मयासमी. गजवकुनवकार्य. सर्वविभ्रविनामनी॥ सर्वदवमयंदव. एविभ्रमिसूत्राकम. नायकसर्वदयाना. मनायकस्वयकुर्व॥ सागुमधुलमधुसु. ममगुसूत्रपि
 ॥१॥॥॥अनवरुनैपू. गववर्धरविभ्रमि॥ लयापिगददव. मगर्थविवि. येसुर्व४नियामकव. विभ्रम. गजदगदमायुध॥ गदवृविभ्रदेसु. समयास्य
 मिरुधरी. गजाननापिमालय. विभ्ररुत्वावजिस्यसि॥ जक्रासूत्रविनामय. हत्वादेसुसुलासकी. पुन४पादकिंयवत्स. आगमिभ्रमिविभ्रम॥ गगगगानल्लगर्थ. विभ्रम
 सजनादन. सुलासयमसायाका. यविभ्रममनीवजा४॥ गगुधपापिविभ्रम. यावकागमनीपुति॥ ॥मनूवाय॥ जर्वदवावर्दव४कमवस्ययथसिती. गविभ्रम

गमईरुत्वा. गणवान्त्रधीयगी॥ जगनुनायकात्यकिविभ्रसुहवहानिजा. सुवदिव्यावगार्थय. विभ्र. गीर्वनूपकी॥ कथिगमनिमईल. सर्वपापप्रक्षमनी. यमुरस्यसमूहाय
 प्राग४कारुयगनव४॥ नगस्यरावराविभ्र. धर्मकामार्थमिभ्र. सुर्वविभ्रविनामस्यपठिभ्रमिअनूरुम॥ विभ्रमगविनिर्मुक. वृक्षमामाज्ञाविभ्रमि॥ गपयुकीव
 यादयो. अयिसिद्धनवावला॥ प०गल्लु. धपत. कत्रतालेसुगमयति. नगस्यपुनर्वधु. एवर्तकर्मकागन४॥ सादगमिवलाकनु. यगदव४सहामया. समसुवक
 गीपापी. सुसुत्वायपाहति॥ विभ्रत्वादिजुत्वादि. अकामस्यवगस्यवा. ममगनागसुदह४सगर्तकुवधमिदव४॥ जर्वपूर्वमहावाहा. पृष्ठगावृक्षदकया४क
 थिगविभ्रनाज्यासी. रुधायसुविपुज्ये४॥ मन्वादिदि४गुर्गगया. ममयासिद्धकाधपात. प्राईहनुपमईल. गधगकथिगमया॥ ॥६॥॥॥अथवदवाधवि
 क्षावत्रलवि४॥ १२२॥ ॥वसिष्ठउवाय॥ कथंयदासूत्रावृक्षनूपसुधातुसुधावृक्ष४यनवृक्षादयादवा. वमईरुत्वासुगसने॥ जगद्विभ्रमिभ्रमि. महाकी
 हल्लमम. कथगामुधिसूखानी. पृष्ठगीसंभयायह॥ ॥मनूवाय॥ यादवीसाप्राविभ्र. वर्वदवादिर्वपुति॥ ॥७॥॥॥अथरुगदानुस्य४साभिदे. नमहासना॥ व
 कृ४४सुष्टिकामकु. पुष्टिग४स्तिनिकाविधी॥ गदवृमामाहमापरा४सर्वदनुवलाकुमा४गपुष्टगपदवदवायाधनकास्यया॥ ॥वसिष्ठउवाय॥ उपसि

स्य दवर्ष दनूनायस्यमस्तु नाकिं वाक्यं विप्रस्य माधुष्यात्रकनकर्थ ॥ कथं वायवदवस्य तुमुष्टासहसामिवागदहं आमुमिकामि यथावसमकथगी ॥
 ॥ मनूयाय ॥ अतीवगपसागस्य असूयस्यमहात्मनः सर्वदेवाहयं जम्बूद्वीपाफनमं शिष्यं ॥ यगावकादयादवाः सर्वविष्णुप्रागमाः मिवायरावमाह
 य दयावाधनकास्यया ॥ वृहस्पतिमहाप्राह सर्वभास्वार्थपात्रगः उवाचमध्वर्यावाधीः प्रभुयान्गर्गभुर्ग ॥ ॥ वृहस्पतिव्याय ॥ रगवन्धवदवम सर्व
 दव नमस्तुत ॥ गायत्रीसूत्राऊच निर्मलं भद्रं स कट ॥ यथाखदासुर्गदव हत्वासूत्रवयाविष्ट ॥ दिवमकुस्यसुखदं रवर्गगद्विधीयती ॥ उर्वतस्यवयः ॥
 ग्रहवाऊस्यहृन्प ॥ मारोषीवदगदवा दयास्तुनसंस्तुर्ग ॥ ॥ वसिष्ठउवाच ॥ कथं खदासूत्राय ऊच दनूजावलदविताः ॥ कथं वाहृत्रिभ्यन्धस्य अपमस्य
 रूपस्तिगः ॥ माधुष्याः समयाधार्वा बाहुर्गगउपस्तिगः ॥ ॥ वृहस्पतिव्याय ॥ महारयं तदाध्यात्र पत्रककृकमकृत्र ॥ माधुष्याः अविभर्द्धलः ॥ कयायमनी
 गतः ॥ सामंभनामगीर्थु सवस्वयासुहृभुर्ग ॥ अस्तिकागत्रुदाधी यामुं वाक्कीवेकुवी ॥ मागगार्पवकीतग सान्निभं गप्रजिगी ॥ पूजयासासदवर्षिर्दिनाक
 र्गस्वराविर्ग ॥ ततस्तुष्टामहागम स्थानकिंसन्निवभित्र ॥ वरं कुस्तिमनिभ्रष्ट यरुद्विद्यवस्तिर्ग ॥ गतः सजवनीमला मित्रसारिप्रक्षमवात्रकती हृत्रिचन्द्र

सु यदिमुष्टामममिवा ॥ ॥ कोमार्यवाय ॥ संपूर्णमधुर्लवक्र नत्वमार्गमिवात्मकीविम्बाडोनिष्ठगनिर्ण तस्मिन्दुकानपरावग ॥ अपमस्यप्रादक यरुकर्मवि
 रूपते ॥ मसितामननाआसी रुधराहस्यविष्णुना ॥ बाहुर्गमसमस्यत्र अष्टोद्वाधभात्मिक ॥ माहयर्कमहागर्ग विष्णुनासन्निवभित्र ॥ तं पूजयमनिभ्रष्ट हृत्रिभ्य
 उस्वप्रदं ॥ दिनादोमध्वसम्भासूत्रादिजकाधस्य ॥ पञ्चार्नयावधिपञ्च पूजितासुखदाभिवा ॥ जागीमुखध्वपुष्पीविल्लादिभादलेदले ॥ दोपध्वपापहात्रेभ्य
 सुग ॥ ॥ ८ ॥ सुसादिरिष्ट पूजितामायविद्याका हृतिप्रदातगभुर्ग ॥ मत्पुपसर्गभमनी ग्रहस्वक्ता नवात्रिका ॥ मासाद्यैवलिदानेभ्य पथिवीपातिसामिवा ॥ उर्ववपञ्चकी
 दभात्कीमात्रीमरुताविगः ॥ गत्याविम्बाडिभिरवत्र नर्मदाउपगृहिग ॥ पूजयासासतादया हृत्रिभ्यन्धायप्राददा ॥ उकरकननकन उपवास अयाविर्ग ॥ सफाहाद
 वदादया अनिरुतासुदादिज ॥ वरं यसर्वदमिल विमलं प्राग्निदभर्न ॥ दासफगिसहस्रेकु प्राफर्वासुपसागदा ॥ ॥ १२३ ॥ ॥
 ॥ वसिष्ठउवाच ॥ अन्यपियदिज भ्रष्ट दिजारुपाविभावला ॥ ॥ ८ ॥ जावाहकिमाह्वय पूजयिष्यमिमागवः ॥ नगर्वाविप्रगृह्या हयंकिष्टिद्रुविद्यति ॥ गवन्धरविपय
 सा दिजायरुसमाकुला ॥ निवृत्तवेवाहपाला एविद्यकिनसंभयः ॥ सूरिर्कृममागार्ध पर्यय कामदृष्टिदः ॥ रवतभस्यसम्यक् सितागान्पूजनास्तदा ॥ विवकनामुया

यथा. गिरिद्वर्गसंस्क्रिताशाशापुत्रजयविजिताम्रज. नृपराजविजिताम्रज. अनाथासलिनादीना. बलिनायविजिताम्रज. सुकृत्सुपूजिताविजिताम्रज. सुर्वकामरुतप्रदा। उकाहसपिथेरु
 क्री. कन्यासंस्क्रितादिशकये॥ पूजयित्वाभिवाचकं. दीपान् संधाययति॥ गलतर्कमुत्तराशा. नायमात्राग्निसंपद॥ सुस्थकालेनुसंप्राप्तं. पूजयित्वागुमागव॥ यददन्ति
 चतदीपान्. सिद्धयपलनान्वितं॥ नरोर्याद्विर्गकिष्कि. द्विद्यतमनिसरुम। ब्रह्मवक्त्रातथावरीम॥ सुक्याविसूर्यभाहवि॥ पत्रयविद्युसहिता॥ श्रीरूपा॥ सफसंस्क्रिता॥
 मागायापूजनादिपु. सर्वदवाभ्यपूजिताशा॥ पि॥ कालं सफकालं वा. उकीपञ्चकमववा। पूजयित्वाकन्यासक. कर्षपूजां नलक्ष्यत॥ गत॥ पत्रनवीकिष्किरुति
 यलाकवविद्यत। यथाजीर्णस्यसंस्क्रिताया. तवराजकुतागुवि॥ ॥ ६० ॥ यथायमाह कापूजा॥ १२४॥ ॥ वसिष्ठउवाच॥ सोतत्रारोत्रवद्वर्गी. भाधु। गुरु
 समाभिगासा। बालयित्वाथप्रासादं. कुर्याद्यकुद्विजिताम्रज॥ पञ्चसुदार्ढ्यमेलत्वा. तस्यपूजयित्वा॥ ६१ ॥ पुष्पं पुष्पविष्णुना. सूर्यस्यवद्विजिताम्रज। नाहुर्नभस्यतसार्
 माहृषीनयरीत्रव॥ दूर्गाया॥ सर्वकालं तु. बालनं मातयासुवा। नवरदासमाख्यागा. उकमकनमातव॥ तासां तु नायिकोदयी. यामूष्ठावृथागिनी। तस्यासु. बालनं
 कार्य. मध्यामाहृषीरादिज॥ कालिकावकुधाजावा. दमनीबालवाकथा॥ बालनं विहितावत्स. द्वादशमाहृजं पिवा। भगवत्कनयायन. स्नापयित्वा बलिं क्रियेत्॥ वक्र

वसुविमिश्रानु. मयसां साकतान्विता। यत्वादिशु समसासु. बालयत्रुर्द्विर्कागथा॥ आविष्टाकथयामन्ती. यदा बालयतमिदी। तथामर्माविजानीत. राजापतिवसुधर्मी॥ बालि
 तादक्रिभनया. यारुवर्षांनुवापयत्॥ हमलाङ्गलिकं कृत्वा. भिर्वान्यविपञ्चिता। बालवजादिवकु. विषयकृत्सु मयद्विज॥ कीववृकसमीधमु. कृत्वादावीर्दरु
 द्विगा॥ मेलं सहासुसिक्किन्वा. तदायान्यनिवभयता। प्रमिष्टाविधिमाश्रित्य. सर्वकुर्याद्विजिताम्रज॥ स्वनस्वनविधानेन. मर्क॥ ६२ ॥ स्नापयद्व
 गावत्स. माहृषीमाहृकाविधि॥ जीर्णदवाथप्रासादं॥ पुनर्हंसंस्क्रितादिज॥ अभावास्तुविजानीया. कृतयाहंससुधिय॥ मूलाकृतगुर्धपूज. साप्रयाजीर्ण
 कावक॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन. जीर्णपार्थविपञ्चिता। अन्यदबालयवत्स. यस्मिन्मपिगिष्ठमि॥ तयैतद्विजानीया. दूर्तिकृताकर्षविवा। जीर्णदहं तथा
 यही. त्यक्त्वायान्यसमाश्रयात्॥ यवगाजीर्णप्रासादं. त्यक्त्वाअन्यपयाकिह। तस्मिन्मपिभायाया. आश्रितारयदानर्था॥ उदासयनितस्मान्. कूर्चगिदावृक्ष
 नी। नि॥ ६३ ॥ भावास्तुवन्वत्स. तस्मात्ताकानसंभय॥ ग्रहसुखाविदिष्टा. याकिनाभंसहानपि। तस्मात्संक्रयर्षस. पूजार्थनायथायसत्॥ दर्वयबालयवापि
 जीर्णजीर्णनियोजयत्। तथासदाहवत्सुजा. तथाकार्याविपञ्चिता॥ मूलमवाप्रयात्पूज्यं पुष्पांभनमहात्मने। कर्कभगाधिकं मूलात्. आप्रयादविवात्रयन्॥

700

[illegible]

मल्लीव. वृहतीमगपणिका। वीराकसूमकम्राव. विल्वपाटलमालगी॥ जवाविचकलाभक. वकनीलासलासिगा। पकडा४४नपगम्य. दमभपस्थवृद्धय॥ नृगसुजुयद
 वी. माभुसिद्धिप्रयकृति। डाहपुष्यसमाकीर्ति. नीलापामार्जपणिका४॥ सुवसावर्चगरडा. सुवरीकलमल्लिका। दमनामपगम्य. मगभपस्थवृद्धय॥ कदम्बवर्चयडापी. म
 ल्लिकाउरया४४मुता। दिवाभयाक्षिप्याक्षि. यथलारनपुजयगू॥ कीटकभपविद्यानि. भावपय्यविगानिवास्वयपगितप्यानि. त्यउदपुनानिव॥ मकूलवर्चयदवी. म
 पक्कीननिवदयता। रुलीकथितविद्धे. कालापकमपित्यउत॥ जलारनयप्याक्षि. पगम्यपिनिवदयगू। रुलागामपलागु. रुदागुलीषधीवपि॥ डायधानामलारु
 रुक्मावनिपूजिता॥ य४रुप्यात्रनिवावाम. माभुविद्यादिभारिगी। जागीविजयगार्क. कववीगकुकुके४। पूनागगवकुले. वभकासलवमके४। कदलीहमप्याथे. स
 सपृथरुलभृष्ट॥ यावकसुगुसुर्म. वीजसुगिरुलानिवा. गावद्वसुसुमाक्षि. दयालाकसमादने॥ ॥००॥ यप्यविधि४॥ १३०॥ ॥नववाहनउवाय॥
 समसुधर्मकथनं गववकुं विनिर्मूनी। गुरुरुपापिपुष्कामि. दयागुपुपुजनी॥ ॥जगत्सुउवाय॥ रुगुरुगुरुमभवा. वडास्यगिगिकनयव। नदीनदसमदवा. न
 काककपवर्जित॥ न्यविरकऊनसीकीर्तु. गुरवासुपयात्रित। स्यासाभमुविधानेन. मनुपुर्वकपाकम॥ दयासुलाक्षयकु. दुल्यस्वकासनेस्ति४। मद्रवमीकगमसु. रु

मकार्यमप्रतिता। जर्वविचल्लिगामकु. सुधुपसिगवासुसुहाविगानधुसुं कने. कदुयकुविहयित॥ मजावमेकनस्काने. दया४स्त्रानादिका४क्रियाकृत्वापूर्वविधानेन. रु
 मजाऊगतामुजी४। कलभेक्षायगभये४पृथग्भूपसुधुपिता४। मदादिलेपितादया. इकूलपत्रियाविता४। मकूलरुलरुताला४पमगविहयिता४। खडावैटकपाभदि
 कृत्रिकादिनिवदयगू॥ घृगपुष्पनिमीसानि. निवेशमपदादयगू। पूर्वकविधिनावस. पउयस्यवमभय॥ ॥आसादयांभुरावस्त. विग्रहामपनीपनी। पुष्टिपत्यमभयवी.
 मासानमपितादमी॥ कृत्वाऊपादिकंकार्य. विविधकार्यसिद्धय॥ गगानिवदयित्याकु. वक्रिकर्मसूत्रनिर्ग॥ कार्यपूर्वविधानेन. म्रवसुयादिवक्रिय। कृ. धुसुलका. अपीग
 वसाऊवाकर्मपिवा। पुनिकोममपाणसिहामसायविधि४मुता॥ वलिदानप्रदातय. गुरुयविविधेष्व। रुतानीलाकपालानी. जानायकविनायकान्॥ कृमिकीटपत। म्रया. रु
 सोगायानुकल्पनी। कृत्वाकसापयदवी. गुरुपुजागथकृ॥ ॥००॥ यप्यविधि४॥ १३१॥ ॥जगत्सुउवाय॥ दवागिगुवविद्यायापुजयासद
 म्ररुली। गुरुसुखारयसुसुधुसर्वकामसुसाधक४। निवदायप्रयकार्य. निवदसुजयकु. नप४पनीपकायाय. जगत्सुवविमकृय॥ दयायागविधानेन. गस्यपुजा.
 विधीयत॥ गुरुमधुपविद्यादि. मयाकलासुनानिव॥ दयगुनीर्विभयस. यमविद्युतमिमुवि॥ गजसुर्वमिवाप्राणि. गुरुननपसुम॥ जयकृष्यकार्यपापेर्विहयितानिव॥

१ रुमभमसिहस्यादि. दानानिविनिवदयगू॥ १

सर्वान् साग्रमध्यावमनिकान् स्थापयेदकिं ह्यपारं जगत्प्राप्तुं ॥ हृदये न विभक्तं न ह्यसर्वकर्मसमायत्र तां तापि द्वात्रयं दत्त्वा दद्यात्स्वर्गपूर्वमापन्नं यथा
दर्शनं कुर्यात् दष्टमकुंभपाथिवा निष्कृति कुमहाकुंभं दमसर्पिर्निरूपयेत् ॥ भिवसाभगतं वक्रं तन्निधाय त्रिकल्पयेत् तां यथित्यातगावर्जं दत्त्वा पूर्वोक्तं कुर्यात् ॥ ततस्तस्मात्
न विन्यासी प्रागुक्तं पत्रिकल्पयेत् ॥ पूर्वोक्तं न विभक्तं न गन्धपथ्यं न क्रमात् ॥ पूजयित्वा महादद्यात् सुगाहामं समायेत् ॥ वक्रुह्यध्वनं मुखं सुसुमिद्धं कृताभनं ॥ विद्वेषं ले
लिहानं वक्रं वक्रिनागपसं सिद्धिं ॥ मृत्पुष्पविभक्तं क्रीवह्यनतर्पयेत् ॥ विवर्जं विगता वत्सं दधीनीं विगता वत्सं ॥ ॥ ॐ स्वायं दद्यात् वता वं हाम विधिः ॥ १३३ ॥
॥ कुगडिना यन्त्रपतिं दद्यात् धर्मनियोजयेत् ॥ गडिना गदयं लोकं मुविः स्तोत्रं कर्मस्य वः ॥ यं यं धर्मस्य वः ॥ ४ समायत्र गतिनिधमं ॥ तन्मसायत्र तेलोक्तं सुसुमाध्या रयानं यः ॥ ध
र्मिष्ठं धर्मसूतायाः ॥ धर्मपादकक्रामं ॥ यमगयं सविह्वयं सुकृद्राजाय गुर्यं ॥ धर्मं ४ सगर्गं राजा ॥ पुजायाय न पालयेत् ॥ न्यायं ४ पालयमानास्मा ॥ धर्मनिधमि नः ॥ मिथ
॥ धर्ममर्थं वकासं यः ॥ यथा न्यत्रा प्रमिष्यते ॥ तदुदाप्रयत्नेन पुजाधर्मं पालयेत् ॥ पुजास्वधर्मयुक्ता सुवर्धुर्धर्मि रजः ॥ अर्धमिष्टा स्वधर्मस्य वधुर्धर्मि मनलिया ग
॥ तस्मादधर्मसंक्रान्तिं लोकं राजानि वात्रयेत् ॥ धर्मनियोजयेत् ॥ स्वयं यथैवियं क्रमः ॥ धर्मभाले न पयस्मात् पुजा ४ सधर्मस्य ॥ न पतिं वा धयेत् सुमात् सर्वलोकान् कस्य वा ॥

उवाच नृपयाज्ञां कान् सर्वं कृत्वा नराधयेत् ॥ मनुष्यधिका योर्ध्वं लुब्धान् धर्मनियोजयेत् ॥ सर्वदया यग ४ पृच्छन् नगस्या पदिमं कुत्र ४ य ४ मृत्पुष्पमिधिवह्नी न्यायं सुसु व
क्रियं ॥ योगं कृतं ४ भिवह्नी नवर्कं गदियं यथ ॥ तस्मात् कुर्यात् समाख्यायं गुरुदवाग्निं पूजयेत् ॥ विद्याया ४ पत्रमा यत्नं ४ कार्यं ४ भक्त्युत्पन्नं ॥ अत्रापूर्वोक्तं सुगाधर्मा ४ अत्राधर्मा ४
गुर्गुस्तिता ४ ॥ अत्राजिष्ठ प्रतिष्ठा ४ धर्मा ४ धर्मवकीर्तिता ४ अत्राजिष्ठ वसा ४ सुखं ४ पुष्पं न पृथग्ध्वया ४ ॥ अत्रासायं ४ गच्छन् न कवने न वक्रुषा ॥ कामक्रान्ते न वक्रुषि र्वेवायस्य
शमितिः ॥ धर्मं ४ संप्राप्य न सुखं ४ अत्राहीने द्विजे वपि ॥ अत्राधर्मं ४ परं सुखं ॥ अत्राह्वानं कुयत्नं ४ ॥ अत्रास्वर्गं धर्मा ४ अत्रासर्वमिदं जगत् ॥ सर्वस्वं जायते वापि दद्यात् ४ अत्र
यायदि ॥ न्यायं सुखं लीकि क्रिन्नुदधनं सुगा रवेत् ॥ पुर्वं अत्रा समाख्यायं दद्यात् ॥ गुरुदवाग्निं पूजयेत् ॥ प ० सुवाकुर्यं वत्सं सर्वकामानवाप्नुयात् ॥ हिमवत्सिधमं वक्रुषं सिद्धवा वः
सविनं ॥ वसिष्ठनाम धर्माधीनं पुरुषा कथाधनं ॥ अतिर्यस्य कालस्य ॥ गुरुस्य समलानं न ॥ गुरुसादयमानस्य पावकस्य सुगावली ॥ तस्मादधर्ममा न सधर्मि पत्रमधर्मिकं
॥ वृद्धिधर्माहृता ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥
वदेत्यनि सुदन ॥ सर्वकामपदं दिव्यं सुवराजं वृद्धिमे ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥ अत्रा यदुमनसि वक्रुषं ॥

यपत्रमात्मने नमस्तुतागदादवी दवीयपत्रमभ्यगी ॥ अमृतं तव धनं गच्छुर्वीमिमहात्मने ॥ सुखासीनं महात्मानं महासर्नं महाशक्तिं ॥ विनयेनापसंगम्य मित्रसारिप्रसम्यय ॥ उप
संगच्छवराहो वसिष्ठः पत्रपृच्छुगि ॥ दद्यात्ते वक्तुमस्मादं मि वस्ययमहात्मने ॥ ३ ॥ सति ४ कावर्षं पृच्छ ४ पार्श्वत्याकिलं कव ४ ॥ तन्ममावच्छु निखिलं मयत्रवववाहन ॥ अवप
च्छुमुअभिषिक्तं स्तुत्यां वचनमववीत ॥ ॥ स्तुत्युवाच ॥ ॥ अथवा वदिता वृद्धा यन्मां त्वं पृच्छसि ॥ मयापि कथितं पूर्वं कालेन नमहात्मना ॥ पार्श्वत्यासक्तसन्वाद्यं मवस्थ
यमहात्मनः ॥ तदहं कर्तुमिच्छामि त्वयि सर्वं महात्मन ॥ केलाभमिखत्रवम्य ज्ञानाभक्तुविचित्रिग ॥ गन्धदियसंकाभं तपकाश्चनसमप्र ॥ वक्रस्तुटिकसापानं विगपद्र
मिलातलं ॥ जाम्बूनदमयेदियं ज्ञानावत्तविदुषिग ॥ ज्ञानाकुमलंगोकी ॥ अस्मादमीगनादिग ॥ क्रीडनरगवांस्तु सपत्नीका वृषध्वज ॥ स्तुयमाना महागजा दवयानव
किङ्क्रे ॥ विवराजमहादया वृद्धवान्नसर्मेधुग ॥ वनदधुलधुक्दव ४ सर्वरुतगुहाग्रय ॥ तमासीनं महात्मानं दवी वचनमववीत ॥ ॥ दयवाच ॥ एगवन्अभुमि
च्छामि प्रशंसकं सुत्रम्वरा तन्ममावच्छु दवम ॥ अमृतं मममहात्मान ॥ उपपन्नास्मिदवम ॥ ब्रुहिगत्वेन मकव ॥ दद्यात्तु वचनं मया प्रहस्य सुविनं प्रयु ॥ ३ ॥ उवाच सधर्मावाता
ब्रुहिर्दिकववादिग ॥ अहं गकथयिष्यामि यन्मां पृच्छसि ॥ भारुनं वरुमानमगीतं ॥ तविव्यं वचवर्धिनि ॥ ॥ दयवाच ॥ अगोहं कस्यवादव ॥ उवाच तस्मि कथं पु

208

रात्रेभ्यर्च्यमगुलंयेव कृतंननुवीहिमे॥सातत्रपितर्येव स्वजनसूतवाभवात्॥उतदिकामिविह्वानुं कथयस्वमरुध्वना॥ ॥रुगवान्वायाननस्तुविदितीकिंचित्
शिवलाकष्विश्रुते।येलाकक्षानसम्पन्नस्ययाजिह्वासितश्चहं॥अथवाग्लेधर्मकू॥पृथुहंयत्त्वयाभुर।उत्पत्तिंयपरावयवतववक्त्रामिसुप्रभ॥आसीदिदंनमा
रुगमप्रह्लादमलकृष्ण।अप्रतर्कमविह्वयं प्रसूफमिवसर्वतः॥नदवादानयावापि नरुमिर्नानिलानल॥नसूर्यश्चन्द्रमावापि नाकामंसलिलंनथा॥विष्णुपुत्र
पतिर्वापि बुक्ता।देवपुत्रायत।नगहंसनसाचिन्त्य।पुत्राकासायमस्विनि॥दक्षिणसूक्तद्वयं बुक्ता।सूक्तगानर्न।वासपाश्वर्यतथाविष्टं यद्वैयवज्रपांवरि
॥सृष्टेरादयवगादविनाहंप्रानिमृपागतशतताहंविह्वयंरुयष्टस्याकनृस्वनतजसा॥नतश्चिन्त्यमानस्यप्राकृतंयार्थिमधुले।प्राकृतश्चममध्वना।द्वामय
तयावहं॥दक्षुर्बुक्ताविह्वया।मनिलानलयास्तथा।नतस्यादवदयमि।कालामालार्धवस्त्रिता॥पश्चादपिपत्रयादृष्ट्या।कालनीस्वनतजसा
॥कालयार्थिमहाकायां।भक्तिंशिलासिंधाविष्टा॥कबालदंष्ट्राविंश्याष्टीं सर्वलकृष्णसंयतां।सूर्यकाटिसहस्रं।ज्योतायतवर्चसां॥विविधगहन
रक्षयतां।दिव्यकाशेनरुवितां।कूडुलायांविवाजनीं।हावकयूररुषितां॥दिव्याम्यनेधर्मादीनां तफकाशेनसुपुर्णा॥सर्वेभ्यर्च्यमयीदिव्यां।का

समाधिं यथा गीर्वाणीलाधर्ममहाकार्यं प्रकृतकाश्रिगुहमूर्त्तिं खेप्रमकनरुक्मनः कवेभ्योनरवेटकीं ॥ धनं कनरुक्मनः मन्मथेनविग्रगीं ॥ गङ्गायनीं गिभलेन महाका
लाकृतिं प्रणी ॥ एतद्रूपं तदा दृष्ट्वा भवत्याभवेनाशनी ॥ सर्वसुखगणेशीना मतिदामत्रर्षी गता ॥ नमः कृवन्ति त्वीदृशं निमिषकांति तस्मा ॥ गङ्गासामाहितासुर्यः ह्यनया
गवलनये ॥ अथस्त्रिभ्यर्षमगुरुः तदतीव अनिरुम्भी ॥ दृष्ट्वाहीतानिर्भ्रायः ॥ जेलायस्ययावरी ॥ गतामृतामहाभागी ॥ वक्रविष्णुनिलानला ॥ गङ्गासामाहितासुर्यः नपुवदी
तिगता ॥ गतामयासहायविः सुवमेतदुपाहिर्ग ॥ यवानां हिता कामाय गवाप्यामाधनायय ॥ अन्तगहानमस्यायः ॥ यद्विर्गजावलेनये ॥ गत्यध्वेवपुदरुं स सुवमेतकुम्भाने
॥ उलिष्ठत्वं सुखं दुःखं गृह्णन्ति सागुहाद्विद्यं यनवृक्षं यदयमां वयानुश्रुत्यानुप्रयच्छति ॥ गयीं प्रामयादरुं सुवमाजमहायरा ॥ वक्रविष्णुपुत्रस्तुत्यः सर्वार्थदयनातथा ॥ गत
सुतप्रवतासर्वं मया सार्द्धं वयानने ॥ विनयभाषसंगं मम मित्रसारिपुत्रस्यय ॥ पुण्यानियतात्मान ॥ सर्वयामितगङ्गा ॥ ऊपसागुवर्षं पृथ्वी यनसर्वसुखासुखी ॥ ५ ॥
सुन्दरुवाय ॥ उवमकासुत्रप्रष्टु ॥ सर्वार्थदयनातथा ॥ गतममस्त्वामहायवी ॥ सुवमेतदुपाहिर्ग ॥ अतामेव विद्योभ्यः दुरुमाने सुखे वयानामहि ॥ कीर्तितामेव ॥ दृष्ट्वा
गुम्भीययगु ॥ ॥ एगवानूवाय ॥ नमोऽस्तु महाविद्ये ॥ अङ्गितगङ्गालिनि ॥ सारिखायागहृदवीने ॥ वयदयवपुङ्गव ॥ १ ॥ सर्वगति ॥ सर्वरुगाना ॥ मयकयकसुपिहि ॥

३ मविर्दक्षिणामुनीं कृत्वा लकनिवासिनी ॥ दवताकासनागिः ॥ सा कालिकाबीजमीति ॥ मया नीजं पुत्राकः ॥ सा द्विनिष्ठा नः ॥ एवं सिद्धय ॥ ३

कालकायीमहाकायी ॥ कालकायकनीश्रुया ॥ २ ॥ कालिताल्का मूखा काला ॥ कालितार्विमहायुगि ॥ कालारुत्रहादीफामी ॥ कालाकालितलायना ॥ ३ ॥ कालकायीय
रुगाना ॥ मापतिर्गतिवय ॥ मन्मथसर्वदयानी ॥ वक्रादीनी नसंगय ॥ ४ ॥ नमोऽस्तु महागणेश ॥ मन्मथानः च वस्त्रिय ॥ सूर्यकाटिसहस्रार ॥ अग्नि कालासम
प्र ॥ सुमदधुध्रमोदि ॥ गहिर कानुसुत्रयत्रि ॥ सुमत्रविद्विगमि ॥ असिर्गति लावना ॥ ५ ॥ सर्वहि ॥ वीविधायीव ॥ ऊननी वक्रहा ॥ ६ ॥ विष्णुमातामहागंगा
त्वमेव पविपथसि ॥ ७ ॥ नमोऽस्तु मन्मथवक्र ॥ सहस्रयत्र ॥ दका ॥ वक्रुर्दक्षमहाजिह्वा ॥ हिमवक्रिययालय ॥ ८ ॥ केलामनिलयदवि ॥ मन्मथमलवासिनि ॥ विष्णु
यवससनिर्ण ॥ मलयगंधमादन ॥ ९ ॥ पूषसदवदयमि ॥ अविहिर्दवदानवे ॥ गत्यध्वेववर्षदवि ॥ यवर्षं पुप्रयच्छसि ॥ १० ॥ सुष्ठिलकृशसंस्कार ॥ त्वमेव पविद्वेषि
॥ रुतं यथाविष्टं ॥ सर्वपत्रं पत्रमंस्त ॥ ११ ॥ अर्चिससुमसयैव ॥ देवतेर्मन्मथपूजागमे ॥ सर्वदुःखी ॥ श्रीर्धनिल्लक्ष्मी ॥ भिक्षाकानि ॥ १२ ॥ धर्मिर्मगिर्गति ॥
व ॥ माकृसाग्नि वलस्त्रिनी ॥ वयदायपुसनाना ॥ मिष्टमाग्निदसाविही ॥ १३ ॥ मविर्दक्षि ॥ पत्रमंस्त ॥ दकृकयापवाजिता ॥ अनसुयाकमालका ॥ कार्त्तिकीर्दीपिर्वपुत्रया ॥
॥ १४ ॥ मन्मथीरुतमाता ॥ लोकभगीश्रुतिगी ॥ विमिष्टवयदासायापविणालोकसंमता ॥ १५ ॥ सतिष्ठपुष्टा ॥ श्रुतिगी ॥ विमलाकृनिलानला ॥ अष्टयाभ्यवतीधन्या ॥

धात्रसुद्धारयानना॥४८॥ धात्रवकुमहाजिह्वा धात्रवममहाधुगा दीफस्वादीफनेगाव बहुप्रह्वरामयगा॥४९॥ स्रवती सोवती र्याय उमा इर्मितरवे वया सर्वयादिगनि
 र्थाये ४ सर्वप्रह्वरामयगा॥४९॥ रुक्मात्रं च रा रुक्मा भाभी पूधधनर्धरा ४ ग्रामनी माहनी येव मय्यरुपा रयावता॥५०॥ रीषधी दानवन्धाधी तयेव यक्य कत्री
 ॥ अरया सर्वय दानी पिदुर्धामान्यामपि॥५१॥ पथिवी कमिनी माध्वी मय्यदवजयाधिक। वकापविगजकाया। आदिनी मेखला तथा॥५२॥ कन्या दवी सुमादवी री
 मयवीतिकार्यसा भा ककुबी महाभ्यगा धृमा धृमुध्वरी तथा॥५३॥ वी वरुडा सुडा य महादयादिनिस्तगा ममन वससनिर्ण प्रदीपविदिर्सी कृत्सी॥५४॥ कपालरुक्मा
 खडाभी सर्वलाकरयावता। काका वयासिनी निर्ण विमानवात्र मारन॥५५॥ श्रीपथवमहायाम धागमार्मनसावित्री॥ धृमुकगुर्महाहास्य कृतमवयगक्य॥५६॥ धृ
 मवर्त्तिरुक्मा डाला अभाविष्ठा सुभायस। वताली वृक्षवताली महावताली नुवय॥५७॥ विद्या बाह्वी वराह्वी य तथा माह्वी वीर्यमा वृक्षध्वमवध्वी व रकानी रकिव
 ताला॥५८॥ त्वमवमातव ४ सर्व। रुतमागातयेव वा पर्वगयसमडय दूर्जयविषमय॥५९॥ धात्रययव वरुक्मा तवर्द्धा रथयय। वरुक्मा दृष्ट यरुक्मा ४ सर्वतपत्रि
 वरुक्मा॥६०॥ सिंहया वरुथयेव समनिष्ठा नम तथा। सिंहया सर्वकार्येषु ददास्य रयदक्षिणी॥६१॥ वजा मनिनिपातय तथा समव कळकी गजद्वयद्वयप्राम दंष्ट्रा का

जाविषयवा॥६२॥ मृत्तिला वेशिगया व पादया मृत्तया वया वडा वा कालपासन मृत्तया र्यासमागत ४॥६३॥ कीर्त्तनारु वदवमि मय्यनना समय ४ रुत रय रयि र्याय
 सार्वया योगसुत्वेव य॥६४॥ अर्धार्थध्वनिरुक्मा लयिसर्वप्रतिष्ठित। र्यादिभाविदिम मयेव अदिगिदिगि वय॥६५॥ वडुका यडुका वी व यडु रुपा यकीर्त्तसी र्ध
 दात्रवा विरूपा का मिखिपिध्वजपिणा॥६६॥ मस्तिमूलगदाहका महिषासुत्रमर्दनी। मातङ्गी मरुमान्गी कोमिकी वृक्षयादिनी॥६७॥ जननी सिद्धसे तस्य उग्रवज्रा महा
 वला। जया वविजया येव विनगा कडुन वय॥६८॥ अगी विष्ठागी विक्राका रूक्मा सुर्की यमूर्त्तनी। दमनी दामनी येव रुदनी तपनी तथा॥६९॥ वध्वनी वधनी येव अमृता
 सुखादिनी। धात्ररूपा यकापाली मानवी मानवप्रिया॥७०॥ मानसी मन्यमाना य माह्वी जननी भुगा। धात्ररूपा यधायाय धात्रा धात्रतयानना॥७१॥ मृगसी जीवनी येव वि
 मल्य कन्या भुगा। सी जीवनी योषधी य त्वमवपत्रि पथस॥७२॥ सध्वयवमहासी धा र्त्तदवी पत्रिकारिणी। रुत्रिणी रुत्रिणी येव धनिनी धनिनी तथा॥७३॥ दिव्यमूर्त्ति
 हा मूर्त्ति यम्यमूर्त्ति मय्यग। यागरुक्मा महाहृक्मा कृमा वी कदलप्रिया॥७४॥ सध्विनी यविर्सी धाव मनका उर्वमी तथा। माया दवी सुमाध्वी र्त्तदवी पत्रिकारिणी॥७५॥
 सुमासुत्रगता ४ सर्व अस्त्रे च रयादिगा ४। र्त्तजम्भ ४ मय्यसुर्वे मय्यमा मययानन॥७६॥ गगत्वा क्रोधसं नफी यमकाग्रिसमप्रणी। दवानां गजसा वय सुजदि र्ध

॥१०॥ सुकन्यामरुतीयेव मर्लकायनिवेवया कशालीविकशालीव सकलानिष्कलाना ॥१०॥ घनीवाली ककुथेव वाकायान्मगीतयातपनीवर्षायेव विद्याजिज्ञा
नलाहवा ॥१०८॥ दयदयीमहादयी हिमवाद्भेलवाद्भुग ॥ स्वविद्यासर्वहृगानी सिद्धीर्गसिद्धिब्रह्मा ॥१०९॥ अप्रमयासिहृगाना मिनिमनिमिगामगि३॥ दयदा
नवमर्लवृ गिर्यग्यानिगनस्य ॥११०॥ नमस्यममिदयमि पत्ययावहिर्गदयन अर्हगदयदयि स्वकुमदयसिगा ॥१११॥ अर्हगवपिगादयि स्वकुमागाम
मस्तगा अर्हरुर्गवर्गव वभ्रुर्गकागयेवय ॥११२॥ स्वकुमरुगिनीदयि पत्नीयपत्रिकार्थस अरुमिष्टमहायह ३ पर्वयहस्यमयग ॥११३॥ अरुमगिष्टमहा
गाय यजमानसुयेवय अर्हयहामहाविष्णु यहमूर्तिस्त्वमयग ॥११४॥ पत्र्याहवयायह पुकमिस्त्वमभारन अर्हग्रहपतिग्यन् स्वकुनकयमकुली ॥११५॥
सूर्यमार्हमहादयि स्वसायपत्रमभ्रि अर्हसागत्रमक्रोश स्वकुवलाभिर्गवय ॥११६॥ अर्हवक्रासुत्र ३ सावित्री स्वनिगयस अर्हविष्णुर्महावीर्य स्वकुम्री सा
कराविनि ॥११७॥ अरुमिष्टमहागज स्वमयीपत्रमभ्रि अर्हहनुवृमिष्टम ३ मयमिस्त्वयेवय ॥११८॥ स्वविद्यावृधकार्येव अरुमयीपतिवगा दिवसाहवयाय
ह वजनीस्वनिगयस ॥११९॥ दिवसाहमदुर्ग्य स्वसंभ्रकालमवय अर्हगजाधिक ३ सूर्य स्वस्यमनिगयस ॥१२०॥ वरधार्हमहागज स्वकुमोनीपुकीर्तिगा

॥ अर्हवैभ्रवाभावाजा यका मलाकपूजिगडा ॥१२१॥ स्वकुमाद्रिमहागाम उपमायायनूपमा अर्हसेनापति ३ स्वन्दा दयसेनास्त्वमयस ॥१२२॥ अर्हवीजवयमृष्टस्वकुनकय
वक्रासगा अर्हवक्रपति ३ स्वस्व वनस्पतिवृया ॥१२३॥ मयमूर्तिवर्हगद रुधीललितयदिग ववगी स्वविभलाकि मयविगानलावन ॥१२४॥ माकाहपिद
म ३ स्वदयिपत्रमगति ३ अपीपतिवर्हगद स्वकुदयैमत्रिदया ॥१२५॥ वठवागिर्वहस्य स्वकुदीपि वधकुस ३ पुजापतिवर्हमृष्ट स्वपुजासुखिवय ॥१२६॥
नामनामधिपमार्ह पातालनलयासिनी नागिनीनामकन्यास्व रुधमकुवविरुधिगा ॥१२७॥ निभायत्रपतिमार्ह स्वमृष्टावजनीस्त्वगा कामाहकामदवीस्व स्वपूति
वगिवय ॥१२८॥ दूर्वायमार्हकाध स्वकुमाजामभ्रिणी लाशामहसथायार्ह स्वदृष्टागमसिस्तिगा ॥१२९॥ तापसमार्हदयि स्वतपस्वीगपस्विनि ककुवायवय
हमार्ह स्वकुमेर्यमयाविणी ॥१३०॥ वायव्यथअग्निम स्वगमिस्त्वस्यनी अर्हसंवायितालाक निर्मलास्वयमस्विनि ॥१३१॥ नयोहसर्वकार्यय नीतिस्वकमलेका
॥ अरुमगिष्टमभ्रमय स्वकुमालयय ॥१३२॥ अर्हसंवायककर्ग स्वकुसुष्टि ३ सदागुरु अर्हमुष्ट ३ स्विव स्वमार्जजनमेवय ॥१३३॥ मुष्टाहगवयमि स्वहृगा
नसुजससदा मयीयार्हमयीवस्व स्वकुवर्द्धिदियाधिवा ॥१३४॥ अर्हगकामहादयि स्वकुगार्हनसंभय ३ पर्ययार्हमहागज स्वकुविद्यमहावला ॥१३५॥ अर्हगगयगध

३२०

初

॥ ॐ स्वाध्यायं कुरु वराहसूक्तं ॥ १३४ ॥

॥ सर्वार्थसाधकं भास्वत् प्रकाशं कुर्वितुं नमः ॥ नमो नमः पद्मं हस्तं कार्त्तिकं नमः वाराहं ॥ दक्षप्रसादं प्रसादं नमः

भिव्यवक्रविप्रोक्तवान्। लक्ष्मणं हस्तं कस्य विद्याधवनराधिका॥ यात्रायां विप्रार्थय दद्यात्तत्र नमः पूजने। कर्मयोगे योगे योगे यत्तु यत्तु प्रसादकं॥ आर्त्तदय
वराहं कुरु दाययय ३४॥ धर्मिका। ससात्रादिविनिर्मुक्तं प्राप्तागि पर्वमपदं॥ विद्यासिंहासनमध्वं वसुपुण्यादिभिरिति। पूजयेद्वाभिर्वह्नीं मृगयाद्यावद्युथ
या॥ श्रीमद्विष्णुसर्पनाथि कलाहेमसुभारतनी हनपदपविच्छन्ना नानावस्त्रविहसिर्ग॥ याजुर्गतामकास्यं वा प्रकृतीणां विनिर्मितं। तत्र सावसर्गकं मृगयं भद्रिर्हव्यं॥
मन्त्रिहमसुमायुक्तं मृगयस्त्रादिक दक्षिणशायसं वसर्गकं वधाम्भुर्विहसिर्ग॥ समस्कांश्च विविचय सुगविगनिर्वधनं। दिगुभार्त्तप्रसादं प्रसादं पूजयेत्तु नि
रव्यं॥ विद्याकीर्त्तं सुवर्धुयः प्रतिपादय सस्मिन्। दक्षुलं पददवाजं विप्रपद्मादिसं हव्यं॥ बर्द्धकसूक्तं वक्रमा प्रकाशमिदं यात्रिणं। यत्तु रिचय केयकी पञ्चवधे
सुभारतने ३॥ किङ्किदायवकापने मृगु ३ कास्यमाग्निं ३ गिर्विप्रकाशमिदं ३ सस्मिन् ३ पञ्चवधके ३ सर्ववक्रसमस्तु ३ कन्दकेयप्रलम्बिने ३ ॐ नमः सवराह
कला विन्यस्य कुरुकासने॥ नमो पविमहाभास्वत् दद्यात्तस्मात् पूजयेत्तु विद्यायाना पवायेत्तु मृगया प्रयत्नतः॥ गन्धादिवासितकत्र ३ श्रीमदासनसंस्मिन् ३ ता

१०११

१०१२

वपित्वाभिर्वदद्यात् ३ भास्वत्सिन्धुपत्रमध्वरा॥ स्वयं गिर्विदवाया यातां दवनमस्तुगी स्वकायतनगीर्त्तय नमस्तु वनयवा॥ रावये सवर्गधर्म गृहग्राभपत्रयवलिचयसवर्गधर्म य
हमामपुत्रयुक्ती मृगानां स्वयं हनं भिव्यं भगसिंयाविधिः॥ गन्धपुष्पैश्च संहारं ३ प्रत्यहं कुरु गयगा पूजयित्वा नमित्वा वक्रमाङ्गलिपटास्त्रिणा ३ सर्वनीयासना ३ भक्ता यथा
वृद्धकमान्नमः ३ धर्ममः ३ मृगुमिच्छन्ति कथान् वविद्विगा ३ हानावक्रसमाफीय मृगतिर्द्वायकननु। दद्यात्तु भिवार्यं व उद्यार्थं सर्वसिद्धये॥ जानयेत्तु प
पुण्याय भक्तैः कथं वक्रकमान्। सर्वसाधुजनार्थं य हानमनुप्रदायिका॥ आवाकय ३ कर्त्तव्या दद्यात्तु वक्र ३ कसुमपयं। मपिते यात्रमध्वने कुर्य ३ पूजाकुपुस्तके॥ ॐ गि
न कलायपुजाय पूजां कलासदक्षिणां। प्रवर्त्तयति य ३ कश्चिदद्यात् ३ पूस्तकवाचकं॥ सर्वसत्तापकायाय आत्मानं ध्यायिष्ये कथं। तस्य पुष्पैर्हस्तं वध्वा मृगधर्मावाचकस्य व॥
धनमाय ३ पूजाकारिणं प्रह्लादं धर्मिणं मूर्खं। ॐ हस्तं प्राप्य विपुलं दत्तं नमो भक्तिमाप्नुयात्॥ अर्चयेत्तु सहा हनं प्रदामयाप्य सस्मिन्। वावयन्नवर्क्यागि तस्मात्सिद्धयवाय
येत्तु॥ अर्चयेत्तु पविवाच्यं दद्यात्तु गुरुसन्निधौ। त्वमधर्मप्रवाहस्य उपकाशाय वृद्धिमान्॥ यथापुवर्त्तिता धर्म अधर्मश्च पविष्येत्तु। लोताहयानवायात दद्यात् ३ भास्वत् भि
वात्सर्कं॥ नयनाच्छेदगच्छानि मवधाय दिनेदिने। गच्छयेत्तु पूजार्थं भिवार्त्तं पूजनाय व॥ ततः ३ भास्वत्समापकं पूजां कलाविभयतः ३ दद्यात्तु विद्युत्तु नो ३ रक्ताय भिवयागि

३११

व रुद्रतियाया जगत्पूषताम् ॥ रघोनास्मिन् वदका मदान्ननगनं गालदमाध्वनीकादाता नजका ददाति वसनं प्रातर्गृहीत्वा तिष्ठे ॥ काधीमान्यवविरुद्वन विधोसर्वपियो नऊनाहृत्वा
अमसिहाकया विषहमीनो यनवेदसिके ॥ यस्यापनाध्वं खलूतस्यदधुः ॥ अष्टादशसिः ॥ स्मृतं वदति ॥ दत्तं ॥ पनाध्वं खलूतनासिः ॥ मूलं मूर्ध् ॥ कथं मधुनमायता ॥ ४॥

[illegible]